



P. 914, l. 5—for वृत्तयश्चलिनु read वृत्तेरचालयितु as in N.

— l. 10—for लालसतो read सभ्यासतो as in N.

VERSE LXVI

अध्याधीनो—V. L. (a) अध्याधीनो—noted by Medhātithi; (b) नान्याधीनो (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 66).

P. 915, l. 1—for सहित read संहित

— l. 5—for अकठिण read कठिन

— „ —for चेष्ट read चेष्टः ।

— l. 6—for एवं श्यवर read एकः श्यवर

— l. 7—for सभ्यनु read अभ्यनु

— „ —for तृहस्ता read त्रिहस्ता

— l. 8—for स्वधर्मा read स्ववर्गा

VERSE LXVII

P. 915, l. 10—for बन्धनादिना read बन्धुवर्गादिनाशेन

— „ —for उन्मत्त read उन्मत्तः

P. 916, l. 1—for वित्तोप read चित्तोप

— „ —for तत्ससाधने read तत्साधने

VERSE LXVIII

P. 916, l. 5—for युवति read पु

— l. 8—for देशःस्था read देशस्था

— l. 10—for शल्या read शिल्पा

— „ —for चाश्रुता read वाश्रुता

— l. 11—for अस्थानां read अस्थानां

VERSE LXIX

शरीरस्यापि—V. L. शरीरस्यैव (Rāghavānanda and Nandana).

चालये—V. L. चालये

शरीरस्यापि चालये—V. L. शरीरस्यालयेपि च (Smṛtitattva II, p. 214).

P. 917, l. 1—for यः read यत्

— „ —for स्तेयंसा read स्तेयसा

— l. 6—for वयः सादश्यकसं read वयःसादश्यसं

VERSE LXX

क्षिप्याप्यसम्भवे कार्यं—V. L. क्षिया वा सम्भवेत्कार्यं (Kṛtyakal-pataru).

क्षिया—V. L. क्षियो (Aparārka, p. 671).

शिष्येण बन्धुना वापि दासेन—V. L. शिष्येण वापि दासेन बन्धुना (Parā-sharamādhava-Vyavahāra, p. 70).

भृतकेन वा—V. L. भृतकेन च

P. 917, l. 9—for ज्ञाति read जाति

— „ —for सुहृदैरिदोषा read सुहृदैरिदोषा

— l. 12—for जीव read श्रौत

VERSE LXXI

P. 918, l. 1—for निरुद्धा read निवृद्धा

— l. 2—for तदा read न चा

— l. 3—for वाचोःस्थै read वाचोःस्थै

— l. 4—for वाचोः स्थै read वाचोःस्थै

VERSE LXXII

साहसेषु च—V. L. साहसेषु तु

P. 918, l. 9—for कार्यकरणं read कार्यकरणं



VERSE LXXIII

P. 919, l. 1—for भूमिभागादौ read भूमिभोगादौ

— „ —for भोगसा read भोगसाधने सा

— „ —for केचिदधिनस्तत्र read केचिदर्थिना भागमाहुः केचित्प्र-
त्यर्थिनस्तत्र

— 1. 2—for कारिणाम...युक्तगुण read कारिणा सातिशयेन
युक्ताः गुण

VERSE LXXIV

Hopkins is wrong in asserting that “Nandana omits this verse.”

P. 919, l. 8—for साक्ष्यशब्दा read समक्षशब्दा

P. 920, l. 1—for ननु read ननु as in N.

— 1. 4—for दर्शनं read दर्शनम्

— „ —for नुभूतमेव read नुभूतमनुभूतमेव as in N.

VERSE LXXV

अभ्येति—V. L. (a) अवैति ; (b) एवैति

VERSE LXXVI

स्पीचेत—V. L. वीचेत (Rāghavānanda and Nandana).

P. 921, l. 1—for यथावदभूत read यथावदनुभूत as in N.

— „ —for नियुक्त read ऽनियुक्त

— „ —for शेष read विशेष as in I. O.

VERSE LXXVII

एकोऽलुब्धस्तु साची—V. L. (a) एकोलुब्धस्त्वसाची noted by Medhātithi and attributed by Rāghavānanda to Govindarāja ;
(b) एकोऽप्यलुब्धः साची (Smṛtitattva II, p. 213).

न स्त्रियः—V. L. च स्त्रियः (Nandana).

P. 921, l. 6—for स्पावबोधा वा read स्पावा वह्न्यो वा as in N.

—— l. 7—for न्यतयान्यतः read व्यपयन्ति अतः

—— l. 8—for अग्ने read अग्ने

—— l. 11—for रोगादि read रागादि as in N.

—— „ —क्रान्तभू read क्रान्ता भू

VERSE LXXVIII

विब्रूयुः—V. L. ब्रुयुस्ते (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 80).

P. 922, l. 2—for स्वभावतो read स स्वभावः as in N.

—— „ —Omit माभूत्तस्य.....न्यथा

—— l. 3—for नाक्रुष्ट read माक्रुष्ट

—— l. 5—for न तावतान read न तावता

—— l. 6—for लभ्यास्व read लभ्यात् स्व

—— „ —for उक्तं सत्या read उत सत्य

VERSE LXXIX

प्राप्तान्—V. L. सर्वान् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 75).

ऽनुयुञ्जीत—V. L. प्रयुञ्जीत (do.)

ऽनेन—V. L. तेन

P. 923, l. 2—for पुरुषं read परुषं

—— l. 5—for विवाहः read विवाकः as in N.

VERSE LXXX

वेत्थ—V. L. वित्थ

इयन्न—V. L. (a) तन्न ; (b) यन्न (Nandana).

P. 923, l. 7—Before भवता add from I. O. Ms. (see *errata* at the end).

— „ —for साचिभूते read साचिभूताः

— l. 8—for साक्ष्यं read साचिणं

— „ —for ध्याद्द्रष्टव्यं read ध्यादुक्तं द्रष्टव्यं

VERSE LXXXI

सत्यं साक्ष्ये—V. L. ऋतं सत्यं (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 75).

लोकानाप्तोत्थनिन्दितान्—V. L. (a) लोकानाप्तोत्थिपुष्कलान् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 75); (b) लोकान् प्रामोत्थनुत्तमान्

इह चानुत्तमां—V. L. इह चाप्युत्तमां

P. 924, l. 3—for साधु.....नास्मै read साधुवादो जनेनास्मै as in I. O.

After verse 81 some Mss. have the following additional verse:—

विक्रयाद् यो धनं किञ्चिद् गृह्णीयात् कुलसन्निधौ ।
क्रमेण स विशुद्धं हि न्यायतो लभते धनम् ॥

VERSE LXXXII

साक्ष्ये—V. L. साक्ष्यं

P. 924, l. 5—for दष्टो.....दर्शनेन read दष्टादष्टशुभफलप्रदर्शनेन as in N and I. O.

— l. 6—for सत्यं वच read सत्यवच

— ll. 7-8—for जलचराणि read जलोदराणि

— l. 9—for उदाहरणगृहीतः read उदरगृहीतः as in I. O.

After verse 82 some manuscripts have the following additional verses—

ब्राह्मणो वा मनुष्याणां चादित्यस्तेजसामिव ।
शिरो वा सर्वगात्राणां धर्माणां सत्यमुत्तमम् ॥

नास्ति सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम् ।
स्थितिश्च लोकधर्मश्च तस्मात्सत्यं विशिष्यते ॥
सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नौरिव ॥

VERSE LXXXIII

वर्णेषु—V. L. धर्मेषु

स्वस्यैवा—V. L. (a) स्वरचैवा (Nandana) ; (b) स्वयञ्चा

VERSE LXXXV

P. 925, l. 5—for कारणं पापाचारस्तस्य read कः पुनरयं पापमाचरति
तस्य as in I. O.

—— l. 5—for शुभानां read शुभाशुभानां as in I. O.

—— „ —for नवान्तर read न चान्तर as in I. O.

P. 926, l. 2—for साधं read साध्यं

VERSE LXXXVI

P. 926, l. 6—for देवा read दिवा

—— „ —for दृष्टव्यं read द्रष्टव्यं

VERSE LXXXVII

ऋत—V. L. ततो (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 78).

पूर्वाह्ने वा शुचिः शुचीन्—V. L. सर्वानेवोपवेशयेत् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 78).

द्विजान्—V. L. द्विजः (Aparārka, p. 673).

वै—V. L. (a) वा (Aparārka, p. 673); (b) च (Vyavahāra-mayūkha, p. 18).

P. 926, l. 10—for कृत read ऋत



VERSE LXXXVIII

पृच्छेत्—V. L. ब्रूयात् (Aparārka, p. 674).

पार्थिवम्—V. L. भूमिपम् (Aparārka, p. 674).

शुद्रं सर्वैस्तु—V. L. (a) शुद्रमेभिस्तु (Aparārka, p. 674); (b) शुद्रमेतैस्तु

For the first half Parāsharamādhava (Vyavahāra, p. 78) reads सत्येन शापयेद्विप्रं क्षत्रियं वाहनायुधैः

P. 927, l. 4—for शब्दस्त्वपा read शब्दस्तुपा

VERSE LXXXIX

लोका—V. L. लोके (Smṛtitattva II, p. 215).

कृतघ्नस्य—V. L. कृतघ्नाश्च (do.)

ब्रह्मघ्नो ये—V. L. (a) ब्रह्मघ्नानां; (b) ब्रह्मघ्ना ये (Smṛtitattva II, p. 217).

मित्रद्रुहः—V. L. मित्रद्रोहि (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 78).

मृषा—V. L. तव (do.)

VERSE XC

भद्रं त्वया—V. L. (a) भद्रं च यत् (Nandana); (b) भद्रं त्वया (Rāghavānanda).

P. 928, l. 1—for अन्येषु read अन्ये तु

— l. 2—After भवति add न पुनरन्यकृतस्य सुकृतस्यान्यत्र गमनमस्तीत्यसकृदुक्तमेतत्

VERSE XCI

स्थितस्ते—V. L. स्थितस्य (Aparārka, p. 674).

यस्त्वं—V. L. (a) यस्त्वं (Smṛtichandrikā-Vyavaharā, p. 204); (b) सत्त्वं; (c) यदि (Aparārka, p. 674).

मुनिः—V. L. पुनः (Aparārka, p. 674).

P. 928, l. 3—Omit कः

VERSE XCH

यस्तवैष हृदि—V. L. तवैष हृदये (Aparārka, p. 674).

गमः—V. L. व्रज

P. 928, l. 4—यथैव read य एव

—— l. 5—for निगृही read निगृही

—— „ —for स चा...नयति read स च कृतापराधमधुनैव
यमयति as in I. O.

—— l. 6—for प्रत्ययिनः read प्रत्ययितः

P. 928, l. 8—for किं मेऽतः read किं ममान्ते

VERSE XCIII

कपालेन—V. L. कपाली च

शत्रुकुलं—V. L. (a) शत्रुगृहं (Rāghavānanda and Aparārka, p. 674); (b) शत्रुकुले

VERSE XCIV

अवाक्—V. L. अर्वाक् (Aparārka, p. 674).

नरकं व्रजेत्—V. L. (a) नरकं पतेत् (Rāghavānanda); (b) नरके वसेत्

P. 929, l. 2—Before निमित्तं add निश्चय

VERSE XCV

स नरः कण्टकैः सह—V. L. कण्टकैः स नरः सह

P. 930, l. 2—for मोहदुःख read महद्दुःखं as in N.

VERSE XCVI

तस्मात्—V. L. तस्मिन्

P. 930, l. 5—for सुप्रय read स्वप्रय

VERSE XCVII

साक्ष्येऽनृतं—V. L. साक्ष्यनृतं (Aparārka, p. 674).

सौम्य—V. L. सोम्य (Aparārka, p. 674).

P. 931, l. 2—for सम्बन्धो धन read सम्बन्धन

— l. 6—for संक्ष्ययेति read सङ्क्ष्ययेति

After verse 97 some Mss. have the following additional verse :

एवं सम्बन्धनात्तस्मान्मुच्यते नियतावृतः ।

पशून् गोश्वपुरुषाणां हिरण्यं भूर्यधाक्रमम् ॥

VERSE XCVIII

P. 931, l. 8—for ततश्च read हननं च

— l. 9—Before संसर्गादिति add अन्यकृतेनैव पुण्यपापादिना
ऽन्यस्य स्वर्गनरकादिप्राप्तिः

— l. 11—for पंशे read पदेशे

— „ —for दिवृद्धिः read विवृद्धिः

VERSE XCIX

वदीः—V. L. वदेत् (Aparārka, p. 674).

After verse 99 some Mss. have the following additional lines :—

पशवत् चौद्र (चीर) घृतयोर्धनान्यत् पशुसम्भवम् ।

गोवद्ग्राहिरण्येषु धान्यपुष्पफलेषु च ।

अश्ववत्सर्वयानेषु खरोद्भवतरादिषु ॥

P. 932, l. 1—for जातानुजा read जातानजा

— l. 8—for पहारसंभ read पहारासंभ

— l. 13—for नादेय read चादेय

— l. 15—for वदन्ति चै एक read वद इति चैक as in N.

VERSE C

After verse 100 some Mss. add the following :—

पशुवस्त्रौद्रघृतयोयानिषु च तथाश्ववत् ।
गोवद्रजतवस्त्रेषु धान्ये ब्राह्मणवद्विधिः ॥

While others have the following :—

न तु तुष्यन्ति यस्यैव पुरुषस्य दुरात्मनः ।
तस्य पुत्राश्च गृह्णन्ति सप्त सप्त परावरान् ॥

P. 933, l. 1—Before मैथुनाख्ये add कृपतडागादिस्थे महति जले
स्वल्पे वा भूमिवद्दोषः as in I. O.

VERSE CI

एतान् दोषानवेक्ष्य त्वं सर्वान्—V. L. एतान् सर्वानवेक्ष्यैव दोषान् (Nandana).
नृतभाषणे—V. L. नृतवादिनः (Aparārka, p. 674).
सर्वमेव—V. L. सत्यमेव (Nandana and Aparārka, p. 764).

VERSE CII

वाणिजिकान्—V. L. वाणिजकान्
प्रेष्या—V. L. प्रैष्या (Hēmādri-Dāna, p. 35).

P. 934, l. 4—for प्रकृतस्या read प्रकृतस्तथा

— l. 5—for द्वयो स read द्वयोः स

After verse 102 some Mss. have the following additional
verse:—

येऽप्यतीताः स्वधर्मैभ्यः परपिण्डोपजीविनः ।
द्विजत्वमभिकारुचन्ति तांश्च शुद्धानिवाचरेत् ॥

VERSE CIII

ताम्—V. L. ते

P. 934, l. 8—for तर्ह्येतां read तर्हि देवीं

— l. 10—for विद्वा read विद्वा

— l. 11—for शुद्धवक्त्राच read शुद्धवक्त्राच

VERSE CIV

यत्रतर्तौ भवेद्बधः—V. L. (a) उक्तर्ते चेद्बधो भवेत् (Nandana); (b) यत्रोक्ते तु भवेद्बधः (Smṛtichandrikā-Vyavahāra, p. 207).

सत्याद्विशिष्यते—V. L. तत्र विशिष्यते (Nandana).

P. 935, l. 1—for द्वाद्विविध read द्वादिवधा as in I. O.

— l. 2—for पेधे नैक read पेधेनैक

— „ —for तत्रेति read तत्र वधः as in I. O.

— ll. 2-3—for स्याः मनोमित्रत्वानुप read स्यासतो निमित्तत्वानुप as in I. O.

— l. 3—for ऽवधौ read वधे

— „ —for निष्टं न read निष्टम्

— l. 4—After व्यवहारे add पराजिताः सन्तः वधाहा भवन्ति तस्य नानुपपन्नो निमित्तभावः as in I. O.

— l. 7—for न चेदसौ read नन्वसौ

— l. 9—for विद्यया यशसो हेतुना read विद्यायशसोर्हेतुर्न

— „ —for ननु read न

— l. 12—for शोषयते read साधयेते

— l. 14—for द्ध्यारो read ध्यारो

— l. 18—for मर्पयत्यास्यो.....भेषयत्येवं read मर्पयत्यान्योऽन्यदोषा-
वष्करणेन मन्युमुदीपयति as in I. O.

— „ —for रूपोहितः read रूपोपाहितः

P. 936, l. 4—for स्वल्पेनापि read स्वल्पेनापि

— „ —for दृष्टा read दृष्ट्वा

— l. 12—for मृत्युना read मन्युना

P. 936, l. 13—for एवोभयवधे read एवोतवधे

— l. 15—for नियतो read अनियतो

— „ —for श्लेष्मिकोपहितं read श्लेष्मकाय हितं

— l. 17—for किं तव read किं तत्र

— l. 20—for मन्युमरणहेतोः read मन्युःमरणहेतो as in N.

— „ —for पर्यन्तो read पर्यतो

— ll. 20-21—for किंचिद्विज read केचिदुद्विज

— l. 23—for सूत्यात्मा read शून्यात्मा

— l. 25—for चिद्विपर्य read चित्तद्विपर्य

— ll. 25-26—Omit केषांचि...वदोषः; not in I. O.

— l. 31—for कामिनां read कामिना

— „ —for पुरुषव्यापिनी read पुरुषधातिनी

P. 937, l. 3—for नास्य read मास्य

— „ —for जीवितुं read जीवितं

— „ —for चेच्छेदिति read उच्छेत्सीदिति

— „ —for जिही read जिह्मी

VERSE CV

वाग्देवत्यैः—V. L. वाग्देवतैः (Aparārka, p. 682; Parāsharamādhava-Prāyashchitta, p. 390).

यजेरंस्ते—V. L. यजेयुस्ते

तस्य—V. L. तत्र (Parāsharamādhava-Prāyashchitta, p. 390).

P. 937, l. 11—for ननु read ननु

P. 938, l. 5—for इदं तर्हि read कथं तर्हि

P. 938, l. 6—for देवत्या read देवता

— „ —for मिष्यते read मिज्यते

— l. 8—for सरस्वतीं इ read न सरस्वतीमि

— l. 10—for प्रीतया...प्रीता read इष्टया.....इष्टा

— „ —for योगेन read यागेन

— l. 11—for युक्त्या read युक्ता

— l. 12—for देवतापूजनं येषादि read देवतां पूजयतीत्यादि as in I. O.

— „ —for देवतात्वं मन्यते नूनं read देवतात्वमन्यतो मृग्यम् as in I. O.

— l. 13—for उद्दिश्या read उद्देश्या

VERSE CVI

कृष्माण्डैर्वापि जुहुयात्—V. L. (a) कृष्माण्डैर्जुहुयान्मन्त्रैः; (b) कृष्माण्डैर्वापि जुहुयात् (Smṛtichandrikā-Vyavahāra, p. 107).

उदित्यृचा वा—V. L. उदुत्तमेति

P. 939, l. 1—for तन्नेहादावि read तच्चेहाग्नावि as in I. O.

— „ —for शादनुव read शान्मान्न व as in I. O.

— „ —for नियम्यते read न हरयते

— l. 7—for मंदं जुहोमा read मंदं तु सोमा

— „ —for वृत्यचितन्नायनादैवतेन read वृत्यर्थम् । तृचेना-
बदैवतेन

— l. 9—for विधिहीनत्वात् read हविर्होमत्वात्

— l. 10—for वोचयः सुव read वेचयसुव

VERSE CVII

नरोऽगदः—V. L. गतो नरः

सर्वतः—V. L. (a) सर्वशः (Mitākṣarā, p. 76); (b) सर्वदा

P. 939, l. 11—for आकारा read अकारा

—— l. 13—for न्योवद read न्यो न वद

—— „ —for स्तस्सदृशं read स्तदृशं

P. 940, l. 1—Before भवति add न

—— l. 2—for साक्षिणो बाढमि read साक्षिणो बोढार इ

—— l. 4—for ऋणोप read ऋणाप

VERSE CVIII

उक्तवाक्यस्य—V. L. उक्तसाक्ष्यस्य

P. 940, l. 7—for रोगास्थ read रोगोऽस्य

VERSE CIX

अविन्दन्—V. L. नविन्दन् (Rāghavānanda).

सत्यं—V. L. (a) धर्मं; (b) कार्यं

P. 941, l. 3—After जानात्यर्थः add from I. O. Ms. (See *Errata* at the end).

VERSE CX

शेषे—V. L. चक्रे

पैजवने—V. L. पैयवने

P. 941, l. 5—for विशेषेषु read पुष्करेषु

—— l. 8—for शेष उपलोभ इति read शप उपालम्भन इति

—— l. 9—for चरयो read चरयो

VERSE CXI

स्वल्पे—V. L. अल्पे

P. 942, l. 3—for न्तरस्वज्ञाते read न्तरैस्वज्ञाते

VERSE CXII

भक्ष्ये—V. L. भक्ते

ब्राह्मणाम्युपपत्तौ—V. L. ब्राह्मणस्य विपत्तौ

P. 942, l. 4—for नाकामि read ताः कामि

— l. 5—for यन्तु read यस्तु

— l. 6—After रूपशपथे add न

— l. 7—for कामादश read कामाद्दश

— „ —for पूर्वं जनमित्यादिकं करण्डविधानं read पूर्वमित्याद्य-
धिकदण्डविधानं

— l. 8—for यापि read यापि

— „ —for सहि read सह

— „ —for विवादो read विवादे

— l. 9—for प्रेत्य बहुदोषः read जात्यपह्नवादौ

— l. 11—for सेतच्च नहि read सेतच्च न तद्धि

— l. 12—for गतो न तत्र होवमुच्यते read as in I. O. Ms.
(See *Errata* at the end).

— l. 13—for सम्बन्धिषु read सम्बन्धिनीषु

— „ —for विधौषु read विधासु

VERSE CXIII

P. 943, l. 1—for शपथास्त read शपथस्त

— l. 3—for शपतो न read शपेदेतानि

— l. 4—for बाध्यते read वाच्यते

VERSE CXIV

वैनं—V. L. (a) चैवं ; (b) वैनं (Rāghavānanda and Aparārka, p. 694).

वाप्येनं—V. L. (a) वाप्येवं ; (b) चाप्येनं (Rāghavānanda).

शिरांसि—V. L. शिरसि (Aparārka, p. 694).

पृथक्—V. L. दृढम् (Aparārka, p. 694).

P. 943, l. 5—for स्मृत्यन्तरा read स्मृत्यन्तरात्

— l. 6—for निपुणनत्वेऽन्वे read निपुणतोऽन्वे

— „ —After स्पर्शयेत् add from I. O. Ms. (See *Errata* at the end).

VERSE CXV

P. 944, l. 2—for चतुर्दशवाहा read चतुर्दशाहा

VERSE CXVI

वत्सस्य ह्यभि—V. L. वत्सस्यैवाभि (Nandana).

रोमापि—V. L. लोमापि

जगतः स्पशः—V. L. (a) जगतः स्पृशः (Nandana) ; (b) जगतां पतिः ;
(c) शपथः कुतः

P. 944, l. 4—for प्रत्यक्षः शाब्दो read प्रत्यक्षवेद्यो

— l. 8—for स उ read स्पश उ

— l. 9—for प्रणधि read प्रणिधि

— l. 18—for हलमेव नौषदिति read हालमेवौषधमिति as in

I. O.

P. 945, l. 1—for चारितप्र read चारि न तद् प्र

— l. 2—Before व्यभिच add यद्

— „ —Before शपथो add न

— l. 3—for ग्रहण read ग्रहेण



P. 945, l. 3—for प्राकृतस्य read प्राक्कृतस्य

— l. 4—for निमित्तत्वाकृता read निमित्तत्वात् । कृता

P. 945, l. 6—for पथेऽति read पथेऽपि

VERSE CXVII

विवादे तु—V. L. कृते कार्ये

कौटसाक्ष्यं—V. L. कूटसाक्ष्यं

कृतं वा—V. L. कृतं वा

VERSE CXVIII

मैत्रात्—मैत्र्यात् (Parāsharamād hava-Vyavahāra, p. 81).

तमेस्थाने—V. L. तमत्वेन (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 81).

तस्य—V. L. तेषां

दण्डविशेषांस्तु—V. L. (a) दण्डविशेषांश्च ; (b) दण्डविशेषन्तु (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 81).

P. 947, l. 1—for प्रयोजना read योजना

VERSE CXX

मैत्रात्—V. L. (a) मैत्र्यात् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 81) ; (b) मैत्र्या (Bālambhattī on p. 81).

दण्ड्यस्तु—V. L. (a) दण्डस्तु ; (b) दण्डस्स ; (c) दण्ड्यश्च ; (d) दण्ड्यः स्यात् (Mitākṣarā, p. 4).

भयाद्द्वौ मध्यमौ दण्डौ—V. L. (a) भयात् वै मध्यमं दण्ड्यो (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 81) ; (b) भयात् द्वौ मध्यमौ दण्ड्यौ ; (c) भयात् वै मध्यमो दण्ड्यो (noted and rejected by Bālambhattī on p. 81) ; (d) भयादौ मध्यमो दण्डो (Aparārka, p. 680).

P. 947, l. 4—for भयेन read मदीयेन as in S.

— l. 5—for पश्यान्तु द्वे read पश्यानां द्वे

VERSE CXXI

P. 948, l. 1—for वन्धान्यतरं read वन्ध्यन्यतरं as in N.

— 1. 2—for परो वध्यः read परो मध्यः

— ll. 3-4—for बालिशभाव read बालिशं बालभावः

— 1. 4—for अप्राप्त...न्यवहारत read अप्राप्तबुद्धिस्थैर्यस्यायं बालिश इति न्यवहरन्ति as in S.

VERSE CXXII

कौटसाक्ष्ये—V. L. कूटसाक्ष्ये (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 82).

नियमाय च—V. L. निधनाय च (Nandana).

VERSE CXXIII

कौटसाक्ष्यं—V. L. कूटसाक्ष्यं (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 82).

ब्राह्मणं—V. L. ब्राह्मणान्

धार्मिको—V. L. पालको (Aparārka, p. 680).

VERSE CXXIV

यानि—V. L. तानि (Nandana and Parāsharamādhava-Āchāra, p. 399).

P. 949, l. 5—for दकुतत्वो read दक्षतत्वो

VERSE CXXV

धनं देहः—V. L. नरदेहः (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 156).

चकुर्नासा—V. L. चकुर्नासे (Parāsharamādhava-Āchāra, p. 399).

VERSE CXXVI

अनुबन्धं—V. L. अपराधं (Nandana).

सारापराधौ च—V. L. सारासारौ तथा

आलोक्य—V. L. विज्ञाय

P. 950, l. 6—for सारणेन read सारेण न

— l. 9—for भूमादिः read भूम्यादिः

VERSE CXXVII

अधर्मदण्डनं—V. L. अदृश्यदण्डनं

अस्वर्ग्यं च—V. L. अस्वर्ग्यं स्यात्

P. 951, l. 1—After दण्डनं add from I. O. Ms. (see *Errata* at the end).

— l. 2—After यशः add do. do.

VERSE CXXVIII

अदण्ड्यान्—V. L. अदण्ड्यं (Vivādaratnākara, p. 649).

P. 951, l. 3—for पूर्वश्लोकेऽनुबन्धादीनि read पूर्वश्लोकोऽनुबन्धादि as in N.

— „ —for विधिविशेषः read विधिशेषः as in N.

— l. 4—for कृतार्थतां read वृथात्वं as in I. O.

VERSE CXXIX

वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्विग्दण्डं—V. L. विग्दण्डमप्रथमं कुर्याद्वाग्दण्डं (Mitākṣarā, 1. 366 and Vīramitrodaya-Rājanīti, p. 293).

दण्डन्तु—V. L. दण्डश्च

P. 951, l. 6—for कार्यदोष read कोऽत्र दोष

VERSE CXXX

स्वेतान्—V. L. स्वेनं (Vivādaratnākara, p. 630).

तदैषु—V. L. तदैव (Vivādaratnākara, p. 630).

सर्वमप्येतत्—V. L. सर्वमैवैतत् (Vivādaratnākara, p. 630).

P. 952, l. 3—for वाग्दण्डमुदु read वाग्दण्डे तु मुदु

— „ —for गृही read निगृही

VERSE CXXXI

संज्ञाः—V. L. संख्याः (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 115).

रूप्य—V. L. रौप्य (Vivādaratnākara, p. 665).

VERSE CXXXII

प्रथमं—V. L. परमं (Hēmādrī-Vrata, p. 43).

P. 953, l. 1—for विप्रतिपत्त्या तावद्गवा read विप्रतिपत्त्यभावाद्गवा
as in I. O.

— ll. 2-3 असरे.....सर्षपः This is verse 133.

VERSE CXXXIII

विज्ञेया लिक्षौका—V. L. लिच्छा ज्ञेयैका (Hēmādrī-Dāna, p. 15).

लिच्छा—V. L. लिख्या (Vivādaratnākara, p. 666).

परिमाणतः—V. L. च प्रमाणतः (do).

असरेणवोऽष्टौ विज्ञेया—V. L. असरेणवष्टकं ज्ञेयो

ते त्रयो—V. L. ते तु द्वे (Vivādaratnākara, p. 666).

P. 953, l. 3—for ततोप read तत्रोप

— l. 4—for ततश्च...परिमाणार्थं read ततश्च ये व्यभिचारयन्ति
न यथोक्तपरिमाणा यवाद्योऽर्था इति ते निरस्ता भवन्ति । नहि यवादीनामर्थानां
परिमाणम् । कथमेतत् । कथं तर्हि यथोक्तपरिमाणार्थं as in F. N. and S.

— l. 6—for संहर्तुं read संहन्तु as in S.

What is printed as verse 133 (Text) has already appeared
in its right place in l. 2.

VERSE CXXXIV

सुवर्णः—सुवर्ण (Vivādaratnākara).

त्रियवं—V. L. त्रियवः

स्वेक—V. L. स्वेव

कृष्णलम्—V. L. कृष्णलः

पञ्चकृष्णलिको—V. L. (a) पञ्चकृष्णलको (Vivādaratnākara, p. 666); (b) पञ्चकृष्णातो

P. 954, l. 1—for मध्यमशब्दोऽत्र read मध्यशब्दो अत्र

— „ —for मपिचि read पचि

— l. 2—for मध्यम read मध्य

— l. 3—for संगमनार्थ read गतार्थ as in S.

VERSE CXXXV

रौप्यमाषकः—V. L. रूप्यमाषकः (Vivādaratnākara, p. 666).

P. 954, l. 8—for कृष्णले इति संज्ञा read कृष्णले इति संज्ञी

— „ —for समुदायसंज्ञा read समुदायं संज्ञा

— „ —for ननु read न तु

— l. 9—for आदेशनिश्चयः read तत्तश्चानिश्चयः

— „ —for नादहीने read नादिहीने

— l. 10—for द्वार्य read उद्धार्य

VERSE CXXXVI

ताम्रिकः—V. L. तास्तिन्नः (Vivādaratnākara, p. 666); but from the subsequent explanation provided it is clear that the reading intended was ताम्रिकः

P. 955, l. 1—for कार्षापण इति read कार्षापणः पण इति

VERSE CXXXVII

चतुः सौवर्णिको—V. L. (a) चतुःसुवर्णको ; (b) चतुःसुवर्णिको (Vivādaratnākara, p. 666).

P. 955, l. 5—for समानन्तु read मानन्तु

VERSE CXXXVIII

त्वेव चोत्तमः—V. L. (a) त्वेकमुत्तमम् (Nandana), (b) चैव चोत्तमः (Mitākṣarā 1. 366) ; (c) त्वेव चोत्तमः (Vivādaratnākara, p. 665).

VERSE CXXXIX

“ According to Nārāyaṇa ‘some’ only have this verse ”—Buhler.

ऋण्ये देये प्रतिज्ञाते—V. L. ऋण्योदये प्रतिज्ञातं (Vivādaratnākara, p. 77).

तद्विगुण—V. L. तु द्विगुण

P. 956, l. 4—for तत्सकाश read मत्सकाश

—— l. 7—for यावद्वयमि read यावन्तमि as in S and N

—— l. 8—for भेदविषय read भेदः । विषय

VERSE CXL

P. 957, l. 2—for तदधमर्ण read तदाऽधमर्ण

—— l. 3—for परमेयादिवृष्ट read परमेयादिवृष्टस्याष्ट as in I. O

VERSE CXLI

गृहीयात्—V. L. कुर्वीत

P. 957, l. 5—for जीवाता read जीवते

VERSE CXLII

मनुपूर्वशः—V. L. मनुपूर्वतः (Smṛtisāroddhāra, p. 326).

समम्—V. L. (a) मतम्; (b) समाम्, noted by Medhātithi.

P. 958, l. 3—यस्य वा महते (See I.O. Ms.—*Errata* at the end).

— l. 5—for महत्वादिकत्वाद्वाँ read महत्वाद्वाँ as in S.

VERSE CXLIII

त्वेवाधौ—V. L. चैवाधौ

P. 958, l. 9—for स्थानाद्विगु read स्थानाद् द्विगु

— l. 11—for आधिं...गुणं read तावदाधिं तु भुञ्जीत यावद्वाँ द्विगुणं
as in I. O.

— l. 15—for कीदृश्यमस्य read कीदृशमस्य

P. 959, l. 3—गौणौचात्र (see I. O. Ms.—*Errata* at the end).

VERSE CXLIV

तोषयेच्चैतन्म—V. L. (a) तोषयेदेनम्; (b) नाशयेच्चैनम्; (c) तोषयेद्देनम्
(Vivādaratnākara, p. 24).

P. 959, l. 6—After गश्च add न

— „ —for समितः read सम्मितः

— l. 9—for हानि भुञ्जी read हानिः । भुञ्जी

P. 960, l. 1—for विज्ञानीष्व read विनीनशो

VERSE CXLV

P. 960, l. 3—Before प्रीत्या add उत्तमर्थेन as in I. O.

— l. 6—for द्यव read अथ

— l. 7—for ऽधि read आधि



P. 960, l. 7—for धाविति read ध्युपनिध्योः as in N.

—— 1. 9—त्रिडाभं धनं (See I. O. Ms.—*Errata* at the end).

—— 1. 11—for अद्यवा read अथ वा

VERSE CXLVI

P. 961, l. 1—for बान्धवाद्यस्ते read बन्धा धेन्वादयः as in I. O.

—— 1. 2—for बान्धवादीनां read बन्धधेन्वादीनां

—— „ —for पविधिर्भागो read पविधेर्भागे as in I. O.

—— 1. 3—for इचय read स्त्रिय

—— „ —for बन्धादीनां read धेन्वादीनां as in I. O.

—— 1. 7—for द्भोग्यस्य read द्भोगस्य

—— 1. 8—for मानामव read मानानामव

—— 1. 9—After मन्थन्ते add (from I. O. Ms.—See *Errata* at the end).

VERSE CXLVII

P. 962, l. 1—for मित्यवस्थितेन read मिति व्यवहितेन as in S.

—— „ —for पुमानत्र read भुज्यमान as in I. O.

—— 1. 3—for स्वामि read स्वामी

—— 1. 6—After वक्ष्यामः add परैः as in I. O.

—— 1. 7—for वस्यवंसति read वस्यैवं सति

—— 1. 11—for साह्य read साह्य

—— 1. 12—for राज्ञास्त्री read राजा स्त्री

VERSE CXLVIII

पौग—V. L. पौग (Aparārka, p. 632).

विषये चास्य—V. L. विषयश्चास्य (Smṛtisāroddhāra, p. 334).

तद्द्रव्य—V. L. तद्धन (Aparārka, p. 632).

P. 962, l. 14—for गण्डेयदि read गण्ड इति

P. 963, l. 1—for कश्मीर read काश्मीराः

— l. 2—for हीनस्त्रायं read हीनस्य नाथं

— l. 6—After भोगेन add न

— „ —for यत्र दृश्य read दृश्य

— l. 7—for तेन read ते यत्र

— l. 8—for दानाद्यद्यस read दानादिः अस

— l. 11—for भोग्य read भोग as in N.

— l. 12—for भोगकेवलतां यस्तु read भोगं केवलतो यस्तु

— l. 14—for नेकादशतो read नेकशतो

— l. 16—for न यथा read यथा as in N.

— l. 18—for दानाद्यागम read दानाद्यागम

— l. 20—for त्वत्रैव read अत्रैव

— l. 21—for याचितान्वहितंन्यस्तं read अन्वाहितं हृतं न्यस्तं
as in Nārada's text.

— „ —for न तु read ननु

— l. 26—for रेकस्य read मेकस्य

— l. 28—for नेतत्तत्त्वमुक्तं read न् । एतत्त्वमुक्तम् as in N.

— l. 29—for पेव read पैव

P. 963, l. 31—for फलमेति read फलमिति

P. 964, l. 9—for स्थैव read स्थ नैव

— l. 13—for नुपपन्ना read नुपपन्नम्

VERSE CXLIX

सीमा—Medhātithi on verse 252 notes that some people do not read सीमा here. What the other reading is cannot be traced.

निवेपोपनिधिः स्त्रियः—V. L. (a) निवेपोपनिधिस्त्रियः ; (b) निवेपोपनिधी स्त्रियः

श्रोत्रियस्त्वं च—V. L. (a) श्रोत्रियद्वयं (Parāsharamādhava-Vyāvahāra, p. 109) ; (b) ब्राह्मणस्त्वं च

न भोगेन प्रणश्यति—V. L. (a) नापभोगेन जीर्यते ; (b) नापभोगेन जीर्यति ; (c) नापभोगेन नश्यति (Parāsharamādhava-Vyāvahāra, p. 109).

P. 965, l. 4—for पजीयमाना read पजीर्यमाणा as in S.

— „ —for द्भोगस्य read द्भोगश्च

— „ —for सुपेक्ष read सुपेक्ष्येतापि

— l. 5—for सत्त्वाप read स्वत्त्वाप

— „ —for रुढ्या read गूढ as in F. N.

After 149 some Mss. have the following additional verse :

यद्विनागममत्यन्तं भुक्तपूर्वैस्त्रिभिर्भवेत् ।

न तच्छक्त्यमपाहर्तुं क्रमाधिपुरुषागतम् ॥

VERSE CL

P. 966, l. 1—for भोक्तव्यं...दाधिं read भोक्तव्यो बलादाधिः

— l. 2—Omit वृद्धिमुत्सृजेदिति सर्वं, which is not found in N or S.



P. 966, l. 3—for नासितं read नाशितं

— l. 6—for प्यधीनेन and प्यधीनः read ध्यधीनेन and सध्यधीनः

— l. 8—for ददाती read ददाति

VERSE CLI

सकृदाहिता—V. L. सकृदाहता (noted by Mitākṣarā, p. 39).

सदे—V. L. शदे (Jolly) (Vivādachintāmaṇi, p. 11).

P. 966, l. 18—for आधिः सतदु read आधिस्तदु

— l. 20—for मुखे read मुख्यं

— „ —for सङ्ख्यास्य द्वै read सङ्ख्यायां स्याद्वै

— l. 21—for हर्षत्वं read हार्षत्वं

P. 967, l. 1—for संतती read सन्तति

— l. 8—for कउपका S reads य उप

— l. 9—for गुणत्वे read गुणत्वं

— l. 15—for प्रयोगस्य read प्रयोगश्च as in S.

— „ —for आदीय read अदीय as in S.

— l. 21—for उभयत्वा read उभयन्न

— l. 23—for सक्रान्ते read सङ्क्रान्ते as in N.

— l. 24—for युगपत्सर्वैवानियन्ते read युगपत्सर्वैवानियते as

in N.

— l. 27—for निषेधस्तु read निषेधोऽस्तु

— „ —for गुण्यावृद्धि read गुण्यादवृद्धि

— „ —for दायसम read दानसम

— l. 28—for अप्याहते read अथाहते

P. 967, l. 29—for न्यायानु read न्यायस्तु

P. 968, l. 1—for सा च फलं वार्षं read सद्दं फलं वार्षं

— ll. 1-2—for मालवक read लव

VERSE CLII

कुसीदपथ—V. L. कुसीदपद (noted in Vivādaratnākara, p. 14).

कृतानुसारादधिका—V. L. कृतानुसारादधिका, noted by Medhātithi.

P. 968, l. 7—for पेक्ष्यं read पेक्ष्य

— „ —for नुसारा read तु सारा

P. 969, l. 1—for प्राप्तस्यानुसारादधिका read प्राप्तस्तस्य या पुरुषसारा-
दधिका as in S.

VERSE CLIII

काळवृद्धिः—V. L. कालिका च (Madanapārijāta, p. 229 and
Vidhānapārijāta II, p. 252).

दृष्टं—V. L. (a) दिष्टं (Vivādaratnākara, p. 9); (b) भीष्टं
(Madanapārijāta, p. 229 and Vidhānapārijāta II, p. 252).

विनिर्हरेत्—V. L. पुनर्हरेत् (Kullūka and Vivādaratnākara, p. 9).

च या—V. L. न वा

P. 970, l. 1—After सांवत्सरिं add तां

— „ —After अतिक्रान्ता add अति

— l. 3—for वर्णः read वर्षः as in S.

— „ —for न यावद् read तावद्

— „ —for मार्गणी read ग्रहणीवा

— l. 9—for यामदृष्टं read या न दृष्टा as in N.

— l. 22—After यदि add न as in S.

— l. 23—Before हिरण्ये add अथवा



VERSE CLIV

करणं—V. L. कारणं (Jolly).

P. 971, l. 2—for निर्जितो read निर्जितां as in N.

P. 972, l. 3—After 'पीडितस्यानुग्रहः' add—अथ शक्तिविहीनः स्यात्.....प्रयोजनम् (all of which is printed on page 1116—bottom). The verse is wrongly printed as part of Manu's text, which it is not.

It is from Nārada (131) and is quoted and explained by Medhātithi in course of his comment on 154.

It is quoted in Vivādaratnākara (p. 71) as from Nārada, and is not commented upon by any other commentator.

P. 1116, l. 4—for प्रेक्ष्य read अपेक्ष्य

— „ —Omit युज्यत इत्यर्थः

VERSE CLV

P. 972, l. 4—Omit हिरण्यमदत्त्वा

— l. 7—for दीनां read दानां as in N.

VERSE CLVI

P. 973, l. 2—for तरणं read तरण

— „ —for तदेश read तद्देशं

— l. 3—for देशं read देशं

— l. 5—for मासमेव हस्तुं read मासं मे वहन्तु

— l. 7—for धर्म read धर्मण

— „ —for अतिक्रमोन् read अतिक्रामन्

— „ —for नाद्या read तद्दद्या as in S.

VERSE CLVII

स्थापयन्ति तु यां—V. L. स्थापयन्तीच्छया (Vivādaratnākara, p. 11).

P. 973, l. 8—for शत read शतं

— „ —for पात्रो read पात्रो

— „ —for स्थूल read स्थूल

— l. 9—for मनं प्रति read मं प्रति

— l. 11—for ध्याहोरयाध read ध्याहारेण । अध

— „ —for भाख्यमन्यस्मा read भाख्यं तस्मा

VERSE CLVIII

यतेत.....V. L. प्रयच्छेत् (Nārāyaṇa).

तस्य—V. L. तत्र (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 185).

P. 974, l. 3—for द्विविधे read द्विविधो

— „ —for प्रतिभूदर्श read प्रतिभूः । दर्श

VERSE CLIX

वशेषं—V. L. वशिष्टं (Vivādaratnākara, p. 57).

P. 975, l. 2—for धिकारःप्रति read धिकारप्रति as in S.

— l. 5—for कार्यसिद्धमपनिष्पन्नसिद्धं read कार्यसिद्धपरिनिष्पन्ने

इदं as in S.

— „ —for ऽदत्तं read ऽदत्ते

— l. 6—for एतस्य यद्वापयेदिति read एतस्मैयद्वापये इति as in N and S.

— l. 7—for अचिनि read अचनि



P. 975, l. 10—for **रिवशे** read **रवशे**

— „ —for **द०डशः शुत्कशश्च** read **दण्डांशः शुत्कांशश्च**

— „ —for **दत्तः** read **द्दत्तः**

— „ —for **पूर्णो** read **पूर्णौ**

— ll. 11-12—for **पुत्रेण दातव्या न भवेयु** read **पुत्रानध्या भवेयु**
which is the reading of Gautama 12.41, as quoted¹¹ here.

VERSE CLX

विधिःस्यात्पूर्वचोदितः—V. L. **विधिरेष प्रचोदितः** (Vivādaratnākara, p. 57).

P. 976, l. 3—for **द्यस्य** read **दन्यस्य**

— l. 4—for **विधिभूत** read **विधिरुत**

— l. 6—for **भुवन्यस्य** read **भुवीत्यस्य**

VERSE CLXI

P. 976, l. 8—for **श्लोको न** read **श्लोकेन**

— l. 11—for **भूतज्जात** read **भूस्तज्जात**

— „ —for **गृहीत्वा N. S.** read **हित्वा**

VERSE CLXII

अलंघनः—V. L. **अलङ्घितः** (Nandana).

P. 977, l. 1—for **दद्याम भवतः** read **दद्याम् । अलंघनः**

— l. 2—for **घनं** read **धनः**

— l. 3—for **यद्यपि न दान** read **यद्यपि दान** as in S.

— „ —for **तद्योनि** read **तद्द्योनि**

P. 977 l. 4—Omit चेन्मैवं निरादेशेने

— „ —वलंवन read वलंधन

— l. 5—for लंवन read लंधन

VERSE CLXIII

P. 978, l. 4—for बुद्धिस्व read बुद्धिः स्व

— l. 5—for युक्तार्थोभ read युक्तार्तभ

— „ —पराश्चेतिर्ज्ञ read परीताश्च ज्ञे which is Nārada's reading.

— l. 9—for प्रकृतिकि read प्रकृतकि

— l. 10—for स्वतन्त्र read अस्वतन्त्र

— l. 12—for कृतमर्थ read कृतः प्रकृतमर्थ as in N.

— ll. 12-13—for अभियुक्तविशब्दौ read अभियुक्तार्तशब्दौ

— l. 13—for धर्मिपरौ read धर्मपरौ

— l. 19—for मत्ताः प्रकृ read मन्तोऽप्रकृ

— l. 24—for इत्युक्तं read इत्युक्तम्

P. 979, l. 1—for तत्कृतः read तत्कृतं

— „ —for कार्यज्ञात read कार्यज्ञातं

— l. 2—for छदि read छन्दि

— l. 5—for हारस्तदा शिष्यते read हारास्तदेशिष्यन्ते

— „ —for एव read एव

— l. 8—for स्तुं read स्तुतुं

— l. 12—for ननु read न तु

— l. 14—for अर्तुरनुज्ञा read अर्तुरननु as in N.



P. 979, l. 18—for तस्य read कृतस्य

— „ —for तद्ग्रहे निवसेत् read तद्ग्रहे निवसतः

— „ —for विभक्तधनं read विभक्तो धनं

— „ —for मपित read मर्जित

— l. 19—for भीतव्य read स्तीतव्य

— l. 20—for न प्रयात् read अप्रत्ययात् as in N.

— l. 21—for असम्बन्धः कृतः read असम्बद्धकृतः

VERSE CLXIV

P. 980, l. 3—for मत्पवि read पत्पवि

— „ —for छिता.....खिता:.....दत्तास्तथा read छिता.....
खिता.....दत्ता तथा

— ll. 3-4—for सिध्यन्ति read सिध्यति

VERSE CLXV

वायुपधिं—V. L. चायुपधिं

P. 981, l. 1—for वापकं read धमनं

— l. 2—for स्थण्डिले read स्थण्डिलं as in N.

— l. 4—for वापन read धमन

— l. 5—for वापनं read धमनं

— l. 6—for मूल्ये read मूल्यं

— l. 9—for प्रतिग्रहं न read प्रतिग्रहं

— l. 11—Before द्वितीयस्य add न

— l. 12—for योगवत्त read योगधमन

P. 981, l. 12—Before स्मृत्यन्तराद्वा add न कर्तव्यम्

—— l. 13—for यच्चाप्यु read यत्र वाप्युप

—— „ —for न्यतरे read न्यतरः

—— l. 16—for मासस्य read मामस्य

—— ll. 17-18—for समीहितः read स पीडितः as in N.

—— l. 19—for वाणिज्या read वाणिज्य as in N and S.

—— „ —दानमेवायं न विक्रयः read दानाधमनविक्रयाः

VERSE CLXVI

कृतो न्ययः—V. L. कृतव्ययः (Vivādaratnākara, p. 52 and Aparārka, p. 647).

कुटुम्बे च—V. L. कुटुम्बार्थे

तस्यात्—V. L. तस्मात् (Aparārka, p. 647).

P. 982, l. 1—for तत्तद्व्यतिरेकेनान्य read न तद्व्यतिरेकेणान्य

—— l. 2—for यद्गृहीतं read येन गृहीतं

—— „ —for कुटुम्बेन read कुटुम्बे

—— l. 4—for तदृष्टे read तच्छिष्टे

—— l. 5—for भक्तात्पर read भक्ताःपर

—— „ —for करणा read भरणा

—— „ —for भक्ति read भक्तै

VERSE CLXVII

व्यधीनो—V. L. व्यधीनो (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 164).

यमाचरेत्—V. L. समाचरेत् (do.)

पि व्यवहारं यमाचरेत्—V. L. वा व्यवहारं समाचरन्



तं उवायाञ्च विचालयेत्—V. L. (a) तमायान्तं विलम्बयेत् ; (b) तन्न्या-
यं न विचालयेत् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 164).

विचालयेत्—V. L. (a) विचारयेत् (Nandana and Vivādaratnā-
kara, p. 55) ; (b) विलम्बयेत् (Govindarāja).

P. 983, l. 1—Omit स पितु not found in N.

—— l. 1—for व्यवहारं ते read व्यवहारं

—— „ —for विक्रयचे read विक्रयं चे

—— l. 2—for सदेशे read स्वदेशे

—— l. 3—for कृतमन्येनुमन्यन्ते read कृतमित्यनुमन्यते as in S.

—— „ —for तदुक्तं read तदयुक्तम्

—— ll. 3-4—from वि...सम्बन्धम् should be transposed
to line 3, after नुमन्यते

—— l. 4—for सम्बन्धम् read सम्बद्धम्

—— „ —for धीनैरस्वातन्त्र्यादध्यनीनस्य तत्कृतम् read धीनैरत्य-
स्वातन्त्र्यादध्यधीनस्य न तत्कृतं प्र

—— l. 6—for अधीनः read दध्यधीनः

VERSE CLXVIII

यच्चापि—V. L. यदपि

यच्चापि लेखितम्—V. L. वा लिखितं च यत् (Smṛtitattva II, p. 231).

अकृत्यान्—V. L. निवर्त्यान्

P. 983, l. 7—for बालाः स्वत read बालास्वत

—— „ —for कृतिस्थोप read कृतिस्थोप

—— l. 8—for लेख्यलेखितं read लेखितं as in N.

—— l. 10—for वायन read धमन

—— l. 11—for न्मत्ताध्य read न्मत्ताताध्य

—— „ —for वृद्धिर्वा read वृद्धैर्वा

—— „ —After सिध्यतीति add न

VERSE CLXIX

क्रियन्ति—V. L. क्रियन्ते

विप्र आढ्यो—V. L. विप्रश्चाढ्यो

P. 984, l. 1—for व्यवहारेणक्षणं read व्यवहारेक्षणं

—— l. 3—for विप्रं प्रतिग्रहीतव्याः read विप्रः प्रतिग्राहयितव्यः

—— l. 7—for कुसीदी read कुसीदीव

VERSE CLXX

P. 985, l. 1—for राज्ञा read राजः

VERSE CLXXI

P. 985, l. 3—for चाप्यते read ख्याप्यते as in S.

—— „ —Omit स्माभिर, not in S.

—— l. 5—for धर्मद read धर्मद

VERSE CLXXII

च वर्धते—V. L. विवर्धते (Vīramitrodaya-Rājanīti, p. 75).

वर्णसंसर्गात्—V. L. (a) धर्मसंसर्गात् (Rāghavānanda); (b) वर्णा-
संसर्गात्, noted by Medhātithi.

अबलानां—V. L. दुर्बलानां (Vīramitrodaya-Rājanīti, p. 275).

P. 986, l. 2—for प्रभवे read प्रभवैः as in N.

—— l. 4—for बलवद्भिर्भिरभि read बलवद्भिर्भिरभिः

—— „ —for स्वैभ्य read तेभ्य

—— „ —for कर्तव्यं धर्म read कर्तव्यमधर्म

VERSE CLXXIII

P. 986, l. 6—for न केवलं read अयं च केवलं as in S.

—— l. 7—for तद्विद्विदिस्वा read तद्वत्त्वा as in S.

—— „ —for यमस्ये read यस्ये as in N and S.

—— l. 8—for प्रसङ्गाख्यानेन read प्रसङ्गप्रत्याख्यानेन

VERSE CLXXIV

वशे—V. L. (a) वशं; (b) वश्यं

P. 987, l. 1—for अघर्मे read अघर्मेण as in S.

— „ —for दंघर्मजं read दमधर्मजं as in S.

— l. 3—for दमधर्मजं read बध्नन्ति

VERSE CLXXV

तु संयम्य—V. L. च संयम्य

VERSE CLXXVI

स राज्ञा तच्चतुर्भांगं—V. L. (a) स राज्ञा तु चतुर्भांगं; (b) स राज्ञ्यचतुर्भांगं

P. 987, l. 6—Omit the न after other या, not in S.

VERSE CLXXVII

धनिकाय—V. L. (a) धनिकेन (Mitākṣarā, 2. 43); (b) धनिकस्य (Aparārka, p. 646 and Vivādaratnākara, p. 70).

वकुष्ट—V. L. पकुष्ट (do.)

जातिस्तु—V. L. जातिश्च

श्रेयास्तु—V. L. श्रेयाश्च

P. 988, l. 1—for धनेन read उधमण्यौ

— l. 3—for इत्यथ्येक read इत्यथैक

— l. 4—for पद्यते read पठ्यते

VERSE CLXXVIII

विवदतां नृणाम्—V. L. विवदमानयोः (Nandana).

समतां—V. L. शमतां (Vivādaratnākara, p. 618),

P. 989, l. 1—for प्रत्ययः read प्रत्ययसिद्धानि

—— ll. 2-3—for समतं नयेद read समतां नयेद

—— l. 3—for दैकमन्यत read दैकमन्यं

VERSE CLXXIX

P. 989, l. 7—for नितरांनच read नितरां च

—— l. 8—for संपन्न read संपन्नः as in N and S.

—— l. 9—for नुग्रहीतमहिमहत्त्वेन read नुगृहीतमहिमत्त्वेन

—— l. 13—for प्रत्ययो read प्रलयो

VERSE CLXXX

“Nandana omits 184, and places the other verses as follows:—180, 195, 188 b, 185, 186, 189, 194, 187, 188a, 181, 182, 183, 196, 190, 191, 192, 193.”—Buhler.

यथादायः—V. L. यथादानं

P. 990, l. 2—for निश्चिन्यते read निश्चिर्यते

—— „ —for समुद्र read सोऽमुद्र

—— l. 5—for नियुज्य read भियुज्य

—— l. 7—for मेषो read मोषो

VERSE CLXXXI

याच्यमानो—V. L. याच्यमानं (Aparārka, p. 664).

निचेसः—V. L. निचेष्ट्रे (Aparārka, p. 664).

वाच्यः—V. L. वाच्यः (noted in Vivādaratnākara, p. 94).

P. 991, l. 2—for शोधनी read शोधनीयः

—— „ —for पुनरनेक read पुनरेक

—— „ —for कृतमि read कृतम



“The order of the verse referring to the trial of the bailee is, according to Govindarāja—181, 183, 184, 182,—and according to Nārāyaṇa, 181, 183, 182, 184.”—Buhler.

VERSE CLXXXII

संन्यस्य—V. L. सत्यस्य

तस्य—V. L. तेषु

P. 991, l. 8—for तत्त्वया read न त्वया as in N.

—— „ —for चेसा read चेप्रा

—— l. 11—for नाशको read नाशङ्का as in S.

—— l. 13—for तेनैव त read तेनैत as in P.

VERSE CLXXXIII

यथाकृतम्—V. L. यथाक्रमम् (Aparārka, p. 664).

प्रतिपद्येत—V. L. प्रतिदद्यात्

परैः—V. L. परेण (Vivādaratnākara, p. 94).

P. 992, l. 2—for गृहीत read गृहीतृ

—— „ —for बलम्बं read विलम्बं

VERSE CLXXXIV

तेषां—V. L. तेषां (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 209).

उभौ निगृह्य दाप्यः स्यादिति—V. L. (a) सन्निगृह्योभयं दाप्य इति;

(b) स्वयं निगृह्य दाप्यः स्यादिति (Vivādaratnākara, p. 94)

(c) उपसङ्गृह्य दाप्यः स्यादिति

P. 992, l. 5—for दृग्धस्य read दृभ्य as in N and S.

—— „ —for धिने read धिनो

—— „ —for साधारणा read धारणा

VERSE CLXXXV

- P. 993, l. 1—for उत्पलन read प्रलन
 ——— l. 2—for यावन्निचे read याचते निचे as in N.
 ——— l. 4—for तस्मिन्न read तस्मिन्
 ——— l. 5—for निचेप्तुं न read निचेप्तुर्न
 ——— „ —for तदीये read त्वदीये
 ——— l. 8—for निचेप्तु read निचेप्त्र

VERSE CLXXXVI

- नियोक्तव्यो—V. L. नियोक्तव्यो (Kullūka).
 न स राज्ञाभि—V. L. स राज्ञा नाभि

VERSE CLXXXVII

This verse has been omitted by Medhātithi ; neither the text nor the commentary is found in any of the Mss.

- वृत्त—V. L. वृद्धिं (Vivādaratnākara, p. 94).
 परिसाधयेत्—V. L. परिशोधयेत् (Vivādaratnākara, p. 94 *var. lec.*)

VERSE CLXXXVIII

- निचेपेष्वेव—V. L. निचेपेष्वेव
 स्यात्परिसाधने—V. L. स्यात्परिसाधने adopted by Medhātithi.

- P. 995, l. 1—for परमसाध read परिसाध

VERSE CXC

- शपथैश्चैव—V. L. सापथैश्चैव (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 208).

- P. 996, l. 1—for प्रमाणांन read प्रमाणांनि

VERSE CXCI

यो निक्षेपं नार्थयति—V. L. यो नार्थयति निक्षेपं (Vivādaratnākara, p. 91).

यश्चानिच्छिय—V. L. तथाऽनिच्छिय

वा तत्समं दमम्—V. L. (a) दण्डं च तत्समम् (Aparārka, p. 663).

शास्यौ—V. L. शिष्यौ (Nandana).

दाप्यौ वा—V. L. प्रदाप्यौ (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 208).

P. 996, l. 3—for वानस्य निक्षिप्तयाच read वानस्यानिक्षिप्तं याच

VERSE CXCII

निक्षेपस्यापहर्तारं—V. L. हर्तारं चाप्युपनिधेः

अविशेषेण—V. L. विशेषेणैव (Vyavahāramayūkha, p. 85).

P. 997, l. 1—for प्रतीत्योप read प्रीत्योप

VERSE CXCIH

Nandana places this verse after the next three.

उपधाभिश्च—V. L. उपधाभिस्तु

यः कश्चित्—V. L. यत् किञ्चित्

P. 997, l. 2—for नेकविधद्रव्य read नेकविधं । द्रव्य

— „ —for दातुं read दानम् । as in S.

— l. 3—for नान्येन read नान्यदन्येन

— „ —for चित्रासमन्तरान्यत् read चित्रासनम् राज्यत

— l. 4—for गृहयन्ते read गृह्यते

— l. 5—for दापयमे read दापयामि

— „ —Omit पुत्रमित्र, not in S.

— „ —for दुहितान्न यात्यन्त read दुहिता त्वय्यस्यन्त

P. 997, l. 6—for मासज्य read मानीय

— „ —for तत्समक्ष्यं read तत्समचं

— l. 7—for द्युधाभिः read द्युधभिः

— „ —for मार्गं read मार्गे प्र

— „ —for विविधः कुटा read विविधकुटा

VERSE CXCV

यः—V. L. यन् (Aparārka, p. 665).

यावांश्च—V. L. यावान्वा (do.)

P. 998, l. 2—for भवेदाह read स चेदाह

VERSE CXCV

प्रतिपद्यते—V. L. प्रतिपाद्यते

VERSE CXCVI

धनस्यैवं—V. L. धनस्यैव (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 209).

राजा विनिर्णयं कुर्यादन्विष्वन्—V. L. कुर्याद्विनिर्णयं राजाऽन्विष्वन् (do.)

P. 999, l. 2—for पकरणे read पप्रकरणे

— l. 3—for श्लोकार्धन read सौहार्देन as in N.

— „ —for विध्यर्थाः read विधिःअर्थवादः

VERSE CXCVII

P. 999, l. 6—for साक्षित्व read साक्षित्वम् ।

— l. 7—for एव प्रतिषेधः read न साक्षित्वे एव प्रतिषेधः ।

— „ —for मनुज्ञातेन read मनुज्ञातेन



VERSE CXCVIII

सान्वयः—V. L. स्वान्वयः (Vivādaratnākara, p. 103).

अवहार्यो भवेच्चैव—V. L. (a) अवहार्यः स तु भवेत् ; (b) अवहार्यो भवेच्चैष

ऽनपसरः—V. L. ऽनवसरे

प्राप्तः स्यात्—V. L. प्राप्तुं यात् (Vivādaratnākara, p. 103).

P. 1000, l. 1—for स्वामिविक्रिय read अस्वामिविक्रिय

— l. 3—for आदिस्वा read आदिः स्वा

— „ —for गतसान्व read गतः सान्व

— „ —for सहयनुज्ञा read स हयननुज्ञा

— l. 6—for प्रकाशनस्य read प्रकाशकयेण वा क्रीतं तदा न चौरवद् दण्ड्यः षट्शतमेव दाप्यः अथवा यो न क्रीणाति न तस्य, as in S.

— „ —for यदितिनतन्न read यदि तु तन्न

VERSE CXCIX

दायो—V. L. क्रयो

व्यवहारे यथास्थितिः—V. L. व्यवहार इति स्थितिः

P. 1000, l. 10—for प्रतिषेधव्यव read प्रतिषेधः व्यव

After verse 199, some Mss. have the following additional one, quoted also in Vivādaratnākara (p. 103).

अनेन विधिना शास्यः (V. L. शिष्यः) कुर्वन्नस्वामिविक्रयम् ।

अज्ञानाऽज्ञानपूर्वतु चौरवद्दण्डमर्हति ॥

It has been commented upon by Nandana and Rāma-chandra.

VERSE CC

दृश्यते यत्र—V. L. यत्र दृश्येत (Aparārka, p. 635).

P. 1001, l. 2—for बलवत्सम्भोगो भोग एव संभोगकारणं read बलवान्
न सम्भोगः कारणम्

— „ —for भोगमात्रेण read न भोगमात्रेण

Nandana places this verse after 202.

VERSE CCI

विशुद्धं हि—V. L. विशुद्धस्तु (Vivādaratnākara, p. 103).

गृहीयात्—V. L. गृहीत्वा

क्रमेण—V. L. क्रमेण

P. 1002, l. 3—for अन्यथा स्वामिना तद्द्रव्यं read अन्यथाऽस्वामिना
तद्द्रव्यं

— l. 5—for र्धस्तेन read र्धोऽनेन

VERSE CCII

मूलम्—V. L. मूल्यम्

अनाहार्यं—V. L. अनाहार्य (Vyavahāramayūkha, p. 87).

शोधितः—V. L. शोधितम् (Jolly ; Vivādaratnākara, p. 103 ;
Vyavahāramayūkha, p. 87 and Aparārka, p. 776).

अदण्डो—V. L. अदण्डो (Aparārka, p. 776).

धनम्—V. L. च तत् (Nandana).

नाष्टिको—V. L. नास्तिको (Aparārka, p. 776).

P. 1002, l. 7—for नेन read येन

— ll. 7-8—for प्रकाश read प्रकाशे

— l. 8—for प्रसिद्धये read प्रसिद्धाया

— „ —for शोधिते read शोधितो

— „ —for नाष्टिकं read नाष्टिकः

— l. 10—for संक्षेपतः क्रमे प्रका read संक्षेपः । प्रका

VERSE CCIII

संसृष्टरूपं—V. L. (α) संसृष्टं रूपं (Vivādaratnākara, p. 119).
न सावधं—V. L. न चासारं (Kullūka).
न दूरे—V. L. दूरेण

P. 1003, l. 1—for नान्यकु read नान्यत् कु
—— l. 2—for यञ्ज read यच्च

VERSE CCIV

P. 1004, l. 2—for शुल्कोस्यां read शुल्को यस्य
—— „ —for शुल्कदं read शुल्कदे
—— „ —for हर्तव्या read हर्तव्ये

VERSE CCV

न च या स्पष्टमैथुना—V. L. न या संस्पष्टमैथुना

P. 1004, l. 5—for न्यस्यापि read न्यस्या अपि
—— l. 6—After अजानतः add षट्शतम् as in I. O.
—— „ —for उन्मत्तया read उन्मत्ताया
—— „ —for कुष्ठोन्मत्तादयः read कुष्ठोन्मादादय

VERSE CCVI

नुरूपेण—V. L. नुसारेण (Vivādaratnākāra, p. 118).

P. 1005, l. 2—for काङ्क read काङ्ग
—— l. 3—for सामिकृतां read सामिकृतं
—— l. 4—for दारुण्यं read दानुरुण्यं
—— „ —for कर्तात read कर्तारः त as in S.
—— „ —for धानात्विं read धानत्विं

VERSE CCVII

च कारयेत्—V. L. तु कारयेत् (Vivādachintāmaṇi, p. 49).

P. 1005, l. 6—for तउपरि read तत उपरि

VERSE CCVIII

यस्मिन्—V. L. यस्य (Kṛtyakalpataru).

प्रत्यङ्ग—V. L. प्रत्यंश (Vivādaratnākara, p. 129 and Kṛtyakalpataru).

P. 1006, l. 1—for सायत्तेन प्रतिपुरुषे read आन्नायन्ते न प्रतिपुरुषं as in S.

—— l. 2—for तत्रासूया read राजसूया as in S.

—— ll. 2-3—for चिदज्यकर्मसु read चिदंगकर्मसु as in S.

—— l. 3—for वदवव read वदध्वयं

—— l. 4—for उत्तारचैव सामान्याऽन्ये read उत तस्यैव साऽन्ये

—— l. 6—for एष read एव

—— „ —for उत्तरकर्तृ read उत कर्तृ, and as in S.

—— l. 7—for प्रधानदक्षिणाया इव read प्रधानदक्षिणाया इति कथयित्वा प्रश्नः—Bring here l. 8.

VERSE CCIX

हरेत चाध्व—V. L. (a) हरेदधाध्व (Vivādaratnākara, p. 120);
(b) हरेत वाध्व (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 221).

वापि—V. L. चापि (Vivādaratnākara, p. 120).

क्रये—V. L. क्रतौ

होता वापि हरेदश्वं—V. L. होता हरेत्तथैवाश्वं (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 221).



P. 1006, l. 10—पुरुष.....नादृष्टार्थः all this, as forming part of the Bhāṣya on 108, should be transposed to l. 7 above.

— „ —for मनश्चा read मतश्चा

P. 1007, l. 1—for सोमोपाहर read सोमापहर as in I. O.

VERSE CCX

स्परे—V. L. सधिनः (Vivādaratnākara, p. 118).

चतुर्थीशास्त्र—V. L. (a) चतुर्थीशास्त्र; (b) तुरीयांशास्त्र

P. 1007, l. 3—for तस्वाध्वं read ततःसर्धं as in S.

— „ —for शन्नत read शत् । त

— l. 4—for तृतीयनः read तृतीयिनः

— „ —for शब्दस्त्वना read शब्दश्चना as in I. O.

— l. 6 —for समत् read समस्तत् as in I. O.

VERSE CCXI

विधियोगेन—V. L. (a) क्रमयोगेण (Rāghavānanda); (b) क्रमयोगेन (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 221).

व्यांशप्रकल्पना—V. L. व्यांशं प्रकल्पयेत् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 221).

P. 1008, l. 3—for योगवै read योगः । वै

VERSE CCXII

धर्मार्थं येन दत्तं स्यात्कस्मैचिद्याचते धनम्—V. L. (a) कस्मैचिद्याचमानाय दत्तं धर्माय यद् भवेत्; (there is nothing to show that this is Medhātithi's reading, as remarked by Hopkins);—(b) धर्मार्थं येन यद् दत्तं कस्मैचिद्याचते धनम् (Vivādaratnākara, p. 147).

न देयं तस्य तद् भवेत्—V. L. (a) तस्मै देयं न तेन तत्; (b) न देयं तेन तद् भवेत् (Vivādaratnākara, p. 137).

P. 1009, l. 2—for लययेदित्यत्र वादिनि युज्जीत read लपयेदन्यत्र वा विनियुज्जीत

— 1. 5—After कर्मेति add उपक्रम्य

— 1. 6—for स्ववस्थि read व्यवस्थित as in S.

— „ —for निर्वृत्तप्रयोजनेति read निर्वृत्ते प्रयोजने इति as in S.

VERSE CCXIII

संसाधयेत्—V. L. सन्धारयेत् (Rāmachandra).

वा पुनः—V. L. मानवः (Nandana).

निष्कृतिः—V. L. निष्कृतिम्

P. 1009, l. 8—for देतदर्या read देतद्दर्पा

— 1. 9—for शङ्कमानं read शङ्कमानः

VERSE CCXIV

दत्तस्यैषोदिता—V. L. दत्तस्यैवोदिता

P. 1010, l. 3—for यमानो धर्मो न परय read यमाने धर्मो न नश्य as in S.

VERSE CCXV

भृतो—V. L. भृत्यो (Mitākṣarā, 2. 198).

न कुर्याद्यो—V. L. न यः कुर्यात् (Vyavahāramayūkha, p. 92).

कृष्णलान्यष्टौ न देयं चास्य—V. L. (a) कृष्णलानष्टौ च देयं चैव,
(b) कृष्णलानष्टौ न देयं चास्य (Vyavahāramayūkha, p. 92).

यथोदितम्—V. L. यथोचितम् (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 233).

चास्य—V. L. तस्य (Mitākṣarā, 2.198).

P. 1010, l. 6—for भृत्या read भृत्यः

P. 1011, l. 5—for गृह्णाति read गृह्णात्य

VERSE CCXVI

स्वयः—V. L. सुयः

सदीर्घस्यापि—V. L. सुदीर्घस्यापि (Nārāyaṇa; *not* Medhātithi, who is misrepresented by Buhler and Hopkins).

P. 1011, l. 6—for भृते read भृत्यो

VERSE CCXVII

सुस्थो—V. L. स्वस्थो (Aparārka, p. 797).

यस्तत्कर्म—V. L. यः स्वकर्म

अदपोनस्यापि—V. L. अल्पेनाप्यस्य

P. 1011, l. 9—for the opening line read अथ वा स्वामी न वारयत्येनं.....(see I. O.)

VERSE CCXVIII

P. 1012, l. 1—for परस्या read पदस्या

—— l. 3—for सूत्रा read तत्रा as in I. O.

—— l. 4—for समयसिद्धिः read समयः संवित् as in S.

—— „ for इदं यावता मनुते read इदं मया भवतामनुमते as in S.

—— l. 5—for प्रकारेणोप read प्रकरणोप

VERSE CCXIX

विसंवदेन्नरो लोभात्—V. L. विसंवदेत् लोभात्

P. 1012, l. 9—for दग्धएव दोषान्कर्तुं read तदेषां कर्तुं as in S.

—— l. 10—for वेदकमिति read वादम् । किमिति as in S.

—— l. 11—for बाह्याभ्य read वा नाभ्य as in I. O.

—— l. 13—for विसंवादे मान्यस्यकल्पः read विसंवदमानस्यान्यः कल्पः as in S.

VERSE CCXX

निगृह्य—V. L. निगृह्य (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 253).
चतुस्सुवर्णान् पणिष्कान्—V. L. चतुस्सुवर्णं पणिष्कं (Mitākṣarā,
2. 187).

P. 1013, l. 2—for न्तराच्छादशतं read न्तरे साष्टशतं

— l. 3—for पश्येत् read पश्यन्

VERSE CCXXI

एतत्—V. L. (a) एवं (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 253
and Vivādaratnākara, p. 182); (b) एतं
दण्डविधिं—V. L. धर्म्यविधिं (Vivādaratnākara, p. 182).

VERSE CCXXII

च—V. L. वा (Kullūka and Aparārka, p. 831).
दशाहात्—V. L. दशाहे (Aparārka, p. 831 and Smṛtitattva,
p. 551).

P. 1014, l. 1—for मूलत read मूल्यत as in S.

— l. 2—for विरलक्रंतुरनुशयन read विक्रेतुरनुशयेन

— l. 4—for वणिकपणने यो read वणिकपणोऽन्यो as in N.

— l. 8—for द्वजा read देवजा

— „ —for क्रियते read विक्रियते

— ll. 10-11—for अविचहित read अविचत

VERSE CCXXIII

न दद्यान्नापि दाययेत्—V. L. (a) न दद्यान्नाददीत च (Nandana); (b)
न दद्यात् च दाययेत् (Aparārka, p. 831); (c) न दद्यान्नैव दाययेत्
(Vivādaratnākara, p. 190).
दण्ड्यः—V. L. दण्ड्यौ



P. 1014, l. 13—for क्रेता यावतानुशय read क्रीतानुशयः । जातानुशय

P. 1015, l. 1—for अन्विच्छेत् read अन्विच्छन्

After verse 223 some Mss. have the following additional verses :—

स्याच्चतुर्विंशतिपणे दण्डस्तस्य व्यतिक्रमे ।
पणस्य दशमे भागे दाप्यः स्यादतिपातिनि ।
क्रीत्वा विक्रीय वा पण्यमगृह्णद्दत्तस्तथा ।
पणा द्वादश दाप्यश्च मनुष्याणां च वत्सरान् ॥
पणा द्वादश दाप्यः स्यात्प्रतिबोधे न चेद्भवेत् ।
पशूनामप्यनाख्याने त्रिपदादर्पणं भवेत् ॥

VERSE CCXXIV

P. 1015, l. 5—for न्मत्तये read न्मत्ताये

VERSE CCXXV

नाकन्यासु—V. L. नत्वन्यासु (Viramitrodaya-Samskāra, p. 741).

अकन्येति तु—V. L. अकन्येति च

P. 1015, l. 7—for चक्रो read चाक्रो

— „ —for पर्यासकृत्वेन read पर्यासकत्वेन

VERSE CCXXVI

Some Mss. omit this verse.

P. 1016, l. 2—After दार add कर्म

— l. 3—for कर्तृत्वं read प्रागकर्तृत्वं as in S.

— l. 4—for विवाहमन्त्रा read विवाहः । मन्त्रा

— „ —for कन्यासु read नाकन्यासु

VERSE CCXXVII

P. 1017, l. 4—for इष read एष as in N.

—— l. 6—Before विवाह add न

—— l. 8—for प्रत्यधि read सत्यधि

—— l. 12—for पदे वदे read पदे

—— l. 14—for दानोत्तर read दानान्तर

—— „ —for त्यात्तपूर्व read त्याज्ञ पूर्व

—— l. 16—for श्रोपयोग read श्रोपभोग

VERSE CCXXVIII

This verse is omitted in some Mss.

धर्मे—V. L. धर्म्ये (Vivādachintāmaṇi, p. 88).

P. 1018, l. 2—for ज्ञेति read ज्ञिति

—— l. 3—for सच read वाचा as in N.

—— l. 4—for शमय्य read शय्य as in N.

—— „ —for मृत्विक्काद्वृत्तो read मृत्विक् च वृत्तो

—— „ —for यदत्तं read दत्तं

—— l. 9—for नुशयो read नुशये

VERSE CCXXIX

व्यतिक्रमे—V. L. यथाविधि (Vivādaratnākara, p. 170).

P. 1018, l. 12—for भवदि read भवेदि

VERSE CCXXX

चेमे—V. L. (a) चेमौ (Vivādaratnākara, p. 171); (b) चेमो (Aparārka, p. 772).

चेत्तु—V. L. त्वेत्तु (Vivādachintāmaṇi, p. 81).

P. 1019, l. 2—for गृहे read तद्गृहे

VERSE CCXXXI

भृतो—V. L. भृतिः (Vivādachintāmaṇi, p. 80).

P. 1019, l. 15—for पद्यते read पठ्यते

This verse is placed by Nandana between verses 244 and 45—says Hopkins.

VERSE CCXXXII

श्वहतं—V. L. श्वग्रस्तं (Vivādaratnākara, p. 173).

एव तु—V. L. एव तत् (Aparārka, p. 773).

विनष्टं—V. L. जगधं तु (Mitākṣarā on 2. 164).

पाठ—V. L. गोप Vivādachintāmaṇi, p. 81).

—— l. 2—for श्वहत read श्वहतं

—— l. 3—for चपटस्य read चयस्य as in N.

—— l. 4—for सैवोत्प read सैव वोत्प

VERSE CCXXXIII

विधुष्य—V. L. विक्रम्य (Vivādachintāmaṇi, p. 81).

न पाठो दातुमर्हति—V. L. न पाठस्तत्र किञ्चिदपी (Aparārka, p. 772).

स्वस्य—V. L. तस्य (Vivādachintāmaṇi, p. 81).

VERSE CCXXXIV

कणौ चर्म च बालाश्च—V. L. चर्मकणौ सक्थिबालौ

पशुषु स्वामिनां दद्यात्—V. L. (a) पशुस्वामिनि दद्याच्च (Vivādaratnākara, p. 175); (b) पशुस्वामिषु दद्याच्च (Vyavahāramayūkha, p. 96).

स्वामिनां—V. L. स्वामिषु (Bālambhaṭṭi on 2. 164).

वस्तिं स्नायुं च—V. L. (a) वस्ति स्नायु च (Vyavahāramayūkha, p. 96); (b) वस्तिस्नायूनि (Jolly); (c) वस्तिं पायूनि (Bālambhaṭṭi, 2. 164).

वस्तिं स्नायुं च रोचनाम्—V. L. (a) वस्तिस्नायुरोचनाम् (Vivādaratnākara, p. 75); (b) वस्तिस्नायुरोचनाम् (Parāśharamēdhava-Vyavahāra, 265).

अङ्काश्च—V. L. (a) अङ्कानि; (b) अङ्गानि (Rāghavānanda and Mitākṣarā, 2. 164 and Vivādaratnākara, p. 175); (c) अङ्गादि (noted in Vivādaratnākara, p. 175).

अङ्कांश्च दर्शयेत्—V. L. अङ्काभिदर्शने (Vyavahāramayūkha, p. 96).

P. 1021, l. 1—for पर्णा read कर्णा

VERSE CCXXXV

त्वनायति—V. L. त्वनापदि

यत्—V. L. यां (Kullūka and Vivādaratnākara, p. 175, and Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 265).

P. 1021, l. 4—After अवष्टब्धे add न as in N.

VERSE CCXXXVI

अवरुद्धानां—V. L. अविरुद्धानां

यामुत्प्लुत्य—V. L. (a) यामुत्पल्य; (b) यामुपेत्य (Parāsharamādhava-Vyavahāra, p. 265 and Aparārka, p. 773).

VERSE CCXXXVII

धनुश्शतं परीहारो—V. L. धनुश्शतपरीहारो (Aparārka, p. 774).

परीहारो—V. L. (a) परीणाहो (Vivādaratnākara, p. 231); (b) परीवारो (Nandana).

शम्या—V. L. सम्या (Vivādaratnākara, p. 231).

P. 1022, l. 6—for यामस्य read ग्रामस्य

—— l. 7—Before दण्ड add शम्या

VERSE CCXXXIX

वृत्तितत्र प्रकु—V. L. वृत्तिं च तत्र कु (Mitākṣarā, 2. 162).

शूकरमुखानुगम—V. L. शूकरमुखोन्मितम् (noted by Bālabhāṭṭi, 12. 162).

न विलोकयेत्—V. L. नावलोकयेत् (Mitākṣarā, 2. 162).



च वारयेत्—V. L. (a) चावारयेत्; (b) निवारयेत् (Mitākṣara, 2. 162); (c) वावारयेत् (noted in Bālabhāṭṭī, 2. 162).

P. 1023, l. 3—for प्रकार read प्राकार as in S.

— l. 6—for मुखंपरि read मुखपरि

VERSE CCXL

ग्रामान्तीयेऽथ—V. L. ग्रामान्ते येऽथ (Aparārka, p. 771).

विपालान्—V. L. विपालं

वारयेत्—V. L. (a) चारयेत् (Rāmachandra); (b) धारयेत् (Vivādaratnākara, p. 232).

पशून्—V. L. पशुम् (Vivādaratnākara, p. 232 and Aparārka, p. 771).

P. 1024, l. 2—for हिते read हितः

— „ —for गृहे.....पालः read as in I. O. Ms. (see *Errata* at the end).

— l. 6—for पालप्रमादादपिचौवारयेत् read विपालंप्रेमादाद्युच्युतंवारयेत् as in I. O.

VERSE CCXLI

पणं—V. L. दण्ड (Aparārka, p. 769).

चेन्निकस्य—V. L. चेन्निकाय (Aparārka, p. 769).

तु सदो देयः—V. L. (a) त्वसितं देयं; (b) तु शदो देयः (Aparārka, p. 769).

P. 1024, l. 10—for चन्निणो read नाः कृण

— „ —for जयति read जयते as in I. O.

VERSE CCXLII

न दण्ड्यान्—V. L. अदण्ड्यान् (Aparārka, p. 771).

P. 1025, l. 1—for मनुष्या read महिष्या



P. 1025—l. 1—for सत्कारै read उच्चायः as in L. O.

—— l. 2—for दीनां प्रकृतयो वो read दीनां प्रतिकृतयो देवा उ as in S.

—— l. 5—for मण्डनस्थः read मण्डनास्त्व as in N.

—— „ —for हीताऽन्यव read हीता अन्यव as in N.

—— l. 6—for गृहीत्वा read गृहीता

—— „ —for मयदण्डः read मद्दण्डः as in S.

VERSE CCXLIII

चेत्रियस्य—V. L. चेत्रिकस्य

VERSE CCXLV

सुप्रकाशेषु—V. L. सप्रकाशेषु (Vivādachintāmaṇi, p. 92).

सीमां—V. L. (a) एनां (Vivādaratnākara, p. 201); (b) एतां (Aparārka, p. 758).

सेतुषु—V. L. हेतुषु (which is wrongly attributed by Hopkins to Medhātithi.)

P. 1027, l. 3—for सप्रकाशेषु सेतवः read सप्रकाशेषु सेतुषु

—— „ —for शेषजाती read शिष्टजाती as in N.

—— l. 4—for दनुस्थि read दनुपस्थि

—— l. 5—for हेत्वाभि read हेत्वाभि

—— l. 6—for व्ययते read व्यज्यते

—— „ —for तत्तात्पर्येष्वेषु read तावत्फलं उपेष्ट as in S.

VERSE CCXLVI

शास्त्रमलीन् शाल—V. L. शास्त्रमलीशाल (Mitākṣarā, 2. 150, Vivādaratnākara, p. 202).

सीमावृत्तांश्च—V. L. सीमावृत्तांस्तु (Vivādachintāmaṇi, p. 93).

P. 1027, l. 7—for एवं हि read एते च as in

P. 1029, l. 4—for निर्णयः read निर्णयः as in S.

P. 1029, l. 4—for वसतः read वसतेः

— 1. 5—for यत्तु read ये तु

— 1. 6—for पठन्ति read न पठन्ति as in S.

— „ —for क्यतेति read क्येतेति as in S.

— „ —After पुनः add उच्यते as in S.

VERSE CCLIII

सीमावादविनिश्चयः—V. L. (a) सीमावादे विनिर्णयः (Mitākṣarā, 2. 152); (b) सीमावादविनिश्चयः ; (c) सीमावादविनिर्णये ; (d) विवादे सीम-
निश्चयः (Vivādaratnākara, p. 203).

P. 1030, l. 6—for नीयेरन्नत्रव read नीयेरन्नैव as in S.

— „ —for प्रकाश्या read प्रकाशा

— 1. 7—for विनिश्चये तत्त्वाधिगमलिङ्गे read विनिश्चयः
तत्त्वाधिगमः । संशयितलिङ्गे ऽलिङ्गे as in S.

VERSE CCLIV

सीमि सा—V. L. सीम सत (Vivādaratnākara, p. 105 and
noted by Bālabhaddi, 2. 152).

ग्रामेयक—V. L. (a) ग्रामीयक (Kullūka and Aparārka, p. 779
and Kṛtyakalpataru); (b) ग्रामीयक

P. 1031, l. 2—for निश्चित्य...कात्र read निश्चयः । असत्सु लिङ्गेषु
सीम्येव सात्त्वं पृच्छ्यते काऽत्र as in S.

VERSE CCLV

समस्ताः—V. L. सामन्ताः (Aparārka, p. 759 and Vivāda-
ratnākara, p. 206).

सीमि निश्चयम्—V. L. (a) सीमनिर्णयम् (Aparārka, p. 759);
(b) सीमनिश्चयम् (Vivādaratnākara, p. 106).



निबधीयात्तथा सीमां—V. L. (a) तथा तां च निबधीयात् (Aparārka, p. 759); (b) तथा तं च निबधीयात् (Vivādaratnākara, p. 206).

सर्वास्तांश्चैव नामतः—V. L. (a) समस्तांस्तांश्च साक्षिणः (Aparārka, p. 759); (b) सामन्तांस्तांश्चनामतः (Vivādaratnākara, p. 206).

P. 1032, l. 4—for यात्तव read यात् पत्रके लिखेत् as in I. O.

VERSE CCLVI

तं—V. L. तर् (Bālabhāṭṭī, 2. 152).

P. 1032, l. 6—for यद्यस्य read यद्यपि as in S.

—— ll. 6-7—for भयभञ्जनार्थं read भयसञ्जनार्थं

—— l. 7—for स शूका read शुद्धा as in I. O.

—— „ —for वाच्यं read वाच्यन्ते as in S and N.

—— l. 8—for क्षिप्सया read वीप्सया as in S.

—— „ —for मियुक्तं तं read भिः सुकृतं तं as in S.

—— „ —for कस्या read कन्या as in S.

VERSE CCLVII

P. 1032, l. 1—for त्वे वध्यते read त्वेवधारिते

—— l. 2—for वा सञ्ज read व्यासञ्ज

VERSE CCLVIII

ग्रामाः सामन्तवासिनः—V. L. (a) ग्रामसीमान्तवासिनः (b) ग्राम्याः सीमान्तवासिनः (c) ग्रामाः सीमान्तवासिनः (Mitākṣarā 2. 152 and Aparārka, p. 760) (d) ग्राम्याः सामन्तवासिनः

P. 1032, l. 6—for न्तवासि read न्तरवासि

VERSE CCLIX

सीमिसा—V. L. सीमसा (Parāsharamādhava, Vyavahāra, p. 272).

इमानप्यनुयुज्जीत—V. L. (a) इतरानपि युज्जीत, (b) हीनानप्यनुयुज्जीत

P. 1033, l. 1—for प्रविष्टास्तत्काले read प्रतिष्ठानकाले as in S.

P. 1033, l. 1—for स्तमेति तदेमानपि read का गतिस्तदेमानपि as in S.

P. 1033, l. 3—for सद्भावे read मभावे as in S.

VERSE CCLX

खानकान्—V. L. खातकान् (Mitākṣarā 2. 152).

अन्यांश्च—V. L. शून्यांश्च (Vivādaratnākara, p. 209).

वनचारिणः—V. L. (a) वनगोचरान् (Mitākṣarā 2. 152), (b)

शतशस्तथा

P. 1033, l. 8—for गोपानां read गोपा

P. 1034, l. 2—for यात्रा read पात्र as in S.; I. O. reads

अत्र

VERSE CCLXII

सीमासेतुविनिर्ययः—V. L. (a) समासेषु तु निर्ययम्; (b) सीमासन्धि-
विनिर्ययः (Vivādachintāmaṇi, p. 62).

विनिर्ययः—V. L. विनिश्चयः

P. 1034, l. 5—for कस्त्वं read कस्तन्न as in S.

VERSE CCLXIII

P. 1035, l. 1—Before परकीय add पूर्वैभ्यः सामन्तानामधिको दण्डः ।
पृथक् पृथगित्यनुवादः । उक्तत्वान्यायस्य । चेन्नादिप्रातिवेश्या अवश्यं ज्ञातारो
भवन्ति । प्रत्यसौ भरतः (?) । पूर्वां दण्डमहत्त्वम् । सामन्तानान्तु, as in S.

P. 1035, l. 2—for विशतः read द्विशतः

VERSE CCLXIV

तडाग—V. L. तडाक (Aparārka, p. 766).

हरन्—V. L. वहन् (Vivādaratnākara, p. 222).

P. 1035, l. 3—for सीमाग्रहण read विभीषाग्रहणं as in I. O.

—— l. 4—for पूर्वत्र...विव read पूर्वे एनां सङ्ख्यामविव

—— l. 5—after लेखयामि add राज्ञा दण्डयामि as in S.

VERSE CCLXV

एकेषां—V. L. एतेषां (Rāmachandra).

प्रदिशेत्—V. L. प्रविशेत् (Aparārka, p. 764).

P. 1036, l. 1—for समकदौ read समोपकारौ as in I. O.

—— l. 3—for विवादिमत्तां read विवादिग्रामस्तां as in S.

After 265 some Mss. have the following additional verse :—

ध्वजिनी मत्सिनी चैव निधानी भयवर्जिता ।

राजशासननीता च सीमापञ्चविधा स्मृता ॥

VERSE CCLXVI

P. 1036, l. 5—for संक्षेपो read पदसंक्षेपो

—— l. 6—for योगाद्वस्न read योगाद्

—— l. 6—for वार्थो read वागर्थो

—— l. 7—for तथा च यथा read तथा च

—— „ —for र्थप्रति read र्थप्रति

—— „ —for रंभो read रम्भे

—— l. 7—for समार्थितः read समर्थितम्



VERSE CCLXVII

व्यर्धशतं—V. L. (a) व्यर्धशतं (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 295 and Mitākṣarā 2. 207); (b) सार्धशतं, (c) वर्धशतं (d) व्यर्ध शतं (Vivādaratnākara, p. 250).

P. 1036, l. 8—for भाषणं तेन भणितो यो read भाषणान् मर्मणि तोदः as in S.

P. 1036, l. 9—for अक्षदुःखोत्पादनं read असत उपन्यसनं as in I. O.

— „ —After गर्भिणीति add पातकोपपातकयोर्भोजनमिति as in N and S.

P. 1036, l. 10—After साहस add उपपातकयुक्ते तु दाप्यः प्रथम-साहसम् as in S.

P. 1036, l. 10—for तस्य च वधताडने जि read शूद्रस्य वधः ताडनजि as in S.

P. 1036, l. 10—for णादि सर्वं read णादिरूपः as in S.

— „ —for भेदा वेदितव्याः read भेदाद् वेदितव्यः as in S.

VERSE CCLXVIII

पञ्चाशद्वाह्यो—V. L. विप्रःपञ्चाशतं (Vivādaratnākara, p. 251 and Vivādachintāmaṇi, p. 71).

वैश्ये स्थादर्ध—V. L. (a) वैश्यस्याप्यर्ध (Aparārka, p. 808); (b) वैश्यस्य त्वर्ध (Vivādaratnākara, p. 251).

शूद्रे द्वादशको दमः—V. L. शूद्रे तु द्वादशो दमः (Vivādaratnākara, p. 251).

P. 1037, l. 1—for पततीयादन्यः । तत्र दण्डा read पतनीयादन्यत्र सूत्रे दण्डा as in S.

P. 1037, l. 2—for दण्डविष read विष as in S.



VERSE CCLXIX

P. 1037, l. 5—for मत्र read मतन्त्रम् ।

— „ —for द्वादशव्यतिक्रमे परस्पराक्रोशे दण्डः read व्यतिक्रमे परस्पराक्रोशे द्वादशदण्डः as in S.

P. 1037, l. 5—for स च read साम्ये च as in S.

— „ —for चित्त read वित्त as in S.

— l. 6—for सर्वगुणानि read सर्वगुणेति as in S.

After 269 some Mss. have the following additional verses.—

चित्रचित्रियवत्कार्यो दण्डो राजन्यवैश्ययोः ।

वैश्यचित्रिययोः शूद्रे विप्रे यः चित्रशूद्रयोः ॥

समुत्कर्षापकर्षास्तु (भ्यां V. L.) विप्रदण्डस्य कल्पना ।

राजन्यवैश्यशूद्राणां धनवर्जमितिस्थितिः ॥

VERSE CCLXX

द्विजातीस्तु—V. L. (a) द्विजातिं तु (Aparārka, p. 809), (b) द्विजातिं च

चिपेत्—V. L. चिपन् (Vivādaratnākara, p. 253).

P. 1038, l. 1—for क्रोशन read क्रोशन् as in L. O.

— l. 2—for ब्राह्मण read ब्रह्मण

— „ —for धनं read धानं

— „ —for तेन read तेषि as in S.

VERSE CCLXXI

ग्रहं—V. L. ग्रहान् (Aparārka, p. 809).

स्वेषां—V. L. तेषां (Vivādaratnākara, p. 253).

निक्षेप्यो—V. L. (a) निक्षेयो (Vivādaratnākara, p. 253), (b)

निःक्षेप्यो, (c) निश्चयो (d) निधेयो, (e) निधेयो

P. 1038, l. 4—for एवमन्यदपि read एवं तान्यपि as in L. O.



VERSE CCLXXII

विप्राणा—V. L. द्विजाना Aparārka, p. 809 (Vivādaratnākara, p. 254).

दर्पण—V. L. धर्मेण

P. 1039, l. 1—for अथ read अयं as in S.

— l. 2—After यस्तु add प्रणयात् as in S.

— l. 3—Before न दोषः add तस्य as in S.

VERSE CCLXXIII

द्रुवन्—V. L. वदन् (Vivādaratnākara, p. 254).

P. 1039, l. 5—for सत्येन read सत्ये च

— l. 6—for जात्यं read जात्या

— „ —for बान्धवतया some Mss. read वा हेतया

VERSE CCLXXIV

कार्पाण्यावरम्—V. L. कार्पाणं वरम् (Aparārka, p. 806).

P. 1040, l. 1—for विपटं read चिपिटनासः as in I. O.

— „ —for नासत्ये read सत्ये as in S.

— l. 2—for पणोवरो read वणावरो as in S.

— „ —omit युक्ते, not in S.

— „ —for पणो read पणा as in S.

VERSE CCLXXV

तनयं—V. L. श्वशुरं (Mitākṣarā 2. 204, and Parāsharamādhava, Vyavahāra p. 295).

P. 1040, l. 7—for गृह्ये read ग्रह्ये as in I. O.

— l. 8—for पुत्रं read तु पुत्रं यथा as in S.

— l. 11—for दचार read दाचार as in I. O.

VERSE CCLXXVI

तु दण्डः—V. L. च दण्डः

चन्त्रिये त्वेव मध्यमः—V. L. (a) चन्त्रिये चैव मध्यमः (b) चन्त्रियेस्त्वेव मध्यमः (Vivādaratnākara, p. 255).

VERSE CCLXXVII

योरेव—V. L. योस्त्वेव (Vivādaratnākara, p. 256).

स्वजातिं—V. L. सजातिं

विनिश्चयः—V. L. विनिर्णयः

VERSE CCLXXVIII

P. 1042, l. 4—for पूर्व read पूर्वोत्तर

VERSE CCLXXIX

हिंस्याच्चेच्छेष्टमन्यजः—V. L. (a) हिंस्याच्छेयांसमन्यजः (Vivādaratnākara, p. 268, Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 288, Aparārka, p. 813, Vyavahāramayūkha p. 100, Mitākṣarā 2. 215 and Vivādachintāmaṇi, p. 75); (b) हिंस्याच्चेद्वकृष्टजः

P. 1042, l. 6—for तदङ्गस्य read तदङ्गमस्य

— „—for हिंसावा read हिंसा च

— „—After निपातनं add न

VERSE CCLXXXI

अवकृष्टजः—V. L. अपकृष्टजः

स्फिचं—V. L. स्फिचौ (Aparārka, p. 814).

वास्यावकर्तयेत्—V. L. वास्य प्रकर्तयेत् (Vivādaratnākara, p. 268).

P. 1043, l. 6—for स्याव read श्राव as in S.

— l. 7—for जन्मचोत्कर्ष उपात्त read जन्मावकर्ष उपात्तः । त as in S.

P. 1043 l. 8—for अङ्कविधौ च read अङ्कविधौ न as in S.

— l. 9—for अयन्तुदण्डः ख्यापनार्थः read तु दण्डख्यापनार्थम् as in S.

— „ —for भिद्यु read भियु as in S.

VERSE CCLXXXII

अवमूत्रयतो मेढूम्—V. L. अवमूत्रयतः शिरनम्

अवशर्धयतो—V. L. पुरीषकरणे (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 288).

P. 1044, l. 1—for मुखं वा read मुखं च

— „ —for मनयति read मानयति

— l. 2—for त्वादेतस्यापि read त्वादेतस्यपि

— „ —for श्रावस्य read स्नावः तस्य

VERSE CCLXXXIII

हस्तौ—V. L. इस्तं

दादिकार्या—V. L. नासिकार्या

वृषणेषु च—V. L. वृषणेषु तु

P. 1044, l. 6—for विवरणं विचार्यते read विचारणं निवार्यते

VERSE CCLXXXIV

च दर्शकः—V. L. प्रवर्तकः (Vivādaratnākara, p. 264).

चषट्—V. L. शतं (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 284).

मांसभेत्ता—V. L. (a) मांसभेदी ; (b) मांसभेदी ; (c) मांसभेदे

(d) मांसच्छेदे

P. 1045, l. 1—for मन्यते read उच्यते as in S.

— l. 5—for ऽस्यां read ऽस्थनां as in S.

— l. 6—for समर्थ read अर्थ



VERSE CCLXXXV

P. 1045, ll. 9-10 omit तथा.....दुष्प्रापतां, not in I. O.

VERSE CCLXXXVI

प्रहृते—V. L. प्रकृते (Vivādaratnākara, p. 266).

महद्दुःख—V. L. भवेद्दुःख

P. 1046, l. 1—for स्यश्लो read सस्य श्लो

— l. 3—for दण्डमर्हति read दण्डः । महति

— —for महद्गणा read महद्ग्रहणा as in S.

— l. 4—for प्रमादस्तु read प्रमादतस्तु

VERSE CCLXXXVII

अङ्गावपीडनायां—V. L. अङ्गावपीडनानां

प्राण—V. L. वाण (Kullūka).

समुत्थानव्ययं—V. L. संवर्धनव्ययं

P. 1046, l. 6—for ग्रहणसंवन्धि read ग्रहणं सन्धि as in S.

— „ —for याचितधने read यावता धनेन as in S.

— l. 7—for दाप्यः read दातव्यः

— „ —From एवं to अथवा omitted in I. O.

— l. 9—for यत्किञ्चिद्भूयते read यत्किञ्चिद्भूयत

VERSE CCLXXXVIII

द्रव्याणि हिंस्याद्यो यस्य—V. L. यो यस्य हिंस्याद् द्रव्याणि (Mitākṣarā 2. 264).

द्रव्याणि—V. L. द्रव्यादि

राज्ञे—V. L. राज्ञे

P. 1047, l. 2—for जमा read जम

— l. 2—for विशेषेणाहिंसता read विशेषेण हिंसनाव

VERSE CCLXXXIX

लोष्ट—V. L. (a) लोष्ट (Vivādaratnākara, p. 352); (b) लोष्ट (Aparārka, p. 820).

VERSE CCXC

यानस्य चैव यातुश्च—V. L. यानस्यैव हि यन्तुश्च (Vivādaratnākara, p. 280).

यातुश्च—V. L. (a) गन्तुश्च (b) यन्तुश्च

P. 1048, l. 4—for स्वामियान read स्वामिपाल as in S.

— l. 5—Before अतिक्रम्यं add अतिवर्तनानि

VERSE CCXCI—CCXCII

द्विजनास्ये भग्नयुगे—V. L. द्विजने नष्टे युगे भग्ने (Parāsharmādhava Vyavahāra, p. 290).

द्वेदने चैव—V. L. भेदने चैव (do.)

द्विजनास्ये—V. L. द्विजनास्ये (Aparārka, p. 863 and Mitākṣarā 2. 299).

अक्षभङ्गे—V. L. अक्षाभावे (Aparārka, p. 863).

चक्रभङ्गे—V. L. चक्राभावे (do.).

P. 1049, l. 4—for यानाङ्गत्वे read यानङ्गच्छत् as in S.

P. 1049, l. 4—for दृश्यमानस्य read दृश्यमानं as in S.

— l. 5—for रक्षितुं read रक्षतु as in S.

— „ —for गामिन्येन read गामिन्येव

— l. 7—for काष्ठ read काष्ठं

— „ —for वध्नि read वध्न

— l. 8—Before अविधेयेषु add इतिकरणो भाषाप्रसिद्धतर्द्ध-
शब्दोच्चारणार्थो न त्वयमेव शब्दः प्रयोक्तव्यः, as in F. N.

VERSE CCXCII

युग्मं—V. L. युग्मं

द्विशतं दमम्—V. L. द्विशतो दमः

P. 1050, l. 1—for सहसापवर्तते read यानमपवर्तते as in N and S.

— „ —for द्गवां च read द्गतं च as in N.

— l. 2—for त्यादि read त्यादिना

— l. 3—for इति विवक्षति read इति विवक्षितम् as in S.

— l. 4—for च्यते read च्येत

VERSE CCXCV

अविचारितः—V. L. (a) विचारितः ; (b) विचरितः, (c) विचलितः

P. 1051, l. 1—for शुभिरयुक्तै read शुभिरथयुक्तै as in I. O.

— l. 3—for पार्श्वकीयाः read पार्श्वकीयान्

VERSE CCXCVI

प्राणवत्सु—V. L. प्राणवत्सु (Vivādaratnākara, p. 283).

किस्त्रिव—V. L. किस्त्रिवी (Vyavahāramayūkha, p. 109, Mitāk-sara 2. 300).

महत्स्वर्ध—V. L. महत्पूर्व (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 291).

P. 1051, l. 5—for वादण्डः read दण्डः as in I. O.

— l. 7—for मुख्याना read मनुष्याणा as in S.

— l. 8—for क्रमः read क्रमः

— l. 9—for यद्यद्ये.....भिप्रेता read यद्यन्ये चौरवदण्डा नाभि-प्रेता as in S.

— l. 9—for द्वेधो read द्वधो

— l. 10—for कस्य read न्यस्य

P. 1051, l. 10—for दण्डः स्यादिति व्यतिदेशो युक्तः read दण्डस्यातिदेशोऽयुक्तः as in N and S.

— l. 11—for रोधिनेव read रोधेनेव

— „ —for गुणितः read गुणतः

— l. 12—for यद्वर्मे read यच्चर्ध as in S.

VERSE CCXCVII

हिंसायां—V. L. (a) हिंसने (Vyavahāramayūkha, p. 109);
(b) हिंसतो (Parāsharamādhava, Vyavahāra, p. 291).

P. 1052, l. 1—for अपठित read अपचित as in L. O.

— l. 2—Before अशुभाः add शुभा मृगाः पृषतादयः आकारतो
लक्षयतश्च पक्षिणो हंसशुकसारिकादयः as in F. N.

P. 1052, l. 5—for च्छेदोनं read च्छेदनं as in S.

VERSE CCXCVIII

पञ्चमाषिकः—V. L. पञ्चमाषकः (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 291, Mitākṣarā, 2. 300).

माषिकस्तु—V. L. (a) माषकस्तु (Vivādaratnākara, p. 283);
(b) मासिकस्तु

P. 1052, l. 7—for नापि बाधकं read न बाधितं as in S.

VERSE CCXCIX

ताड्याः स्यू—V. L. ताड्यास्ते (Samskāramayūkha, p. 52).

भार्या पुत्रश्च दासश्च प्रेज्यो—V. L. भार्या शिष्यश्च दासश्च पुत्रो

P. 1053, l. 1—नीतिभ्रंशः omitted in L. O.

— l. 3—for यस्य read यायस्य as in S.

— l. 3—for विधिः पर read विधिपर

— 6—for शिष्या read शेका



VERSE CCC

कथंचन—V. L. कदाचन (Vivādaratnākara, p. 271).

प्राप्तः स्याच्चौर—V. L. (a) चोरस्याप्नोति, (Smṛtichandrika Samskāra, p. 142); (b) प्राप्तः स्याद् घोर (Samskāramayūkha p. 52).

P. 1053, l. 7—after ताडन add देश as in S.

— „ —for मनेन read मन्येन as in S.

— „ —for चादि read क्ष्यादि as in S.

— „ —for न प्राप्नोति I. O. reads प्राप्नोति

VERSE CCCI

विधिं दण्डविनिर्णये—V. L. त्रिविधं दण्डनिर्णयम्

P. 1054, l. 1—for नयदाने read वादपदे as in S.

— l. 2—for विवक्षितार्थः read निवितार्थः

— „ —for धेय read धेये

VERSE CCCII

निग्रहादस्य—V. L. निग्रहाच्चास्य

P. 1054, l. 3—for तिपत्यर्थं read वृत्त्यर्थं as in S.

— l. 5—for सर्वार्थं read सार्थं

VERSE CCCIII

हि वर्धते—V. L. विवर्धते (Vivādaratnākara, p. 293).

P. 1055, l. 1—for कतु read कतु

— l. 2—for नेनाहरहः read नेनाह । अहरहः as in S.

— ll. 2—3—for क्षिणया वत्सगवा read क्षिणावत् सा च गवा
as in S.

— l. 3—omit भिर्येपुण्यन्ते.....हरन्ति, not in S.

VERSE CCCIV

- राज्ञो भवति—V. L. भवत्यस्य हि (Vivādachintāmaṇi, p. 263).
भवत्यस्य V. L. भवत्येव (Parāsharamādhava Āchāra, p. 397).
P. 1055, l. 4—for स्वकृताकृतधर्म read वनवासिभिरच कृतात् धर्म
—— „ —for प्रछ read प्रच्छ
—— l. 5—for कृत्तद्राज्ञः read कृताद्राज्ञः
—— „ —for मुच्यन्ते read मुप्यन्ते
—— l. 6—for तानि गृह्णन्ति read ताननिगृह्णन्तः
—— „ —for रक्षाणां read रक्ष्याणां
—— l. 7—for नृपति read च भृति
—— „ —for गमयुक्तम् read गवचनमयुक्तम्
P. 1055, „ —for परिव्रजि read व्रजि

VERSE CCCV

- ददाति—V. L. जुहोति (Vīramitrodaya, Rājanīti, p. 254).
रक्षणात्—V. L. पालनात् (which is wrongly attributed by Hopkins to Medhātithi).

- P. 1055, l. 9—omit च after तस्य
—— l. 11—for ग्रह read ग्रव

VERSE CCCVI

- P. 1056, l. 1—for वातयेत् read घातयन्

VERSE CCCVII

- प्रतिभागं—V. L. (a) भूतिभोगं (Govindarāja); (b) सूतिभागं;
(c) प्रीतिभोगं (Nandana); (d) प्रतिभोगं (Nārāyaṇa and Vīrami-
trodaya, Rājanīti, p. 255); (e) प्रीतिं भोगं (Parāsharamādhava
Āchāra, p. 397).

VERSE CCCVIII

अरक्षितारमत्तारं—V. L. अरक्षितारं राजानं Kullūka.

हारकम्—V. L. हारिणम्

P. 1057, l. 1—for पूर्वस्य.....वादः S. reads श्लोकोऽयं निन्दार्थवादः

— „ —for आत्तो read अत्तो

VERSE CCCIX

अनवेक्षितः—V. L. अनपेक्षितः (Kullūka).

विप्रलुम्पकम्—V. L. विप्रलोपकम् (Nandana and Vīramitrodaya, Rājanīti, p. 255).

नृपं विद्यादधोगतिम्—V. L. (a) नृपं गच्छेदधोगतिम्; (b) असस्यं च नृपं त्यजेत्;

P. 1057, ll. 5—6—for धाना some Mss. read धना

— l. 5—for धर्मो...निश्चयः read धर्मो नास्ति विपरीताभिनिवेशः as in S.

VERSE CCCX

निगृहीयात्—V. L. निगृहीत (Vivādaratnākara, p. 630).

बन्धेन—V. L. दण्डेन

P. 1058, l. 1—for विध read विधि as in S.

— „ —for धार्मिकं read धार्मिकः as in S.

— „ —for च्चौर read च्चौरः as in S.

— l. 2—for चरणं read धरणं as in S.

— „ —for दिभिःस्वा read दिभिरस्वा as in S.

— l. 3—for पर्यन्त read पर्यन्तः

VERSE CCCXI

पूज्यन्ते—V. L. पूज्यन्ते (Vivādaratnākara, p. 648).

सङ्ग्रहेण—V. L. रक्षणेन

ज्याभिः—V. L. ज्यातः (Vivādaratnākara, p. 648).

P. 1058, l. 1—for पूर्वोक्त read पूर्वोक्तः

— l. 6—for पूर्ववद्विषा read पूयन्ते विषा as in S.

— „ —for अपरो.....ष्टकं read अथ वा as in S.

VERSE CCCXII

कुर्वता—V. L. कुर्वतां

P. 1058, l. 8—for प्रत्यर्था ज्ञाति read प्रत्यर्थिज्ञाति as in N and S.

— ll. 8—9—for द्रव्यमानं.....च्छेद्रा read द्रव्यमाने यदि तस्मिन् तन्माता वा राजानं क्षिपेत् कुत्सयेत् अभिशपेद्वा as in I. O.

P. 1058, l. 9—for क्षमायां read क्षमा कार्या as in I. O. and S.

— „ —for विष्णामेव read विष्णामपि । एव as in S.

— „ —for विधमेवा read विधेः फलमेवा as in S.

VERSE CCCXIII

यः—V. L. यत्

यस्त्वैश्वर्यात्—V. L. (a) यस्त्वैश्वर्यात्, (b) यश्चैश्वर्यात्

P. 1059, l. 2—for कण्ड्वादित्यं I. O. read कण्ड्वादित्वाद्यक्

VERSE CCCXIV

शक्तिं चोभयतस्तीक्ष्णां—V. L. (a) अग्निं चोभयतस्तीक्ष्णं (Aparārka, p. 1078);—(b) असिं चोभयतस्तीक्ष्णं (Mitākṣarā, 2. 267).

लघुदं—V. L. लघुदं (Mitākṣarā, 2. 267).

धीमता—V. L. धावता (noted by Medhātithi, also Aparārka, p. 1078).

P. 1059, ll. 4—5 for न वेदुः.....दण्ड read न चेदमागमनपरं विधिशास्त्रं दण्डविधिवात् as in N.



P. 1059, l. 5—for स्तेनः स्यात् read स्तेनस्यातः

— „ —for निर्यय read विनिर्यय

— l. 6—for वीर्यवता read धैर्यवता as in S.

— l. 7—for मयेष read मयेय as in N.

VERSE CCCXV

वापि—V. L. वाथ

After 315 some Mss. have the following additional verse—

गृहीत्वा मुसलं राजा सकृद्व्यात्तु तं स्वयम् ।

वधेन शुध्यते(ति) स्तेनो ब्राह्मणस्तपसैव वा ॥

(Which is verse 100 of Adh. XI).

VERSE CCCXVI

P. 1060, ll. 6—7—for च वचनमनित्यवच्छ्रुतं पाक्षिकं युक्तं read न च नित्यवच्छ्रुतस्य पाक्षिकत्वं युक्तं as in S.

P. 1060, l. 8 for चेज्याद्यतोऽन्नन read चेद् घातयते राजा घ्नन् as in S.

— „ —for कल्पो read विकल्पो as in S.

P. 6. 1060, l. 9 to P. 1061, l. 1—for इवत्तु.....विधौ read इदन्तु शासनविमोक्षवचनं न नाम प्रतिषिद्धं सति विधौ

P. 1061, l. 2—for वृत्तिः read प्रवृत्तिः

— l. 3—for प्रदाने read प्रधाने as in S.

— l. 4—for रन्तरङ्ग read रङ्ग

— l. 5—for विधि read वैध as in S.

— „ —for मुख्येन read श्येन as in S.

— l. 7 for पिधानेऽहं वि read पि प्रधानेऽङ्गो वि as in S.

— „ —for विधिः लक्ष read विधिलक्ष

— „ —for स्वरूपकार्यलौ read स्वरूपस्य कार्यस्य च लौ

P. 1061, l. 8—for षाडश read षोडशि

— l. 8—for बुद्धि read शुद्धि as in I. O.

— l. 10—for मुंच read मुंचे as in S.

— „ —After चैन सः add एवं as in S.

— „ —for लवं शास्त्र read लक्ष्यं शस्त्र as in S.

P. 1061, „ —for शरीरो read न शरीरो as in S.

— l. 11—for न राजा read राजा as in S.

VERSE CCCXVII

P. 1061, l. 12—for निरस्य read निरस्यति as in S.

— l. 13—for त्वे एवं read त्वेवं.

— „ —for न पुन read पुन as in S.

— l. 14—for त्पाद्य read त्पद्य

— l. 15—for याज्ये याजकः read याज्यो याजके

— l. 16—for विधिसुप read विधिमप

— l. 17—for सर्वेष्वन्यत्र...द्विरतो read सर्वेष्वन्यत्र विधिरस्तीति न
बुद्धिरतो

Both N. and S. read verse 317 and its *Bhāṣya* after 318;
but add—अयं श्लोको राजमिहित्यस्मात्पूर्वं लेखनीयः

VERSE CCCXVIII

राजमिर्धृत—V. L. (a) राजनिर्धृत, (b) राजनिर्धृत, (c) राजनिर्धृत,
(d) राजमिःकृत (Kullūka).

धृतद—V. L. कृतद

P. 1062, l. 1—for ग्रहणे read ग्रहेण

— l. 1—for वृत्तो read धृतो

— l. 3—for सत्री धार्मिकस्तद्वदस read सन्तो धार्मिकास्तद्वत् । अस
as in S.



P. 1062, l. 4—for विना स्थित read विनाशित as in S.

— „ —for हयानुग्र read हयानुग्र as in S.

— l. 8—for शरी read शारी

— „ —for या राज्ञः read सा राज्ञः as in S.

— l. 6—for शक्यते read न शक्यते

— „ —for हिंसा read हि सा as in S.

— „ —for तत्त्वं read तच्च as in S.

— l. 8—After हिंसायां add न

— „ —for न रक्षानिवृत्तिः read रक्षार्थं नासिद्धिः as in S.

P. 1063, l. 1—for तन्निबोधनादपि read तन्निरोधनादिनापि

— „ —for तानि गृहीत्वा तान्दष्ट्वा भयादनेन read तान्निगृही-
तान्दष्ट्वा भयादन्येन as in S.

P. 1063, l. 2—for दुःखमपितुं read दुःखयितुं as in S.

— „ —Omit तस्मादि...प्रवर्तन्ते

— l. 3—for विधिरचेदल्पेष्वे read विधिरच दण्ड्येष्वे

— l. 5—for बन्धनदण्डेन read च धनदण्डेन as in I. O.

VERSE CCCXIX

रज्जुं घटं—V. L. रज्जुघटं (Pārijāta quoted by Vivādaratnā-
kara, p. 328 and Vivādachintāmaṇi, Calcutta, p. 90).

P. 1063, l. 7—for स्थावस्थानं read स्थानं

— l. 8—for नृप read नृप

VERSE CCCXX

हरतोऽभ्यधिकं—V. L. (a) हरतोऽभ्यधिके (b) हरतो ह्यधिके (Vivā-
daratnākara, p. 322).

शेषेऽप्ये—V. L. (a) शेषेऽप्ये (Mitākṣarā 2. 275) (b) शेषे त्वे
(noted by Bālabhāṭṭī 2. 275).

P. 1063, l. 9—for द्वाविंशद्वाविंश read द्वाविंश

P. 1064, l. 1—for प्राकृत...त read प्राकृत एकादशगुणो दण्डः as in S.

VERSE CCCXXI.

तथा धरिममे—V. L. तुलाधरिममे

उत्तमानां—V. L. महर्षाणां

P. 1064, l. 6—Omit केचिदाहुः

—— l. 6—for यथा read यया

—— „— for श्रुत read शत

—— „— for नन्वत्रविशेषो हन्तुरस्ति read नन्वत्र विशेषे हेतुरस्ति as
in S.

—— ll. 7—8—Omit नन्वत्र.....न्यस्मिन्

VERSE CCCXXII

इष्यते—V. L. उच्यते

त्वेकादशगुणं—V. L. (a) त्रैकादशगुणं (b) त्रैकादशगुणं (c)
त्वेकादशगुणं

P. 1065, l. 1—for पहर्त read पहर्तमेव

—— l. 2—for निमेयम् read त्रिनिमेयम्

VERSE CCCXXIII

मुख्यानां चैव रत्नानां—V. L. रत्नानां चैव सर्वेषां (Mitākṣarā 2. 275).

P. 1065, l. 3—for भाग्यतः स read भाग्यसं as in I. O.

—— ll. 5—6—for सर्वत्रार्हल्यर्थो read सर्वत्रावध्यर्थो as in I. O.



VERSE CCCXXIV

दण्डं राजा प्रकल्पयेत्—V. L. राजा दण्डं प्रकल्पयेत् (Vivādaratnākara, p. 319).

P. 1066, l. 3—for खड्गशत्रो read खड्गःशत्रो

—— l. 6—for नयनान्तर read न तन्त्रान्तर as in L. O.

—— l. 8—for राज्ञा कर्तव्यं कार्या एव read न राज्ञा कृन्तव्या कार्यं च

—— „ for व्यपेक्षा read व्यपेक्ष्य

VERSE CCCXXV

खुरिकायाश्च—V. L. (a) स्थूरिकायाश्च (b) खुरिकायाश्च, (c) स्फुरिकायाश्च (Vivādaratnākara, p. 319) (d) नासिकायाश्च, (e) हूरिकायाश्च, (f) तूलिकायाश्च (Vivādachintāmaṇi, p. 135).

P. 1066, l. 11—for संततं read संभवति as in S.

—— l. 12—omit तेन

—— „ —for गोरचै चै read गोरथ चै

—— l. 13—for वाहानामुप read वाहनेप

—— „ —for अवश्यमयं read प्रतोदेन वाहने एवायं as in S.

—— l. 14—for या पालोर्ध read यां पालोऽन्यो वा भिन्दन्नर्ध
as in S.

VERSE CCCXXVI

गोमयस्य V. L.—आयसस्य

P. 1067, l. 1—for पादिति read पादि

VERSE CCCXXVII

वैदल V. L.—वैणव (Vivādaratnākara, p. 326).

VERSE CCCXXIX

अन्येषां चैव—V. L. अन्येषामेव (Vivādaratnākara, p. 326).

मादीनामद्यानां—V. L. मादीनां मद्यानां (do.)

पकान्नानां च—V. L. (a) पकानां चैव (Vivādaratnākara, p. 326)

(b) फलानां चैव (Vivādachintāmaṇi, p. 140).

तन्मूल्याद्द्विगुणो—V. L. हरणे द्विगुणो (Vivādachintāmaṇi p. 140).

VERSE CCCXXX

पुष्पेषु V. L.—लतासु

अन्नेषु—V. L. अल्पेषु (Govindarāja and Vivādaratnākara, p. 325).

कृष्णलः—V. L. कृष्णलाः (Vivādaratnākara, p. 325).

P. 1068, l. 2—for रिपवनाथ च धान्यं क्षेत्रेष्वेव read रिपवस्य च धान्येष्वेव

P. 1068, l. 2—for रूपयोः read रूपस्य

— l. 3—for तत्त्वं read तत्तु

— l. 4—for नाद्रव्य read नानाद्रव्य

VERSE CCCXXXI

दण्डः—V. L. दण्ड्यः

P. 1069, l. 2—for प्रकारवादिको read प्रकारत्वादधिको as in S.

— l. 3—Before येन add अथवा निरन्वयः as in S.

— „ —After दण्ड्यः add अथवा अनारक्षं निरन्वयम् । सति तु रक्षके उभयापराधादयो दण्डः as in S.

VERSE CCCXXXII

हत्वाऽपच्ययते च यत्—V. L. (a) कृत्वाऽपच्ययते च यत् (Vivādaratnākara, p. 286 and noted by Bālabhaddi, 2. 266), (b) हत्वापहूयते च यत् (c) कृत्वा चापहूयुतो भयात् (Smṛtisāroddhāra, p. 329), (d) कृत्वा चापहू-
ते च यः, (e) कृत्वाऽपहूयते च यत् (noted by Bālabhaddi, 2. 266),



(f) कृत्वाचापहुते च यत्, (g) कृत्वाऽपन्ययते यदि (Parāsharamādhava, Vyavahāra, p. 298), (h) कृत्वा यन्निहुते भयात् (Mitākṣarā, 2. 266).

P. 1069, l. 6—for मात्रमृणा read मात्र स्तेयमृणा as in S.

— l. 7—for वस्तुत्पाटना read वस्त्रोत्पाटना

— l. 9—for कृतं युक्तं read कृतमयुक्तं

— l. 10—for सन्विच्छेदसत्य read सन्विच्छेदेऽसत्य

— „ —for एवं वक्ष्यते read स्तेय एवावक्ष्यत् as in S.

VERSE CCCXXXIII

यस्त्वेतानि—V. L. यश्चेतानि (Vivādachintāmaṇi, p. 140).

तं शतं—V. L. तमाद्यं—(noted by Medhātithi.)

P. 1070, l. 2—after दत्तं add किञ्चिद् द्विगुणीक्रियते

— „ —for क्षीरगृह read क्षीरं घृत as in S.

— l. 3—for अग्नीन्धन read अग्निगृहात् as in N and S.

— l. 5—for रूपक read रूपकसंस्थानुपकल् as in S.

— l. 7—Before ताव add स

— l. 9—for भूते add हते as in S.

VERSE CCCXXXIV

P. 1070, l. 11—for सन्विच्छे read सन्विच्छे as in S.

— „ —for पेष read पेषः

— „ —for क्रियामसावाभितो read क्रियामात्राभितो

— l. 12—for स्तेन read स्तेनः

— l. 13—for प्रसिद्धि read सन्धि

VERSE CCCXXXV

राज्ञो—V. L. राज्ञा

यः स्वधर्मे न—V. L. (a) यो न स्वधर्मे, (b) यस्वधर्मेण (Parā-sharamādhava Āchāra, p. 391).

P. 1071, l. 2—for शरीरं read शरीरमित्युक्तम् as in I. O.

— ll. 2—3—for धनदानादि.....दण्ड्यः, read विवक्षितम-धर्मात्मकतया यः स्वधर्मे नानुतिष्ठति स पापी दण्ड्यः as in I. O.

— l. 3—for र्मे स्वकान्यो यः read र्मास्वकाद् यः as in N.

— „ —for ज्ञनु read ज्ञानु

— „ —for दण्डः read दण्ड्यः

VERSE CCCXXXVI

राजा भवेद्दण्ड्यः—V. L. राज्ञा भवेद्दण्डः (Vivādaratnākara, p. 654).

P. 1071, l. 4—for यो नातिगुण read यो नातिस्वजातिगुण as in I. O.

— „ —for त्सह read त्सहस्र

— l. 5—Before दण्डस्य add दृष्टार्थत्वात् as in S.

— „ After दण्डस्य add तस्य

VERSE CCCXXXVII

षोडशैव तु—V. L. षोडशैव च

P. 1072, l. 3—for योरपि कृत read योरधिकृतः

— l. 5—Before रक्षा add यतो

— l. 6—for स्यापराधः read स्य कोपराधः as in I. O.

— l. 7—for लोकी यत्तत्रतो read लोकविश्रुतो as in I. O.



P. 1072, ll. 8-9—for तुल्य...विषयस्या read तुल्यबलस्य विकल्पस्य परविषयाश्रयस्या as in I. O.

— l. 9—for द्विजगुण read द्विगुण as in S.

— l. 11—for अर्थवा...लंघन इति read अर्थवत्त्वात् विध्यवगतिः आधिक्यविधौ लघीयसीति as in I. O.

VERSE CCCXXXVIII

तदोपगुणविद्धि सः—V. L. (a) तदोपगुणवेदिनः (Mitākṣarā 2. 275)

(b) तदोपगुणविद्धिषः (noted, but rejected, by Bālabhaṭṭi 2. 275),

(c) तदानुगुणवेदिनः (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 302).

अष्टापाद्यं—V. L. अष्टगुणं (Parāsharamādhava Vyavahāra 302).

पूर्णं वापि—V. L. पूर्णं चापि (do.)

VERSE CCCXXXIX

मूलफलं—V. L. फलं मूलं (Vidhānapārijāta II, p. 252).

P. 1073, l. 3—for दर्शनात्स्वाप read दर्शनाच्चाप as in S.

— „ —for दोषा read दार्ढ्य as in S.

— l. 5—for स्यादित्यादि read स्यादिति यदि

VERSE CCCXL

ध्यापनेन—V. L. ध्यापनाद् (Mitākṣarā 2. 113).

P. 1074, l. 2—for स्तेनं प्रतिगृह्णतां read तेन प्रतिग्रहग्रीया दायादि गृह्यते

— „ —After वैव add वृत्तिः

— „ —for चोरं read चोरधनं as in S.

VERSE CCCXLI

दण्डं—V. L. देयं (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 304).

VERSE CCCXLII

असन्दितानां—V. L. (a) असंहितानां, (b) असंघितानां (Vivādaratnākara, p. 319).

सन्दाता—V. L. (a) संघाता (Vivādaratnākara, p. 319), (b) सन्ध्याता

संहितानां—V. L. (a) संघितानां, (b) संहितानां

च मोक्षकः—V. L. विमोक्षकः (Vivādaratnākara, p. 319 and Vivādachintāmaṇi (p. 136).

हर्ता—V. L. हन्ता (Vivādachintāmaṇi (p. 136).

P. 1075, l. 3—for सजात read संजने as in S.

— l. 5—for दासामु read दासानामु as in S.

— l. 6—for राजेक्षया read तत्र राजेक्षया as in S.

— l. 7—for येत्तरा read येन्नरा as in S.

— l. 9—for यद्यप्ययु read रथयु as in S.

— l. 10—for स च read तच्च as in S.

— „ —for शिल्पा read शिल्प्य as in S.

VERSE CCCXLIII

P. 1075, l. 13—for मृतस्या read मृतश्चा

VERSE CCCXLIV

P. 1076, l. 1—for साहिकः read साहसिकः

— l. 3—for शान्नेव read शान्तान्नेव

— „ —for यद्यप्य read यदप्य

P. 1076, l. 1—for नाशात्म read नाशनात्म

— „ —for निग्रहो नापेक्षते read निग्रहलोपेक्षते

— l. 4—for तृण read तृण्य

— l. 5—for मित्रगच्छ read मिच्छ

— l. 6—for द्वैधविशेष्य read द्वे विशेष्ये द्वे as in S.

VERSE CCCXLV

हिंसतः—V. L. (a) हिंसकः, (b) हिंसकात्

पापकृतमः—V. L. पापकृन्नरः

P. 1076, l. 8—for विधिः स्तु read विधिस्तु

— l. 5—for शचौरद read शचौरः । द

— „ —for दण्ड्यः read दण्डः

VERSE CCCXLVI

P. 1076, l. 11—for द्वेष्यैश्च read द्वेष्यश्च

VERSE CCCXLVII

P. 1077, l. 1—for पार्श्वतीयस्य read पार्श्वस्थस्य as in S.

VERSE CCCXLVIII

द्विजातीनां च वर्णानां विप्लवे—V. L. विप्राणां विप्लवे धर्मविप्लवे

P. 1077, l. 3—for स्वबला read सबला

— l. 4—for धायीव read धायि च as in N.

— „ —for कत्वाच्छकाय read कत्वाशंकया

— l. 10—for परीक्षार्थमपि Buhler reads परीक्षाभौपि

— l. 11—for कार्यकालते read कार्यकारिते

— l. 13—for विना read विनाश

P. 1077, l. 15—for यदुप read यद्युप

— „ —for प्रवृत्ते read प्रवृत्तो as in S.

— „ —for विशेषाणामभ्यवपत्ति read विशेषाणां स्त्रीविप्राणाम-
भ्यवपत्तिः

— l. 17—Before असति add न पुनरत्र पशुहननम् as in N.

— l. 18—for प्रतिहार read प्रहार

VERSE CCCXLIX

स्त्रीविप्राभ्यवपत्तौ—V. L. (a) स्त्रीविप्राभ्युपपत्तौ (Madanapārijāta, p. 714), (b) स्त्रीविप्राद्युपपत्तौ

ग्रन्धर्मेण न—V. L. धर्मेण ग्रन्ध

दुष्यति—V. L. नश्यति (Madanapārijāta, p. 784).

VERSE CCCL

ब्राह्मणं—V. L. ओन्नियं (Aparārka, p. 627).

बालवृद्धौ—V. L. बालवृद्धं

P. 1078, l. 1—for प्युचतो यः read प्युच्यते यः as in S.

P. 1079, l. 1—for विचार read विचार

— l. 4—for विधि read विधे

— l. 5—for इहभवतां read इहभवन्त

— „ —for यद्यथातता read यद्यपि आतता

— l. 6—for स्तेयकारी read सोऽपकारी

— l. 10—for कृतवचन आतयित्वमुपैति read कृतवत आततायित्व-
मपैति

— l. 11—for इति नोक्तम् read इत्यनेनोक्तम्

After 350 some Mss. have the following additional verse:—

अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनपहः ।
चेन्नदारहरश्चैव पडेते हथाततायिनः ॥
उद्यतासिर्विषाग्निभ्यां शापोद्यतकरस्तथा ।
आधर्वणेन हन्ता च पिशुनश्चापि राजनि ॥
भार्या रिक्थापहारी च रन्ध्रान्वेषणतत्परः ।
एवमाद्यान् विजानीयात्सर्वानेवाततायिनः ॥

VERSE CCCLI

तन्मन्यु—V. L. तन्मन्यु (Jolly).

P. 1080, l. 3—for मामेव read ममैव

— „ —for पारुष्ये च read पारुष्ये

— l. 4—for कृत्त इति read कृत्तम इति

VERSE CCCLII

मर्शेषु—V. L. मर्शे तु (Vivādaratnākara, p. 388 and Vivāda-chintāmaṇi, p. 114).

परदारामिमर्शेषु प्रवृत्तान्महीपतिः—V. L. परदारोपसेवायां चेष्टमानाञ्जराधिपः

प्रवृत्तान्—V. L. प्रवृत्तेषु (Aparārka, p. 853).

चिह्नयित्वा—V. L. (a) छिन्नयित्वा, (b) परिचिह्नय

उद्वेजनकरैः—V. L. उद्वेगजनकैः (Vivādaratnākara, p. 388).

P. 1080, l. 7—for यमर्थं read तेनायमर्थः as in S.

VERSE CCCLIII

लोकस्थ जायते—V. L. जायते लोकानां

P. 1081, l. 3—for दारिका धर्ममूल read दारिकान् अधर्ममूलं

VERSE CCCLIV

पुरुषः सम्भार्षा—V. L. (a) सम्भार्षं पुरुषो (Aparārka, p. 854);
(b) पुरुषाः सम्भार्षं (Vivādaratnākara, p. 384), (c) पुरुषः सम्भार्षे
(Vyavahāramayūkha, p. 108).

योजयन् रहः—V. L. (a) योजयन् सह, (b) योजयेत्सह, (c) योजयेद्दहः.

P. 1081, l. 5—for—तमालपितुं read तमालापं योजयन्

— „ —for—यादोषे read यादिदोषैः

— „ —for नादिति read नादिद्विभिः

— ll. 5-6—for—सम्भवा...दृष्टदोषः read शस्तः अयमेनामुपज-
पतीत्यमुत्र दृष्टदोषः शङ्क्यमानदोषो वा

P. 1081, l. 6 after चपलः add रहः

— „ after केचित् add स

VERSE CCCLV

पूर्व—V. L. दोषैः (Aparārka, p. 354).

VERSE CCCLVI

वनेपि वा—V. L. गृहेपि वा (Vivādachintāmaṇi, p. 173).

P. 1082, l. 3—for देश्या read देश्याः

— l. 6—for संततो read सन्ततानां

— l. 7—for येन केन read या न केन as in S.

— „ —for संगन्धिनि read सम्बन्धिनी as in S.

— l. 8—Before प्राप्नुयात् add संग्रहणं

— ll. 7-8, संग्रहणं...अणितादिना should go to p. 1083, l. 3.

VERSE CCCLVII

उपकार—V. L. उपचार (Kullūka).

सट्वा—V. L. शय्या (Vivādaratnākara, p. 381).

P. 1083, l. 3—Before भूषणं add ll. 7-8 of p. 1082 as amended above.

VERSE CCCLVIII

तथा—V. L. तथा (Mitākṣarā 2. 284).

नुमते—V. L. नुमते:

P. 1084, l. 1—for प्रदेश read अदेश

— „ —for यथा read तथा

— l. 3—Before प्रतिषेधति add न.

— l. 3—for तस्मिन्नकृतेन दो read तस्मिन् कृते दो

— l. 4—omit खलं, not in I. O.

— ll. 4-5—for निवेदनस्यापि read वक्तावपि

— l. 5—for दुष्यताम् read दुष्येताम्

After 358 some Mss. have the following additional verse—

कामाभिप्रातिनी या तु नरं स्वयमुपमज्जेत् ।
राज्ञा दास्ये नियोज्या सा कृत्वा तद्दोषघोषणम् ॥

VERSE CCCLIX

सदा—V. L. स्मृताः (Vivādaratnākara, p. 385).

P. 1084, l. 6—for संग्रहस्वरूपं read संग्रहणस्वरूपं

— l. 6—for चत्रियादि read चत्रियादिः

— l. 8—for हेतु स्व read हेतुस्व

— „ —for तुल्ये हि read तुल्यश्च

— l. 9—for कोसौ read उक्तोसौ as in S.

— l. 10—for तीर्थादिष्वपिबदनं read तीर्थादिष्वभिबदनं

— „ —for दण्डात्तूप read दण्डात्तुप

— l. 11—for शूद्रोधिजातिगमने ब्राह्मणे छेदाहो read शूद्रो
द्विजातिसीगमने प्राणच्छेदाहो as in S.

P. 1084, l. 11—for मतः स्व read मतश्च as in S.

—l. 12—for कारः क्रियादिरूप read कारक्रियादिरूप

—l. 13—for यथेद read यच्चेद

—l. 14—for यं चाभवन् read यं च भवान्

—l. 15—शास्त्रमपयद्योज्य read शास्त्रस्पर्धनुयोज्य as in S.

—l. 15—for प्रतिषेधवत् प्रतिषेधवद्भि read प्रतिषेधं विद्भि as in S.

—l. 17—after निमित्तं add प्रायश्चित्तं as in S.

— „ —for उपकारादिभिरादौ read उपकारादौ

—l. 18—for तत्परस्त्री read ततश्च परस्त्री

—l. 19—for राज्यापोहयानामेव तु निवृत्तौ read आयायामेव तु प्रवृत्तौ as in S.

— „ —for गुह्य read निगूह्य as in S.

— „ —for प्रजाप read प्रजप

—l. 20—for सत्यवादवक्तो read सत्यादावन्तो

—l. 21—for न read तेन

— „ —for ग्रहणात् अङ्ग read ग्रहणाङ्ग

— „ after ज्ञातं read न

P. 1085, l. 1—for दाये दण्ड.....जातीयः स्त्री सं read दाये दण्डवते । इति बहुदण्डेष्वाम्नातेषु स महान् यो द्विजातीयस्त्रीसं as in S.

P. 1085, l. 1—for न सर्वत्र read सर्वत्र मारणम् as in S.

—l. 2—for सहरमतीभिः read भर्तृमतीभिः as in S.

— „ —for न सजा read हीनजा as in S.

VERSE CCCLX

P. 1085, l. 3—for रिताः read रिताः

VERSE CCCLXI

सम्भाषां परस्त्रीभिः—V. L. सम्भाषं सह स्त्रीभिः (Vivādaratnākara, p. 386).

P. 1085, l. 7—for प्रकाशमाना read प्रकाशमना

— „ —for कथं विनिषिद्धगोस्वामिना read कथं चिन्निषिद्धः स्वामिना

VERSE CCCLXII

नारीनि—V. L. (a) दारान्नि, (b) नारीनि (Vivādachintāmaṇi, p. 174).

P. 1086, l. 2—for त्मजा read त्मा जा as in S.

— „ —for उत्कृष्टमाकारं read उपपत्तिचमकाः as in S.

— l. 3.—for चारणपुरुषेण read चारणाः परपुरुषेण as in S.

— „ —for प्रतिष्ठंते read न तिष्ठन्ति as in S.

— l. 4.—for चारयन्ति read चारयन्ति as in S.

— „ —for ता मै read ते मै० as in S.

— l. 5—for जयति अन्त्याश्च स्त्री read सज्जयन्ति योजयन्ति अन्त्याश्च स्वस्त्री as in S.

P. 1086, l. 5—for वैश्या read वेश्या

— „ —for सुराणां read स्वनारीणां as in S.

VERSE CCCLXIII

सम्भाषां तामिराचरन्—V. L. रहस्सम्भाषणं चरन्

P. 1086, l. 6—for भाषं read भाषां

— l. 7—for परिपूर्णता... प्रणयन्ते read परिपूर्णं तासु वेश्यात्वम् । भर्तृभिरनुज्ञाताहि ताः पत्न्यायन्ते as in S.

P. 1086, l. 9—for पनतता read पनताः

P. 1087, l. 1—for दासीदासा गृहयन्ते read दासी—उत सूपकारा-
दिशब्दवत् कर्ममूलकः (V. L. भिन्नकः) । इह तावदाद्या एव स्थितिः विशेषेणोपादाने
ऽसामर्थ्यात् । या यस्य दासी वेश्यावच्चान्यैः संसृज्यते । राजदासीव दासी वा सा
निगृह्यते as in S.

P. 1087, l. 2—for विभागे चैतन्निपुणं चालिङ्गिप्रच्छन्नम् read रिक्थ-
विभागे चैतन्निपुणं वक्ष्यामः । प्रव्रजिताः अरक्षकाः शीलमित्रादयः । ताहि कामुक इव
लिङ्गप्रच्छन्नाः—as in S.

VERSE CCCLXIV

प्राप्नुयान्नरः —V. L. प्राप्नुमर्हति

P. 1087, l. 5—for वध इत्यवधेः read इत्येदात्र as in S.

VERSE CCCLXVI

समामिच्छेत् पिता यदि—V. L. समागच्छेत्समामपि (Vivādaratnākara,
p. 402).

शुल्कं दद्यात्—V. L. शुल्कं दाप्यः

P. 1088, l. 1—for अकामायाः read अकामायाः कन्यायाः as in
Mad.

—— l. 4—for सामां read समां

—— l. 5—for तदनु read ननु

—— l. 7—for खंतेन read व्यंतेन

—— l. 9—for प्रतिपद्या read प्रतिपाद्या as in Mad.

VERSE CCCLXVII

तस्याशु कर्त्ताश्रङ्गुल्यः—V. L. (a) तस्याशुकर्त्तृश्रङ्गुल्ये, (Parāshara-
mādhava Vyavahāra, p. 321, Mitākṣarā 2. 288, and Aparārka,
p. 858), (b) वेत्तव्यावङ्गुली तस्य, (c) तस्याशु कर्त्तव्ये श्रङ्गुल्यौ, (Vivādar-
atnākara p. 303).

बार्हति—V. L. चार्हति (Parāsharamādhava, p. 321, Mitākṣarā
2. 288).

P. 1089, l. 1—for पित्राय read पित्रादय as in Mad.

— l. 2—for कर्त्तव्याः read कर्त्तव्याः

— l. 3—Bring the whole of line 4 after संहारोदय

VERSE CCCLXVIII

सकामां दूषयन्तुल्यो नाङ्गुलिच्छेदमामुयात्—V. L. (a) सकामां दूषयेद्यस्तु नाङ्गुलिच्छेदमर्हति, (b) सकामां दूषमाणास्तु नाङ्गुलिच्छेदमामुयात् (Vivādaratnākara, p. 403.)

P. 1089, l. 6—After अथ add वा

— l. 7—for एतामर्थदृश्य read एतानामर्थविषय

VERSE CCCLXIX

तस्याः स्यात्—V. L. स्यात्तस्याः (Vivādaratnākara, p. 403).

द्विगुणं—V. L. त्रिगुणं (Aparārka, p. 859).

VERSE CCCLXX

या कन्यां विप्रकुर्वात्सी—V. L. (a) या तु कन्यां प्रकुर्वात्सी, (Vivādaratnākara, p. 403), (b) या च कान्यां प्रकुर्वात्सी, (c) कन्यां प्रकुर्वाया तु स्त्री

सा सद्यो—V. L. सद्योऽसौ (Vivādaratnākara, p. 403).

अङ्गुल्योरेव वा छेदं—V. L. (a) अङ्गुल्योश्छेदनं चैव, (b) अङ्गुल्योरेव च छेदं (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 321, Vivādaratnākara, p. 403, Mitākṣarā, 2. 288 and Apārārka, p. 859).

VERSE CCCLXXI

संस्थिते—V. L. संस्थितः (Parāsharamādhava Āchāra, p. 119).

स्त्री ज्ञातिगुणदर्पिता—V. L. (a) ज्ञातिस्त्रीगुणदर्पिता (b) ज्ञाति स्त्रीगुणदर्पिता (Parāsharamādhava Āchāra p. 119), (c) स्त्री ज्ञातिबलदर्पिता, (d) स्त्रीज्ञातिबलदर्पिता (noted by Nārāyaṇa).

P. 1091, l. 1—for दर्पण read ज्ञातिदर्पण

— l. 2—for नेना read नेन.

VERSE CCCLXXII

तत्र दद्येत पापकृत्—V. L. तावद्यावदसौ मृतः

VERSE CCCLXXIII

संवत्सरेऽभिशस्तस्य—V. L. संवत्सराभिशस्तस्य (noted by Medhātithi, who notes the other reading also).

P. 1092, L. 1—for स्सरे read स्सरं प्रतिपाद्यातीते संवत्सरे as in Mad.

P. 1092, l. 3—for स्तेयमिति read क्षियमिति

— l. 4—for स्तेयकारो read स्तु यकारो

— „ —for शत read व्रात

— l. 5—omit सत्रमेव दास्य

— „ —for व्रात्या ये तद्ददहीना व्रात्या read व्रात्याः । ये तद्दहीनां व्रात्यां

— l. 7—for गौ read गौण as in Mad.

— l. 9—for मुपे read मपे

— l. 10—for निरुपपद read दुरुपपादं

— l. 11—for बहु read व्रात्य

— l. 13—for व्रात read वृत as in Mad.

— l. 15—for वरस्य read वरश्च

— „ —for मरणांतं चेद्दृष्टे read मरणं तिष्ठेद्दृष्टे

VERSE CCCLXXIV

For the second line V. L.—(a) अगुसैकाग्रसर्वस्वी गुप्तौ सर्वेण हीयते (Parāsharanādhava Vyavahāra, p. 318), (b) अगुसैकाग्रसर्वस्वी गुप्ते सर्वेण हीयते (Vivādaratnākara, p. 395);—(c) अगुसं साग्रसर्वस्वौ गुप्तं सर्वेण हीयते (Bālabhāṭṭi 2. 286).

अगुसमंग—V. L. अगुसे चाङ्ग.



सर्वस्वी—V. L. (a) सर्वस्वैः (Mitākṣarā 2. 286, (b) सर्वस्वं
गुप्त—V. L. गुप्ते

P. 1093, l. 1—for गङ्ग read गच्छ

— „ —for ल read स

—l. 2—for तद्वत् read तद्वान्

—l. 3—for पराधानन्त रमे read पराधितमे

VERSE CCCLXXV

निरोधतः—V. L. निरोधितः (Vivādaratnākara, p. 396).

VERSE CCCLXXVI

गच्छेतां—V. L. सेवेतां (Mitākṣarā 2. 286).

यद्यगुप्तां तु—V. L. यद्यगुप्तायां

P. 1094, l. 3—for मित्यर्थनेति क्रमः read मित्यर्थः । नेतिब्रूमः as in Mad.

— l. 4—for कारादण्डं read कारादण्ड

The Vivādaratnākara (p. 396) quotes Manu as—

ब्राह्मणीं यद्यगुप्तां तु सेवेयातामितिस्थितिः ।

गुप्तां चेच्छृङ्खलवद्दण्डो दग्धव्यो वा कटाक्षिना ॥

VERSE CCCLXXVII

P. 1094, l. 7—for निप्रशृङ्खल read शृङ्खल

P. 1094, l. 1—for शृङ्खलुसे read शृङ्खल गुप्ते

VERSE CCCLXXVIII

वनम्—V. L. जैव (noted in Bālabhāṭṭi 2. 286).

P. 1095, l. 4—for सनाह्वानेनाधिके read सनाह्वानेधिके

VERSE CCCLXXIX

प्रायान्तिको—V. L. प्रायान्तिको (noted by Medhātithi; Vivādaratnākara, p. 393).

P. 1095, l. 10—for मौढ्यं read मौण्ड्यं as in Mad.

— „ —for प्रशक्त read प्रसक्त

VERSE CCCLXXX

प्वपिस्थि—V. L. प्ववस्थि (Prāyashchittavivēka, p. 183).

राष्ट्रादेन—V. L. (a) राष्ट्राच्चैनं, (b) राष्ट्रात्त्वेन

P. 1096, l. 2—for युगपत् Mad. reads ऽनवधारणे

VERSE CCCLXXXI

भूषाद्—प्रापात् (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 159).

भुवि—V. L. कचित्

विद्यते भुवि—(a) भुवि विद्यते (Vivādaratnākara, p. 632); (b)

विद्यते कचित् (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 159).

VERSE CCCLXXXII

वृजेत्—V. L. वृजन् (Vivādaratnākara, p. 393).

तावुभौ—V. L. तत्समं (Vivādaratnākara (p. 393).

After 382 some Mss. have the following additional verse:—

उजियां चैव वैरयां च गुसां तु ब्राह्मणो वृजन् ।

न मूत्रमुण्डः कर्तव्यो दाप्यस्तूतमसाहसम् ॥

VERSE CCCLXXXIII

सहस्रो—V. L. सहस्रं

VERSE CCCLXXXIV

पञ्चशतं—V. L. पञ्चशतो (Vivādaratnākara, p. 396).

मौण्ड्यमृच्छेत्तु—V. L. मौण्ड्यमिच्छेत्तु (Vivādaratnākara, p. 396).

दण्डमेव—V. L. मौण्ड्यमेव (Lakṣmidhara, noted in Vivādaratnākara, p. 396).

VERSE CCCLXXXV

सहस्रं त्वन्य—V. L. सहस्रमन्य (Vivādachintāmaṇi, p. 178).

अगुप्ते चत्रियावैश्ये शूद्रां वा ब्राह्मणो वृजन्—V. L. (a) विप्रः चत्रियविट्शूद्रक्षीरगुप्ताः परिवृजन्; (b) अगुप्ते वैश्यराजन्ये शूद्रां वा ब्राह्मणो वृजन् (c) अगुप्तां चत्रियां वैश्यां शूद्रां वा ब्राह्मणो वृजन् (Vivādachintāmaṇi, 178).

P. 1098, l. 3—for गुप्ताग read अगुप्ताग

— l. 3—for पदेशो read पदेश्या

After 385 some Mss. have the following additional verses—

शूद्रोत्पन्नांशपापीयास्तत्र मुच्येत किल्बिषात् ।
तेभ्यो दण्डाहतं द्रव्यं न कोशे सम्प्रवेशयेत् ॥
अयाजिकं तु तद्राजा दद्याद् भृतकवेतनम् ।
यथा दण्डगतं वित्तं ब्राह्मणोभ्यस्तु लभ्येत् ।
आर्यापुरोहितस्तेना ये चाम्ये तद्विधा द्विजाः ॥

VERSE CCCLXXXVI

P. 1098, l. 7—for स्त्रीगमनमन्य read स्त्रीगः अन्य as in Mad.

VERSE CCCLXXXVII

कृत्स्नजात्येषु—V. L. कृत्स्नजात्ये (Vivādachintāmaṇi, p. 264).

सजात्येषु—V. L. स्वराज्येषु

P. 1099, l. 1—for साम्राज्य परः प्रा read साम्राज्यं पर प्रा

— „ —for सजात्येषु read सजात्येषु

VERSE CCCLXXXVIII

चत्विक्—V. L. (a) वत्विक्, (b) त्वत्विक्, (c) ऋत्विक्

याज्यं चत्विक् त्यजेद्यदि—V. L. याज्यमृत्विक् त्यजेद्यदा (Vivādaratnākara, p. 122).

शक्तं—V. L. शान्तं

P. 1099, l. 4—for तद्विप read तद्व्यप as in Mad.

—— l. 5—for कर्मणोरितरेतरत्यागे read प्रारब्धकर्मणोरितरेतरत्यागेन

—— l. 6—for तस्यायमन्यायः read तस्यायमन्यागः as in Mad.
or तस्यायं न्यायः

—— l. 8—for योजनीयाः read याजनीयाः as in Mad.

—— l. 11—for अथ याजकावृत्ति read अयाज्ययाजनाध्यापकावृत्ति;
though Stenzler reads अज्ञानाध्यापनाद्वृत्ति (Gautama 21, 12, 13).

VERSE CCCLXXXIX

राज्ञा—V. L. राज्ञो (Vivādachintāmaṇi, p. 154).

P. 1100, l. 1—for सक्तायाः read स्वजितायाः.

—— l. 3—for संभोगे read असम्भोगे

—— l. 4—for मानं read पानं as in Mad.

VERSE CCCXC

हितमात्मनः—V. L. आत्मनो हितम्

P. 1100, l. 6—for मानां read मानानां.

VERSE CCCXCI

P. 1101, l. 2—for आचार्यसाहित्ये read अर्चायां सहस्रं as in S.

—— l. 2—for स्वधर्मं read स्वधर्म

—— „ —for महत्वे read सहस्वे.

—— l. 3—for प्रथममप्य read प्रथमस्य



VERSE CCCXCII

प्रतिवेश्या—V. L. प्रातिवेश्या

विप्रो—V. L. विप्रौ (Vivādaratnākara, p. 358).

P. 1101, l. 5—for प्राब्दी read आदि

— l. 6—for वसन्तो read वसन्नुच्यते । यतश्च श्रोत्रियाणामपि-
प्रतिवेश्यव्यपदेशोऽस्त्येव सर्वथा । अथवा आधानेन गृहान्तिके निवसन्तावाभ्यां
शब्दाभ्यामुच्येते । तौ as in I. O.

VERSE CCCXCIII

तदन्नं—V. L. तद्धनं

हिरण्यं—V. L. हैरण्यं,

हिरण्यं चैव माषकम्—V. L. दुण्डं चैव स माषकम्.

P. 1102, l. 4—for उभयं read दातव्यं

VERSE CCCXCIV

न दाप्याः केनचित्करम्—V. L. (a) न दाप्यः केनचिद्दमम्, (b) न दाप्यः
केन चित्करम् (Vīramitrodaya Rājanīti, p. 252).

P. 1102, l. 6—for कर्मवत्कारु read केन चित्करं as in S.

— ll. 6-7—for दातव्या read न दाप्या as in S.

VERSE CCCXCV

व्याधितार्तै—V. L. व्याधितार्तै

VERSE CCCXCVI

शालमले—V. L. शालमली

नेविज्यान्नेजकः शनैः—V. L. निज्याद्वासांसि नेजकः (Aparārka, p. 824).

P. 1103, l. 5—for मो दृष्टो येना read मोऽदृष्टाय । तेना as in S.

— l. 7—for प्रयच्छन्ने read प्रयच्छेत् । मूल्येन व as in S.

VERSE CCCXCVII

तन्तुवायो दशपलं—V. L. तन्तुवायः पलं दत्त्वा

पलं...पलाधि—V. L. फलं...फलादि

P. 1104, l. 3—for वृद्धि read वृद्ध्य

VERSE CCCXCVIII

नृपो हरेन्—V. L. हरेन्नृपः

P. 1104, l. 2—omit च

— l. 6—for येषु read तेषु

— ; —for शौक्ति read शौलिक

— „ —for क्रयविक्रयसारसा read न्यव्ययक्रयसारासारा

— l. 7—for गत स्यान्न्यदे read नीतस्य दे

P. 1105, l. 1—for ज्ञापि read ज्ञापयि

— — „ —for पण्य एव read पण्यम् । एवं

VERSE CCCXCIX

राज्ञः—V. L. राज्ञा (Aparārka, p. 834).

सर्वहारं हरेन्नृपः—V. L. सर्वस्वं हारयेन्नृपः (Aparārka, p. 834).

निर्हरेतो—V. L. निहिपतो (Aparārka, p. 827).

हरेन्नृपः—V. L. नृपो हरेत्

P. 1105, l. 4—for कुकुमप्राच्येषु read कुकुमं प्राच्येषु

— ll. 4-5—for तत्र तस्य प्रज्ञाढनं read तत् तत्र प्रज्ञाख्यातं

— l. 4 —for कुमप्राच्येषु पटो read कुमं प्राच्येषु पटो

VERSE CD

P. 1106, l. 1—for वाशिज्य read वाशिजक

VERSE CDI

विचार्य—V. L. विज्ञाय

P. 1106, l. 7—for चरावि read सरवि

VERSE CDII

पद्मे पद्मे—V. L. पद्मे मासे (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 315, Aparārka, p. 827 and Mitākṣarā 2. 251).

स्थवागते—V. L. तथागते

P. 1107, l. 2—for वर्ही read तर्हि

VERSE CDIII

सर्वं च स्यात्सुलक्षितम्—V. L. (a) सर्वं तु स्यात्सुलक्षितम्, (b) सर्वं तस्यात्सुलक्षितम्, (c) सर्वं स्यात्सुपरीक्षितम्, (d) सर्वं पार्थिवलक्षितम्, (e) सर्वतः स्यात् सुलक्षितम्, (f) सर्वं तस्यात् सुरक्षितम् (Vivādaratnākara, p. 301).

VERSE CDIV

यानं तरे—V. L. (a) यानतरे (Viramitrodaya Rājanīti p. 270), (b) याने तरं (Vivādaratnākara, p. 640).

पौरुषो—V. L. पौरुषे (Viramitrodaya Rājanīti, p. 270).

दाप्यं—V. L. (a) दाप्यः (do.), (b) दद्यात् (Vivādaratnākara, p. 640).

तरे—V. L. (a) तरम् (Vivādaratnākara, p. 640), (b) दरे, (c)

भरः

पौरुषोऽर्धपणं तरे—V. L. पुरुषोऽर्धपणं तरम् (Aparārka, p. 834).

पुमान्—V. L. नरः

रिक्तः—V. L. (a) द्विकरः (Aparārka, p. 834, (b) रिक्तः (Vivādaratnākara, p. 640).

P. 1108, l. 1—for मध्यं read मध्यै

VERSE CDV

P. 1108, l. 5—for परि read अपरि

— l. 6—for न्यून read न्यून

VERSE CDVI

P. 1109, l. 1—for नाग read नग

— l. 5—for कल्पन्ते read कल्प्यते

VERSE CDVII

ब्राह्मणा—V. L. ब्राह्मणो (Aparārka, p. 835).

तारिकं तरे—V. L. तारिकं करम्

VERSE CDVIII

दासानां...दासैरेव—V. L. (α) दासानां...दासैरेव (Vivādaratnākara, p. 641).

तदाशैरेव दातव्यं समागम्य—V. L. नावारुढैः प्रदेयं तत्समागम्य

P. 1110, l. 2—for शिथिलीकृतवातां read शिथिलीकृतवतां

— l. 3—for स्वराजासमा read स्वभा

VERSE CDIX

व्यवहारस्य निर्णयः—V. L. व्यवहारविनिर्णयः (Vivādaratnākara, p. 641).

P. 1110, l. 4—for राधाहस्तं read राधात् यद् अ

— l. 6—for वन्धो read बन्धो

VERSE CDX

शत्रुं दास्यं—V. L. दास्यं शत्रुम् (Vivādaratnākara, p. 625).

P. 1111, ll. 1-2—for पञ्च एव...पञ्चस्त read प्रत्यवदष्टवासायमुक्त इति चेदत्राप्येव एव प्रत्यवः त ।



P. 1111, l. 2—for धर्माधि read धनार्धि

— l. 2—for बन्धनै read निबन्धनै

— l. 3—for तत्र विधिः read न तत्र विधेः

— „ —for सचेदीदरो read सचेदरो

— l. 5—for तावपीति read तोऽपीति

VERSE CDXI

वृत्तिकर्षितौ—V. L. वृत्तिकर्षितम् (Vivādaratnākara, p. 153).

कारयेत्—V. L. कारयन्

P. 1111, l. 6—omit ब्राह्मणस्य च not in S.

— l. 8—for परिवच read परिच्छुदश्च

— l. 9—after दास्यं add न as in S.

VERSE CDXII

लोभात्—V. L. मोहात् (Aparārka, p. 789).

दास्यन्तु कारयँल्लोभात्—V. L. यो दास्यं कारयेल्लोभात् (Vivādaratnākara, p. 153).

प्राभवत्यात्—V. L. प्रभावत्वात् (Vivādaratnākara, p. 153).

P. 1111, l. 11—for करणं read करण

— „ —for नादिकं रु read नादिरु

— „ —for वाचः read भावः

P. 1112, l. 1—for न्यो I. O. reads स्य

VERSE CDXIII

ब्राह्मणस्य स्वयम्भुवा—V. L. स्वयमेव स्वयम्भुवा

VERSE CDXIV

कस्तस्मात्—V. L. कस्तं तस्मात् (Vivādaratnākara, p. 146).

विसृष्टो—V. L. (a) विसृष्टो, (b) तिसृष्टो (Aparārka, p. 786).

विमुच्यते—V. L. प्रमुच्यते (Vivādaratnākara, p. 146).

P. 1112, l. 3—for दास्या.....सृष्टोपि read तन्मुक्तोपि

—— l. 4—for कं read कः

—— „ —द्रो दा read द्राव । तद् दा

—— l. 5—for वा दास्यान्मोक्षः read दास्यान्मोक्षम्

VERSE CDXV

ससैते—V. L. ससैता (Aparārka, p. 789).

P. 1113, l. 4—for विज्ञायते read विज्ञायेद्

—— „ —for दासाः read दास्याः

—— ll. 4-5—for तुन ते read ननु

P. 1113, l. 5—for सर्वं एवोत्तरे read सर्वे चोत्तरोत्तर

—— l. 6—for दिना read दिरक्षाधिकारः

—— ll. 9—for दित्यव read दित्यन्यव

—— l. 13—for धन स्वा read धनः स्वा

—— „ —for अितत्वेन read अितेन

VERSE CDXVI

भार्या—V. L. भार्याः

P. 1114, l. 7—after सा add न

—— l. 8—Before ग्राम्ये add पुनःपुनःवारयोरपि दृष्टव्यम्

—— l. 9—After सत्सवम् add तथा हि

VERSE CDXVII

विसृग्धं—V. L. विसृग्धो

P. 1114, l. 10—for तथा च read अत्र

— „ —for तदुक्तं read तदयुक्तं

— „ —for सर्वस्य दासः read सर्वदासः ॥

— l. 11—Before कर्तव्या add न

VERSE CDXVIII

शोभयेताविदं—V. L. शोभयन्ताविदं

P. 1115, l. 1—for कर्म read स्वकर्म

— „ —for आवयेदन read आवयितुं न लभेरन् । अन as
in S.

VERSE CDXIX

P. 1115, l. 3—for नादप read नादयः

VERSE CDXX

प्राप्नोति परमां गतिम्—V. L. ब्रह्मलोके महीयते

—

Adhyaya IX

VERSE I

धर्मान् वक्ष्यामि शाश्वतान्—V. L. धर्मं वक्ष्यामि शाश्वतम्

P. 1117, l. 7—for प्रायेण read प्रायणे

— „ —for चामि read क्ष्यामि

— „ —for ग्रहणश्रुतिः read ग्रहणं स्तुतिः

VERSE II

विषयेषु च सज्जन्यः—V. L. विषये सज्जमानाश्च (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 322).

संस्थाप्या आत्मनो—V. L. (a) संस्थाप्या ह्यात्मनो (Mitākṣarā, 2. 295),
(b) संस्थाप्याः स्वात्मनो

आत्मनो वशे—V. L. आत्मानमात्मना (Kṛtyasārasamuchchaya, p. 98).

P. 1117, l. 10—for दिव्यन्यतः read दिव्य सज्जन्यः

P. 1118, l. 2—Omit उपविष्टा भवति

— „ —for ज्ञायी read ज्ञायि

VERSE III

जी स्वातन्त्र्यमर्हति—V. L. स्वातन्त्र्यं कश्चित् स्त्रियाः (Samskāraratnamālā, p. 674).

रचन्ति स्थाविरे पुत्राः—V. L. पुत्रास्तु स्थविरे भावे (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 286 and Vivādaratnākara, p. 410).

P. 1118, l. 7—for लिङ read लिङ

— l. 8—for वाञ्छि read वाञ्छि

P. 1118, ll. 11—12 omit तेन सर्वक्रियाविषयं

— l. 12—for नेनार्थः read नर्थः

— l. 13—for नस्कता read नस्का

VERSE IV

वाच्यो...वाच्यश्चानुपयन्—V. L. याप्यो...याप्यश्चानुपयन्
वाच्यो मातु—V. L. याप्यो मातु

VERSE V

विशेषतः—V. L. प्रयत्नतः (Vivādaratnākara, p. 411).

प्रसङ्गेभ्यः—V. L. प्रमादेभ्यः (Samskāraratnamālā, p. 675).

After (5) Some Mss. have the following additional verse—

भार्यायां रक्ष्यमाणायां प्रजा भवति रक्षिता ।

प्रजायां रक्ष्यमाणायामात्मा भवति रक्षितः ॥

VERSE VII

चरित्रं च—V. L. च वित्तं च (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 323).

स्वं च धर्मं—V. L. (a) स्वधर्मं हि (Vivādaratnākara, p. 411);

(b) स्वधर्मेण (Kṛtyasārasamuchchaya, p. 98).

प्रयत्नेन—V. L. (a) प्रजां चैव, (b) प्रजारचैव

P. 1120, l. 3—for साध्यं स्वीयमेते read साध्यः स्त्रिय एते

— l. 5—for तद्भवति read तद्रक्षति

VERSE VIII

यदस्यां—V. L. पुरुषः

भार्यां सम्प्रविश्य—V. L. भार्यां प्रविश्य स्वां

P. 1120, l. 6—for प्रत्या read पत्या पत्न्या उदरे प्र

— „ —for सार read सार as in N.

— l. 7—for शब्दयव read शब्दस्य भार्याव

VERSE IX

मुतं सूते—V. L. सूते पुत्रं

स्त्रियं—V. L. स्त्रियो (Vivādaratnākara, p. 414).

P. 1121, l. 2—for जातिं च मान read जातिस्त्वम् । समान

— 1. 3—for उत्कृ...नमनु read उत्कृष्टपुरुष गमनमनु

VERSE XI

चैव नियोजयेत्—V. L. वा विनियोजयेत्

शौचे धर्मे ऽन्नपक्त्वां च—V. L. (a) शौचधर्मे च पक्त्वाश्च (Vivādaratnākara, 416); (b) शौचे धर्मेऽन्नपक्त्वां च (Smṛtitattva II, p. 147).

पारियायस्य—V. L. (a) पारीयायस्य, (b) परियायस्य, (c) परीयायस्य, (d) पारीयायस्य, (e) पारियायस्य (Madanapārijāta, p. 192), (f) पारियायस्य (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 323), (g) पारियायस्य, (h) पारियायस्य

वेद्ययो—V. L. (a) वेद्ययो (Vivādaratnākara, p. 416); (b) रचयो (Smṛtitattva, II p. 147).

VERSE XII

P. 1122, l. 5—for कञ्चुकेन read कञ्चुकिनः तैः

— 1. 6—for यथेष्टं read यथेष्ट

VERSE XIII

विरहोदयम्—V. L. विरहेऽदनम्

नारीसन्दूषणानि—V. L. (a) नारीणां दूषणानि, (b) स्त्रीणां वै दूषणानि

गेहवास—V. L. (a) गेहेवास (Aparārka, p. 108); (b) गृहवास, (Vivādaratnākara, p. 430).

P. 1123, l. 1—for बहुन्यप्य read बहुनि दिनान्यप्य

VERSE XIV

संस्थितिः—V. L. निश्चयः

सुरूपं वा विरूपं वा—V. L. (a) विरूपं रूपवन्तं वा (Vivādaratnākara p. 412), (b) रूपवन्तमरूपं वा (c) रूपवन्तं कुरूपं वा

P. 1123, l. 4—for पुत्र्या read शूरा

VERSE XV

चलचित्ताद्य—V. L. (a) चलचित्त्वात् (b) चलचित्ताद्य, (Vivādaratnākara, p. 412).

P. 1123, l. 5—for रेतसो read चेतसो

VERSE XVII

अनार्यताम्—V. L. अनार्यत्वम् (Kullūka and Vivādaratnākara, p. 412).

द्रोहभावं—V. L. द्रोहभावं (Vivādaratnākara, p. 412 and Kullūka).

P. 1124, l. 5—for नेपदी read नेपादी

VERSE XVIII

For the second half there is another reading—निरिन्द्रिया अदायादाः क्षियो नित्यमिति स्थितिः, which, Hopkin's remarks, is indicated "by other texts and supported by general statements in the Nirukta".

धर्मो व्यवस्थितिः—V. L. धर्मो व्यवस्थितः (Jolly ; Vivādaratnākara, p. 412).

P. 1125, l. 3—for अविहितमन्त्रे read अविशेषेण

— ll. 3—after ततश्च add प्रतिषेधमन्यमाना यत् किञ्चित् क्षीय-
वन्धि कर्म येन केन चिन् क्रियते—as in S.

P. 1125, l. 5—for ते ते read ते

— „ —for वादि read वाद

— l. 2—for वृत्तमिति read ऽनृतमिति

— l. 8—for ह्रस्वाऽस्थिर read ह्रस्वोरस्थिर

— „ —for दन्त्यवच read दन्तवच

VERSE XIX

निगीता निगमेवपि—V. L. (a) गदिता निगमेवपि (b) निगीता
निगमेवपि (c) निगदा निगमेवपि (noted by Medhātithi).

निष्कृतीः—V. L. निष्कृतिम् (Vivādaratnākara, p. 412).

P. 1126, l. 1—for च संभ read चासंभ

— l. 2—for एकादश read एकदेश

— l. 3—for निरुक्तः read निरुक्तम् as in Mad.

— l. 6—for दिञ्च read दि यत् लञ्

— „ —for दासी read दासां

— „ —for यदव्य read यदव्य

VERSE XX

वृत्तां—V. L. वृत्तां

P. 1126, l. 7—for इति कार read इतिकर

— l. 9—for वा तत्पितुः read मत्पितु

— ll. 9-10—for रेत इति read पितेति

— l. 10—for कल्पते read कल्प्यते

VERSE XXI

ध्यायत्यनिष्टं यत्किञ्चित्—V. L. यच्च ध्यायत्यनिष्टं स्त्री

व्यभिचारस्य—V. L. व्यवहारस्य (Vivādaratnākara, p. 413).

VERSE XXII

P. 1128, l. 2—for विधैर्भ read विधैव भ

VERSE XXIII

शास्त्री च—V. L. (a) शास्त्री (b) शास्त्री



VERSE XXIV

एताश्चान्याश्च—V. L. एते चान्याश्च—noted by Medhātithi.

प्राप्ताः स्वैः स्वैः—V. L. प्राप्तास्तैस्तैः

अपकृष्ट—V. L. अवकृष्ट (Vivādaratnākara, p. 416).

VERSE XXV

प्रजनार्थ—V. L. प्रजनार्था (Vivādaratnākara, p. 416).

P. 1129, l. 4—for वस्त्वस्या read वस्वास्याः

VERSE XXVI

P. 1129, l. 5—for नहि read कोहि

The first sentence reading with आह should precede the verse (26).

— l. 6—for योजनं read पंचनं

— l. 7—for प्रयोजनं read प्रजनं

— l. 8—for स्त्रिभि read स्त्रीभि

VERSE XXVII

परिपालनम्—V. L. परिरक्षणम्

प्रत्यर्थ—V. L. (a) प्रत्यहं (Kullūka, also noted by Medhātithi, who does not note the reading प्रत्यर्थं as Bühler says), (b) प्रीत्यर्थं (Govindarāja), (c) प्रत्यर्थं

P. 1130, l. 1—Omit अत्र... श्लोको, which is evidently a note made by the copyist.

— l. 2—for निधनं read निबन्धनम्

VERSE XXVIII

धीन—V. L. धीना (Madanapārijāta, p. 191).

च ह—V. L. (a) सदा (b) त्विह (Madanapārijāta, p. 191).

VERSE XXIX

लोकान्—V. L. लोकम्

मनोवाग्देहसंयता—V. L. (a) मनोवाक्कायसंयता (b) मनोवाग्देहसंवृता

Verses 29 and 30 are only repetitions of Verses 164 and 166 of Adhyaya V. Though Medhātithi says here—पञ्चमे श्लोकाविमौ व्याख्यातौ, it is noteworthy that under Adhyaya V also he has not vouchsafed any व्याख्या of these two verses.

VERSE XXXII

भर्तुः—V. L. कर्तुः

कर्तरि—V. L. भर्तरि (Kullūka).

P. 1132, l. 1—for संस्कृतो read संस्कृता

—— l. 3—for चेन्नियो read चेन्नियं

VERSE XXXIII

P. 1132, l. 8—for कारशः read काशः or कारः as in Mad.

—— l. 9—for नाचायदेव read नाय च हेव

—— „ —for अन्यथा read अथा as in Mad.

VERSE XXXVI

वारशं त्रप्यते—V. L. (a) यादशमुप्यते (b) यादशं वाप्यते

तत्तस्मिन् बीजं स्वैर्व्यञ्जितं गुणैः—V. L. तत्तस्मिन् बीजं स्वैर्व्यञ्जितैर्गुणैः

P. 1134, l. 2—for उत्पादिते read उपपादिते

—— „ —for करणा read करणा as in Mad.

—— l. 3—for गुणै read गुणैः

VERSE XXXVII

P. 1134, l. 5—for पुष्यति read पुष्यन्ति

—— l. 7—for तच्च read तच्च

—— „ —for पुष्पाङ्गं भू read पुष्पाङ्गम्



P. 1134, l. 7—for येनिगुणान्प्राप्यति read येनिगुणान् प्राप्नोति

— l. 8—for निमित्तं...वर्तते read पुण्यतिर्धातुरनुवृत्तौ न वर्तते ।
इयं चानुवृत्तिः पुष्टेरङ्गम् ।

— „ —for पुष्य read पुष्य

— „ —for न्यार्थ read नर्थ

VERSE XXXVIII

P. 1135, l. 1—for हरणाद्ग्या read हरणेन ग्या

— „ —for ऽपि परत्र read ऽपिरत्र

— l. 2—for वैक का read वैकः का

— l. —for न्नुसन्निक read न्नुसन्निक

VERSE XXXIX

शालयो मुद्गाः—V. L. शालयो वापि

प्ररोहन्ति—V. L. प्ररोहन्ते

P. 1135, l. 4—for यथा वा read यथावीजं

VERSE XL

P. 1135, ll. 6-7—Omit अन्यदुसं.....प्ररोहति

VERSE XLII

पुंसा—V. L. पुंसां

P. 1136, l. 10—for यज्ञ read विज्ञ

— „ —After इत्युक्त्वा add गाथा

VERSE XLIII

विदः—V. L. विसः

वै चिसं—V. L. (a) वै चिप्रं (b) निचिसं

VERSE XLIV

P. 1137, l. 5—for पुत्रोऽनेनापि read पुत्रोऽन्येनापि as in Mad. and S.

— l. 6—for च्छेदस्य read च्छेदकरय as in Mad.

VERSE XLV

प्रजेति ह—V. L. प्रजेह च

VERSE XLVI

विजानीमः—V. L. (a) विजानीत (b) विजानीध्वं

P. 1139, l. 3—for न्येव read न्येन

VERSE XLVII

सकृदाह ददानीति—V. L. सकृदानं ददासीति (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 388).

ददानीति—V. L. ददामीति

सकृत्सकृत्—V. L. सतां सकृत् (Smṛtitattva II, p. 182).

P. 1139, l. 6—for भागके read भागेषु

— l. 7—for परिकल्प्य read परिकल्प्य

— „ —for यद्यसाव read यद्ययमादाव as in N.

— l. 8—for दास्यैव read दा स्वादेव as in N.

— „ —for दितः read दितरैः as in N.

— „ —for भागके read भागे as in N.

— l. 10—for भागोप read भागाप

— l. 11—for शयाता read शयाना as in Mad. and S.

— „ —Before लभेरन् add न

— l. 15—for संबन्धः read संबन्धे

— „ —for दावे नि read दानम्प as in S.

VERSE XLVIII

महिष्यजाविकासु च—V. L. अजाविमहिषीषु च (Vivādaratnākara, p. 578).

There is no Bhāṣya on this verse in any of the Mss. available.

VERSE XLIX

परचेन्न—V. L. परचेन्ने (Vivādaratnākara, p. 578).

VERSE L

यदन्यगोषु—V. L. (a) यदन्यगोषु (Vivādaratnākara, p. 579),
(b) यस्त्वन्यगोषु
मोघं स्कन्दितमार्षभम्—V. L. मोघं वृषभचेष्टितम्

VERSE LI

कुर्वन्ति—V. L. करोति (Vivādaratnākara, p. 579).

VERSE LII

गरीयसी—V. L. बलीयसी (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 350).

अर्थे—V. L. अर्थे (Vivādaratnākara, p. 579).

चेन्निनां बीजिनां—V. L. (a) चेन्निनं बीजिनं (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 350); (b) चेन्निना बीजिना (Vīramitrodaya Samskāra, p. 656).

प्रत्येकं—V. L. प्रत्येकं (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 350).

VERSE LIII

क्रियाभ्युपगमास्वेतत्—V. L. (a) क्रियाभ्युपगमाञ्चैवं; (b) क्रियाभ्युपगमा-
त् चेन्न (Mitākṣarā 2. 127); (c) क्रियाभ्युपगमार्थेन (Vivādaratnākara, p. 557).

VERSE LIV

चेन्नियस्यैव तद्दीजं—V. L. (a) तज्जेयं चेन्नियस्यैव, (b) तज्जेयं चेन्निकस्यैव
(Vivādaratnākara, p. 579).

बीजी—V. L. वसा (Smṛtitattva, II, p. 150).

P. 1142, l. 4—for वाप read नाश

— 1. 6—सर्वचेन्नप्राधान्यमित्यर्थः should go to l. 7, after
फलमिति

VERSE LV

महिषी—V. L. महिषा (Smṛtitattva II, p. 150).

P. 1143, l. 1—for हारस्य read हारः as in S.

— 1. 3—for हरणार्थं वानुग read हरणार्थत्वात्

VERSE LVII

P. 1144, l. 1—for वदन्नाप read वदन्वाप

सम्यक्—V. L. सद्भिः (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 350).

प्रजेप्सिताधि—V. L. (a) प्रजेच्छयाधि; (b) बीजेप्सिताधि (Parāshara-
mādhava Vyavahāra, p. 350).

P. 1144, l. 6—for तनेति read सन्तनेति

— „ —for केवलायां read केवलायाः

— 1. 7—for ज्ञातया read ज्ञाता

— 1. 8—for नियोगे read नियोगो

— „ —for लोको read लोके

— „ —for विशेषेण read शिष्येण

— 1. 10—omit तर्हि विशेषेण

— 1. 11—for ग्रहणत्वेन read ग्रहणेन

— 1. 3—for रकस्य read रक्तस्य

— 1. 5—for कार्या read कार्य

VERSE LX

P. 1145, l. 6—for क्रीडादिनियोगो...विधिः read क्रीडादिरूपे पक्षौ
जीवत्यग्रेष एव विधिः as quoted in Bālabhāṭṭi on 2. 127.

P. 1144, l. 6—for नियुक्तां ये read नियुक्तौ यौ

——l. 9—after मनेन add न

VERSE LXI

अनिवृत्तं—V. L. (a) अनिवृत्तं (b) अनिवृत्तं

P. 1146, l. 1—अस्य प्रतिप्रसवः should go before verse LXI

——l. 2—for श्यतो read श्यन्तो

—— „ —for विधि read विधे

——l. 5—for रीय इति read तीयमिति

—— „ —for न लिङ्ग read लिङ्गं

VERSE LXII

निवृत्ते—V. L. (a) निवृत्ते (b) निवृत्ते

P. 1146, l. 9—for स्तुषा read स्तुषा

VERSE LXIV

P. 1147, l. 2—for पत्याद्वि read पत्या नि

——l. 5—for शिष्टः read विशिष्टः

——l. 6—for विधिर्न वि read विधिर्वि as in N. and S.

——l. 10—for न तु read न च

——l. 11—for वृद्धि read प्रवृत्ति

—— „ —for तिरुष read तिरुपपय

P. 1148, l. 1—for निगच्छन्त्येव read निर्गच्छन्त्येव

——l. 2—for लक्षणं read लक्षणा



VERSE LXV

P. 1148, l. 5—for उद्वाहनं read उद्वाहः

—— l. 8—for मन्त्रे read मन्त्र

—— l. 9—for विधाविति read विधिरिति

VERSE LXVI

द्विजैरविद्वद्भिः—V. L. द्विजैर्हि विद्वद्भिः (Viramitrodaya Samskāra, p. 738.)

वेने—V. L. वेणे

P. 1149, l. 2—for धन्वयप read धन्वप

—— „ —for नीतन read नीतनो न

—— l. 3—for मन्त्रेषु तु read मन्त्रेषु न

—— l. 5—for विशेषु read विशेषे

VERSE LXVII

P. 1149, l. 7—for उक्तं read इत्युक्तम्

VERSE LXVIII

तं विगर्हन्ति—V. L. गर्हन्ते तं हि (Viramitrodaya Samskāra, p. 738).

ततः—V. L. तदा

कां क्षियम्—V. L. काः क्षियः

पत्यार्थ—V. L. पत्यार्थे (Viramitrodaya Samskāra, p. 738).

P. 1149, l. 9—for अस्प read स्प

VERSE LXIX

सत्ये कृते—V. L. सत्यकृते (Smṛtitattva II, p. 129.)

VERSE LXX

सकृत्सकृत्—V. L. पृथक् पृथक् (Noted by Bālabhāṭṭi on 2. 127).
P. 1151, l. 3—for स्नां read स्ना

VERSE LXXI

पुरुषानृतम्—V. L. पुरुषोऽनृतम्
P. 1151, l. 7—Before तस्य add तत्

VERSE LXXII

कन्यां विगर्हिताम्—V. L. कन्यां पतिव्रताम्
P. 1152, l. 1—for विधि read विधिः as in Mad.

—— „ —for विधीवत् read विधिवत् as in Mad.

—— l. 2—for दृष्ट...गृहीतां read दृष्टपूर्वां प्रतिगृहीतां or नष्टां
पूर्वप्रतिगृहीतां as quoted by Vīramitrodaya Samskāra (p. 744).

P. 1152, l. 3—for प्रदु read विप्रदु

—— „ —for भावी read भावां

—— „ —before चत add अन्ये

VERSE LXXIII

अनाख्यायोपपादयेत्—V. L. अनाख्याय प्रयच्छति
तस्य तद्वितथं कुर्यात्कन्यादातुः—V. L. (a) तस्यापि वितथं कुर्यात्कन्यादानं,
(b) तस्यापि वितथं कार्यं कन्यादातुः

VERSE LXXIV

नरः—V. L. द्विजः

P. 1153, l. 3—for अपृष्टो read अपृष्टो as in Mad.

—— „ —for प्रदुष्टे read प्रदुष्येत् as in Mad.

Nandana inserts verses 95-96 after 74.

VERSE LXXV

त्वविधा—V. L. न विधा

P. 1153, l. 7—for निहते read संनिहिते

— „ —for परिग्रह read परगृह

VERSE LXXVI

धर्मकार्यार्थ—V. L. धर्महेतोस्तु

P. 1154, l. 2—for चोक्तं read नेक्त

— l. 3—for जीवन्ति read जीवन्ती

— l. 6—for श्रास्मादवाध read श्रास्माद् वचनात्

— l. 7—for कर्मवदन्य read कर्मभिः पिण्डदमन्य

— l. 8—for पूर्वः read पूर्णः

— l. 14—for न्यसंवि read नि । न च संवि

— „ —for काल इति read कालमिति

— l. 15—for युक्तं read ह्युक्तम्

— l. 16—for सुकार्याय read स्वकार्याय

— l. 21—for विद्यात्वं read विद्वत्त्वं

— l. 23—for प्रसुते read प्रसूते

VERSE LXXVII

दायं हत्वा—V. L. दयां कृत्वा (Vivādaratnākara, p. 423), which is a misprint.

प्रतीचेत—V. L. उदीचेत (Vivādaratnākara, p. 423).

द्विषायां—V. L. (a) द्विषन्ती (Kullūka); (b) द्विषती

त्वेनां—V. L. देनां (Kullūka).

P. 1155, l. 1—for स निष्का read न निष्का

— „ —for समप् read सम्प् as in Mad.

VERSE LXXVIII

अतिक्रामेत्—V. L. अतिक्रमेत्

प्रमत्तं या—V. L. (a) प्रमत्तं वा (b) प्रमत्तं च

परिच्छदा—V. L. परिच्छदैः

त्रीन्मासान्—V. L. त्रीपुंसा

VERSE LXXIX

न त्यागोऽस्ति द्विषन्त्याश्च—V. L. न तं द्विषन्त्यास्त्यागोऽस्ति (Vivādarat-nākara, p. 423).

द्विषन्त्याश्च—V. L. द्विषाणायाः

P. 1156, l. 1—for झीबर्वा read झीबावी

— „ —before वातरेता add एको

— „ —for यादशं यो read तादशं या

— „ —for तस्य read तस्या

VERSE LXXX

मद्यपासत्यवृत्ता—V. L. (a) मद्यपाऽसाधुवृत्ता (Parāsharamādhava, Āchāra, p. 508) (b) मद्यपासत्प्रवृत्ता

वाधिवेत्तव्या—V. L. (a) साधिवेत्तव्या (b) चाधिवेत्तव्या (Samskāra-ratnamālā, p. 592) (c) व्यधिवेत्तव्या (Madanapārijāta, p. 188).

P. 1156, l. 4—for प्रतिषेधमापद्यमाना read प्रतिषिद्धमद्यमाना

— l. 4—for नियमस्य त्वन्य read नियमस्त्वन्य

— l. 6—for स्ततः पान read स्तत्पान

— „ —for अतिप्रवृत्तौ read अप्रवृत्तौ

— l. 7—for हन्त्रि read हनि

— l. 9—for हिंसा read हिंसा

— „ —for ताडय read ताडन

VERSE LXXXI

दशमे—V. L. नवमे (Vidhānapārijāta II, p. 363).

दुमेधिवेद्याददे—V. L. (a) दुमेधिवेद्या स्यात् (Vīramitrodaya Samskāra, p. 873; (b) दुमेधिवेत्तव्या (Aparārka, p. 100).

P. 1157, l. 3—for धमनियमः read अयं नियमः as in Mad.

VERSE LXXXII

च कर्हिचित्—V. L. (a) कथंचन (Aparārka, p. 160); (b) तु कर्हिचित् (Parāsharamādhava Āchāra, p. 508).

VERSE LXXXIII

द्वेषिता—V. L. (a) द्वेषिता (Parāsharamādhava Āchāra, p. 509); (b) रोषिता (Vidhānapārijāta II, p. 59).

स्याज्या वा—V. L. न स्याज्या

P. 1158, l. 1—for ननु read ननु

— l. 2—omit भिताहना

— „ —for भाषणसंनि read संनिभाषणम् ।

VERSE LXXXIV

प्रतिषिद्धा पिबेद्या तु—V. L. (a) प्रतिषिद्धापि चेद्या तु (b) प्रतिषिद्धादिवेद्या तु
प्रेक्षासमाजं—V. L. (a) प्रेक्षासमाजौ, (b) प्रेक्षासमाजे (Vivādaratnākara, p. 437).

P. 1158, l. 7—for दण्डः स्वातन्त्र्ये read दण्डे स्वातन्त्र्यम्,

VERSE LXXXV

क्रमेण स्यात्—V. L. क्रमेणैव (Smṛtitattva, p. 298).

स्वाश्वापरा—V. L. (a) स्वचावरा (Parāsharamādhava Āchāra, p. 509); (b) स्वाः स्वावरा (Vivādaratnākara, p. 419) (c) स्वाश्च परा (Smṛtitattva, II p. 191).

वेश्म च—V. L. वेश्मनि (Parāsharamādhava Āchāra, p. 509).

P. 1159, l. 1—before समानजातीयश्च add समानजातीया अ

VERSE LXXXVI

नैत्यकम्—V. L. (a) नैत्यिकम्; (b) नैष्ठिकम् (Vivādaratnākara, p. 419).

नास्वजातिः—V. L. नान्यजातिः (Parāsharamādhava Āchāra, p. 509 and Vivādaratnākara, p. 419).

स्वास्वैव—V. L. स्वा चैव

P. 1159, l. 4—for जारणं read जागरणं as in S.

VERSE LXXXVII

सजात्या—V. L. स्वजात्या (Vivādaratnākara, p. 419).

चण्डालः—V. L. चण्डालः

VERSE LXXXVIII

भिरु—V. L. बुरु (Samskāramayūkha, p. 103).

यथाविधि—V. L. विचक्षणः (Parāsharamādhava Āchāra, p. 481).

P. 1160, l. 2—for प्राप्तोति रूप read प्राप्तोभिरुपः

— „ —for स्वभावः read सुस्वभावः

— l. 3—for कामवश read कामावेश

— „ —for प्राप्तं read प्राप्तां

— l. 4—for लिङ्गाम read लिङ्गम्—अ

— ll. 4-5—for लिङ्गधर्मयुक्ते तामपि read लिङ्गम् धर्मप्रयुक्ततायामपि

— l. 6 —for नाशा read न शा

After (88) some MSS. have the following additional verse—

प्रयच्छेन्नशिकां कन्यामृतकालभयान्वितः ।

अतुमत्यां हि तिष्ठन्त्यामेनो दातारमृच्छति ॥

VERSE LXXXIX

न चैवैनां—V. L. नत्वेवैनां (Samskaramayūkha, p. 102).

प्रयच्छेत्तु—V. L. प्रयच्छेत

P. 1161, l. 1—for न दानं read दानं

VERSE XC

कुमार्यतु—V. L. नारी ऋतु (Samskāraratnamālā, p. 501).

उदीचेत्—V. L. उपासीत् (Nandana and Viramitrodaya Samskāra, p. 772).

VERSE XCI

यदि स्वयम्—V. L. यदास्वयम् (Viramitrodaya Samskara, p. 772).

VERSE XCII

मातृकं भ्रातृदत्तं वा—V. L. मातृदत्तं भ्रातृदत्तं (Madanapārijāta, p. 148).

स्तेना—V. L. (a) स्तेयं (Aparārka, p. 94) (b) स्तेनः (noted by Medhātithi).

पित्र्यं कन्या—V. L. पित्र्यदत्तं (Viramitrodaya Samskāra, p. 772).

P. 1162, l. 3—for नालङ्का read अलङ्का

VERSE XCIII

स हि—V. L. स च

P. 1162, l. 4—for निरोधोयं read निषेधोऽयम् । तत्र हेतुः as in S.

P. 1162, l. 5—for वेदयितुः read चादृतः

VERSE XCIV

P. 1163, l. 3—for वर्षा read वर्षा

VERSE XCV

विन्दते नेच्छयात्मनः—V. L. विन्देतानिच्छयात्मनः (which is not Medhātithi's reading, as has been wrongly asserted by Bühler and Hopkins).

P. 1163, l. 7—for यान्तु read यन्तु

— l. 11—for कल्पेत read कल्प्येत

— l. 12—for देवता read देवताया

— „ —after लभ्यते add तथा

— l. 13—omit द्विषाणां

— l. 14—for पतिर्विन्देत read अधिविन्देत

VERSE CXVII

त्रियते—V. L. त्रियते (Madanapārijāta, p. 153).

कन्यायां दत्तशुल्कायां—V. L. कन्याया दत्तशुल्काया (Viramitrodaya Samskāra, p. 739).

दत्तशुल्कायां—V. L. शुल्कदत्तायां

P. 1164, l. 4—for प्रजार्थेषु वा read प्राप्ता सर्वेषु वा

VERSE XCVIII

P. 1165, l. 3—for प्रायश्चित्ते read प्रायश्चित्तविधानेन न

VERSE XCIX

पुनरन्यस्य—V. L. नरस्यान्यस्य (Samskāraratnamālā, p. 503).

यदन्यस्य प्रतिज्ञाय—V. L. यदन्यस्याभ्यनुज्ञाय

P. 1165, l. 5—for तदुक्तं read यदुक्तं

— l. 6—for स्यानुज्ञया read स्य प्रतिज्ञाय

— „ —omit वरं

— „ —for कन्या read कन्यां

VERSE CI

व्यभीचारो—V. L. व्यभिचारो (Aparārka, p. 101 and Vivādaratnākara, p. 421).

P. 1166, l. 1—for वचनवित्या read वचनक्रिया as in Mad.

VERSE CII

नाभिचरेतां तौ—V. L. (a) नातिचरेतां तौ, (b) नाभिचरेयातां
वियुक्ता—V. L. (a) नियुक्ता, (b) विमुक्ता (Vivādaratnākara, p. 421).

P. 1166, l. 7—for संहारः श्लो० read संहारश्लो०

VERSE CIII

दायधर्म—V. L. दायभागं

VERSE CIV

समम्—V. L. सह (Halāyudha and Pārijāta mentioned in Vivādaratnākara, p. 455; also Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 326).

P. 1167, l. 1—तथा...संक्रामति is out of place where it stands.

VERSE CVI

सर्वमर्हति—V. L. लब्धुमर्हति (Shrāddhakriyākaumudī, p. 450).

VERSE CVII

स एव—V. L. स दुष

P. 1168, l. 1—for यथाश्रुति...ग्रहया read यथाश्रुततात्पर्यग्रहया

VERSE CVIII

पितेव—V. L. पितृवत् (Smṛtichandrikā Samskāra, p. 90).

भ्रातृन्—V. L. भ्राता (do.)

ज्येष्ठे आ—V. L. ज्येष्ठआ (Vivādaratnākara, p. 457).

पुत्रवत्—V. L. पितृवत् (Smṛtichandrikā Samskāra, p. 90).

P. 1168, l. 3—for गह्वणीयाः read अह्वणीयाः । तैरप्ययं पितेति भावनीयम् as in S.

VERSE CIX

P. 1169, l. 1—for य एवगुणज्ये read य एवं गुणो ज्ये

VERSE CX

अज्येष्ठवृत्तिर्यस्तु स्यात्—V. L. (a) अज्येष्ठ एव यस्तु स्यात्, (b) अज्येष्ठ-वृत्तिर्यस्तन्न (Vivādaratnākara, p. 457).

P. 1169, l. 3—for पुत्रे च read पुत्रे इव

— „ —omit कनीयासोऽपि तथैव वर्तन्तेति

— l. 5—for नुवु read निवु

VERSE CXI

धर्मकाम्यया—V. L. धर्मकाङ्क्षया (Aparārka, p. 119).

धर्म्या...क्रिया—V. L. धर्म्याः...क्रियाः (do.).

P. 1170, l. 1—for निरपेक्ष्यस्व read निरपेक्ष्य स्व as in Mad., or निरपेक्षस्व as in S.

P. 1170, l. 6—for मर्धं तत्स्व read मर्धमर्धं स्व

— l. 7—for आद्याहव read आदौ । आहव

— l. 8—before प्रतिपद्यन्ते add न

— l. 9—for यजते read यजेते

— l. 10—for कुर्वति read कुर्वीत as in Mad.

VERSE CXII

उपेष्टस्य विंश उद्धारः सर्वद्रव्याच्च यद्वरम्—V. L. ज्येष्ठः समुदरेदंशं
सर्वद्रव्याच्च यद्वरम्

तुरीयं तु—V. L. तृतीयं तु

P. 1170, l. 12—for छेयो read छेया

— l. 14—for कलियु read कृतयु

— l. 17—for प्राप्त read प्राप्तः

— „ —for नहि read नहीदं

— l. 18—for हेतु read हंतुः

— „ —for देशः सर्त read देशपूर्व as in Mad.

— „ —for निजान् जनपदध read जातिजानपदान्ध

P. 1171, ll. 3—4—for मध्यद्रव्याद्वा read सर्वद्रव्यात्

VERSE CXIII

यथोदितम्—V. L. मिथो यदि

P. 1171, l. 8—for मध्यममध्य read मध्य

— l. 9—for श्लोकैर्व read श्लोके व

VERSE CXIV

वरम्—V. L. वरान् (noted by Medhātithi.)

धनजातानां—V. L. धनजातीनां

अग्रम्—V. L. अग्रम्

*P. 1172 l. 2—for दशाव...दशशब्दः read वयंवादवगाद वरमेकमाददीत
यदि दशगावोऽथ वा सन्ति तदैकं श्रेष्ठमाददीत दशावयवे वर्गे दशशब्दः as in S.

VERSE CXV

देयं तु—V. L. देयं स्यात् (Vivādaratnākara, p. 476).

स्वकर्मसु—V. L. स्वधर्मतः



P. 1172, ll. 5-6—for विशेषंतो read विशेषतो as in Mad., or विशेषवंतो

P. 1172, l. 7—for पानविधिं read पायनविधिं

VERSE CXVI

त्वेषां—V. L. तेषां

VERSE CXVII

ततोऽनुजः—V. L. ततोऽपरः (Vyavahāramayūkha, p. 43).

VERSE CXVIII

प्रदद्युः—V. L. स्वं दद्युः (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 345).

स्वाभ्यः स्वाभ्यः—V. L. (a) स्वेभ्योऽशेभ्यः (Aparārka, p. 731 and Mitākṣara, 2 ; 124) ; (b) स्वेभ्यः स्वेभ्यः (Vivādaratnākara, p. 496).

P. 1174, l. 2—for प्रजाभ्य इत्य read स्वजात्य

— 1. 5—for उद्धार read उद्वाह as in Mad.

— 1. 6—for दार read द्वाह as in Mad.

— 1. 7—for च इदं read स इदं

— 1. 1—for अलङ्कारत्वं read अलङ्कारस्तु

— „ —for भिन्नमिति read भिन्न इति

— 1. 14—for अयं दायः read अदायः

— 1. 15—for शब्दा read शब्द

— 1. 16—After पितृदायेभ्यः add—यत् पित्राऽवश्यदातव्यं तत्रका

(कन्यायां ?) उद्धृत्य शेषं विभजेरन्नित्यर्थः । यथावाकरणादिप्रव्याहयते (?) तद्वत्कन्यादानम् । अवश्यकर्तव्यत्वात् । यथा कन्याभ्यः as in S.

— 1. 18—वा याजतु read वायो नतु

— 1. 19—for वोच्य read नेच्य

— „ —for वोच्यते न पुन read यद्योच्यते तत्पुन

VERSE CXIX

चैकशफं—V. L. (a) सैकशफं (Mitākṣarā 2. 119, Madanapārijāta, p. 686); (b) स्वेकशफं (Aparārka, p. 723).

तु विषमं—V. L. (a) सैकशफं (do.; Madanapārijāta, p. 686); (b) च विषमं (Vivādaratnākara, p. 498).

VERSE CXX

P. 1175, l. 4—for चैवाधि read चैकाधि

VERSE CXXI

यवीयान्—V. L. कनीयान् (Mitākṣarā, 2. 136).

P. 1176, l. 3—for चेन्नं चेन्नजस्य read चेन्नजः

— „ —for तद्वाश्रित्य read तदध्याहृत्य

— l. 6—for वाहृत्य read वाध्याहृत्य

P. 1176, l. 8—for न विनिकल्पा read न विकल्पा

VERSE CXXIII

संहरेत् स पूर्वजः—V. L. (a) संहरेत् सर्वपूर्वजः; (b) संहरेत् स तु पूर्वजः (Vivādaratnākara, p. 473); (c) स लभेत् स तु पूर्वजः

अपरेऽज्येष्ट—V. L. परेज्येष्ट

VERSE CXXIV

अज्येष्टायां—ज्येष्टायां (hinted by Medhātithi).

वृषभपोडशाः—V. L. (a) वृषभपोडशम्; (b) वृषभपोडश

P. 1178, l. 2—After गरीयसी add स गरीयसीम् यस्य कनीयसी स

VERSE CXXV

ज्येष्ठेन—V. L. (a) ज्यैष्ठ्येन (Vīramitrodaya Rājanīti, p. 37); (b) ज्यैष्ठ्य (Vivādaratnākara, p. 477).

VERSE CXXVI

यमयोश्चैव गर्भेषु—V. L. यमयोश्चैकगर्भेऽपि (Nandana).

सुव्रह्मण्यास्वपि—V. L. (a) सुव्रह्मण्या इति (b) ; स्वव्रह्मण्यास्वपि , (c)
सुव्रह्मण्यायामपि (Viramitrodaya Rājanīti, p. 37).

जन्मतो ज्येष्ठता स्मृता—V. L. जन्मना ज्यैष्ठ्यमुच्यते (Viramitrodaya
Rājanīti, p. 37).

P. 1179, l. 3—for अन्यत्र read अन्यत्

VERSE CXXVII

P. 1179, l. 5—for कार्यलक्ष read कार्यस्योपलक्ष

— l. 6—for संवादाद्य read संवाद्य अ

— „ —for मात्रा read मात्रात्पुत्रिकेत्येकेषाम्

P. 1180, l. 1—for दियोगेन read तिमन्त्रादियोगेन

— „ —for संवादभावेन read संबन्धाभावेन as in Mad.

— „ —for कृतमुच्यते सुतव read कृत इत्युच्यते पुनर्व

After 127 some MSS. have the following additional verse—

अभ्रातृकां प्रदास्यामि तुभ्यं कन्यामलङ्कृताम् ।

अस्यां यो जायते पुत्रः स मे पुत्रो भवेदिति ॥

which is found in Vashīṣṭha.

VERSE CXXVIII

स्य पुत्रिकाः—V. L. (a) स पुत्रिकाम् ; (b) स्यपुत्रिकाः (c) त्वपुत्रिकाः

VERSE CXXIX

P. 1180, l. 4—for तदत्र read एतदत्र

— „ —for दाने read दने

VERSE CXXX

धनं हरेत्—V. L. हरेद्धनम् (Vivādaratnākara, p. 591).

P. 1180, l. 6—मेवधनं...युज्यते should be omitted.

VERSE CXXXI

यौतकं—V. L. यौतुकं

धनम्—V. L. वसु

P. 1181, l. 3—for सौदायक read सौदायिक

— l. 4—for तत्सम्बन्ध read न संबन्ध

— „ —for न भक्त read इतरेषु भक्त

— ll. 5-6—for कुमारीभाग एव...यौतकं, read कुमारीग्रहणात् या

नास्ति कुमारी तस्या नास्ति । एवकारेण च प्रसिद्धानुवादकत्वात् प्रकरणबाधकत्वम् ।
अतश्च पुत्रिकाविषयं यौतकम्

P. 1181, l. 7—for निधना read निर्धना

VERSE CXXXII

For the second line the Vivādaratnākara (p. 560) reads
—दौहित्र एव तु हरेदपुत्रस्याखिलं धनम् adding that it is Anuvāda of the
first half.

अपुत्रस्य पितुर्हरेत्—V. L. अपुत्रस्य हरेद्यदि (noted and rejected
by Medhātithi).

दद्याद् द्वौ पिण्डौ—V. L. दद्यात्तपिण्डं

P. 1182, l. 3—for दातुः read यदा तु

— „ —After तदा add न

— „ —for दानेन read दाने

— l. 5—for न तु read यदि

— „ —for भार्यापुत्र read भार्यायामपुत्रः

— l. 6—for पिता read माता as in S.

P. 1182, l. 6—for जातः पु read जातपु as in S.

— l. 8—for नीवाजी read नैवाजी

— „ —for लक्ष्यः read लक्ष्ये

— l. 9—for विद्य read विद्य

— l. 10—for पुत्र पुत्रि read पुत्रः पुत्रि

— „ —in place of अजसा अयं प्रयुङ्क्तेति substitute

ll. 10—14 from p. 1184 येन कार्य.....पराभ्यां द्वाभ्यां,—which latter should be replaced by ll. 10—27 of p. 1182 and ll. 1—9 of p. 1183—according to S.

P. 1182, l. 11—for पुमांसं read पुसा सं

— „ —for अर्थ read अय

— l. 13—for ताः कन्यास्वपितृणां हि याहिता read नाकन्यासु कचिन्तृणां सुसधर्मक्रिया हिता

— l. 16—for तथोक्ते read यच्चोक्तं

— l. 17—Before कामयते add न

— l. 19—for मपत्यशे read मन्यशे

— l. 22—After प्रतिषेधस्तद् add तिक्रमे विवाहस्य संस्कारतैव नास्ति शुद्धाद्याधानस्यैवाहवनीयाचर्हता । भगिन्यादि as in S.

— l. 23—After धीनेपि add न

— „ —for यथा च स्व read यथा च सह

— l. 26—for बोद्धार read बोद्वाह

— l. 27—for भवत्य read भवत्वयम्

P. 1183, l. 1—for पितृसुता read पितृस्वता

— „ 1—After लक्ष्य add भयलक्ष्यवान्

P. 1183, l. 1—for प्रत्यया read प्रत्यङ्गा

— l. 7—for बधित read बाधित

— „ —for ते चेदपत्यमात्रे कानीनं स्मरन्ति read तेन चापत्यमात्रो कानीनो भवति, as in S.

VERSE CXXXIII

न विशेषोऽस्ति—V. L. विशेषो नास्ति (Smṛtitattva II. p. 191).

VERSE CXXXIV

स्त्रियाः—V. L. स्त्रियः (Bālabhaddi, 2132).

VERSE CXXXV

अपुत्रायां—V. L. अप्रजायां (Aparārka, p. 754).

हरेतैवा—V. L. (a) हरेदेवा (Aparārka, p. 754), (b) हरेत्तैवा (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 374).

P. 1184, l. 7—for ननु read ननु

— l. 8—for तानि नामानि read तानीमानि

— l. 9—for ग्रहणं read गमनं

— l. 10—for संस read संस

— ll. 10—14 should be transposed to p. 1182, l. 11

as in S.

— l. 11—for ननु read सनु

— l. 12—After पञ्चान्तरेऽपि add पञ्चान्तरेषु दद्यात् । न च सर्वस्वग्रहणपक्षे दद्यादिति नोदना पञ्चान्तरेषु, as in N.

— l. 13—for प्रपिता read माता



VERSE CXXXVI

सदृशात्—V. L. सदृशं

P. 1185, l. 3—for दाना read पिण्डदाना

— „ —for करणं read प्रकरणं

— l. 6—Before प्राप्नोति add पिण्डदानं as in Mad.

— l. 7—After तदपि add न

— „ —for लक्षणायाः read लक्षणायाः

— l. 8—for कारण read प्रकरण

VERSE CXXXVII

अथ पुत्रस्य पौत्रेण—V. L. पौत्रस्येह तु पुत्रेण

VERSE CXXXVIII

त्रायते पितरं—V. L. पितरं त्रायते (Vivādaratnākara, p. 583).

For the second half the Smṛtitattva II (p. 389) reads—
मुखसन्दर्शनेनापि तदुत्पत्तौ यतेत सः ।

P. 1186, l. 5—for जात read जायत

VERSE CXXXIX

पौत्रवत्—V. L. (a) पूर्वजान् (Govindarāja); (b) पुत्रवत् (Nandana).

VERSE CXL

पितुस्तथाः—V. L. पितुस्तस्य (noted by Medhātithi).

तत्पितुः पितुः—V. L. तु पितुः पितुः (Vivādaratnākara, p. 563).

पिण्डम्—V. L. पिण्डान् (Madanapārijāta, p. 609).

P. 1187, l. 2—for एवेत्य read एव पितुरित्य

— l. 3—for निरूप्य read निरूप्य

— „ —for न पितुः read तत्पितुः

VERSE CXLI

हरेतैव—V. L. हरेच्चैव (Vivādaratnākara p. 567; Viramī-trodaya, Samskāra, p. 208).

सम्प्राप्तोऽप्यन्यगोत्रतः—V. L. सम्प्राप्तोऽस्य न पुत्रकः (Nandana).

P. 1187, l. 6—for भाक्तं read भाक्त्वं

— l. 8—for विशदंशा read विशेषादंशा

— l. 10—for वक्ष्यति read स्वक्ष्यत as in N.

VERSE CXLII

हरेत्—V. L. भजेत् (Mitākṣarā, 2.132).

स्वधा—V. L. स्वधाम् (Samskāraratnamālā, p. 455).

कचिद्—V. L. सुतः (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 351).

P. 1188, l. 2—for नुगां read नुगो

— l. 3—for दानादौ read दानाद्यौ

— „ —for तद्वदेते read तदेतत्

— l. 4—for स्मिन्स्व read स्मै स्व

— l. 5—for हरये read हारये

VERSE CXLIII

अनियुक्ता—V. L. अनियुक्तः

P. 1189, l. 2—for चञ्चं read चेञ्चं as in Mad.

— l. 3—for यद्यपि read यतः

— „ —for नैव चा read तेनैव चा For this sentence

S reads नैवासौ चेन्निरिक्थहरः

P. 1189, l. 9—for नाश read न श

— „ —for चतुर्वशेनानि read च दर्शनेनानि as in Mad.

— „ —for सूता read सुता



P. 1189, l. 13—for दास्ये read दास्यो

— „ —for भियोग read नियोगः

— l. 15—for कामतायेन read कामलोभेन as in Mad.

VERSE CXLIV

पैतृकं रिक्थं—V. L. पैतृके रिक्थे (Vivādaratnākara p. 587).

हि सः—V. L. हि यः (Vivādaratnākara, p. 587).

मपि पुमान्धार्या—V. L. मपुत्रायां पुत्रो (Dattakamimānsā, p. 29).

VERSE CXLV

चेन्निकस्य तु—V. L. (a) चेन्निकस्य हि, (b) चेन्निकस्यैव

P. 1190, l. 4 for दश्येत read दश्येन

— l. 5 for अयत्यार्थ read अयस्यम् । अर्थ

VERSE CXLVI

तस्यैव तद्धनम्—V. L. तस्य तमेव च (Noted by Bālabhāṭṭi 2. 136.)

स्त्रियमेव च—V. L. स्त्रियमेव वा (Aparārka, p. 742).

P. 1190, l. 7—omit the न before दद्यात्

— „ —for दर्शेन read दर्शनेन

— l. 8—for धनै read धने

— „ —for वक्ष्य read रक्ष्य

— „ —for तस्य वचनं दद्यादिति, read तस्य तद्धनम् । तस्य विभक्तधनस्य धनं दद्यादिति as in S.

VERSE CXLVII

मिथ्योत्पन्नं—V. L. वृथोत्पन्नं

P. 1191, l. 1—for युक्तेन read युक्तेति

— „ —for विरोधे read विरोधो

— l. 2—for हारस्तत्र तु read हारस्तत्र तत्र

— „ —for पूर्वानुमतमिच्छन्ति read पूर्वं तु न तमिच्छन्ति
as in S.

— „ —for जारज read कामज

— l. 3—for भाग्युच्यते read भावी अत उच्यते

— l. 4—Before पाठे read अनियुक्तेति

VERSE CXLVIII

चैकजातानां—V. L. (a) स्वेकजातानां (b), चैकजातीनां, (c) स्वेव जातानां

P. 1191, l. 7—After मन्यन्ते add— नानाजातीयासु बह्वीषु जातानां
वक्ष्यमाणानां चतुरोऽंशान् हरेदित्यादि भागव्यवस्था । एकस्यां तु विजातीयायां कदापि
न प्रयुज्यते । तस्येहासम्भवादग्रहणम् as in S.

VERSE CXLIX

यदि—V. L. यदा (Vivādaratnākara p. 527).

विभागोऽयं विधिः स्मृतः—V. L. विभागोऽयं प्रकीर्तितः (Vivādaratnā-
kara p. 527).

VERSE CL

प्रधानतः—V. L. विधानतः

P. 1192, l. 2—for एकस्यां...ग्रहणं read कीनाशो वाहः ।

— l. 3—for सुर read सीर

— l. 4—for यावन्तोऽशास्त read यावन्तोऽशास्तत



VERSE CLI

वैश्याजः सार्धम्—V. L. वैश्याजोऽध्यर्धम् (Vivādaratnākara, p. 528).

P. 1193, l. 1—for श्रवणादि read श्रवणे द्वि

— „ —for संख्येष्टक read संख्ये तु क //

VERSE CLII

सर्वं वा—V. L. सर्वथा

रिक्थजातं—V. L. धनजातं

तद्दशधा—V. L. तु दशधा

परिकल्प्य च—V. L. (a) परिकल्पयेत्, (b) परिकल्पितम्, (c) प्रविभज्य तु; (Parāsharamādhava, p. 343), (d) प्रविभज्यते (Vivādaratnākara p. 528).

P. 1193, l. 2—for ऋक्थ read रिक्थ,

VERSE CLIII

हरेद्द्वयंशमंशं—V. L. द्वयंशमेकमंशं (Vivādachintāmaṇi, Calcutta, p. 144).

चतुरोशान्—V. L. चतुरंशान् (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 343).

P. 1193, l. 3—for विशिष्टायागमायाष्टमो भा read विशिष्टयोरागम-
योरन्यो भा as in S.

— l. 4—for चत्रिया read चत्रियायाः

— l. 7—for सर्वं स्वरिक्त्यो read सर्वत्र स्वस्वो

— l. 8—for शूद्रो लभ्य read शूद्रो लभते

— l. 9—for मूलं मते read मूलमन्ते

P. 1194, l. 2—for लभतेऽन्यत्रनियुक्तम् read न लभन्तेऽन्यत्र नियोक्तम्

VERSE CLIV

यद्यपि स्यात्तु सत्पुत्रो—V. L. यद्यपि स्यात्सपुत्रो वा (Vivādaratnākara, p. 535).

प्यसत्पुत्रोपि वा भवेत्—V. L. (a) यद्यपुत्रोपि वा भवेत् (Parāshara-mādhava Vyavahāra p. 344 and Aparārka, p. 735), (b) यद्यत्पुत्रोपि वा भवेत्, (c) यद्यपुत्रोऽथ वा भवेत् (Vivādaratnākara, p. 535).

P. 1194, l. 3—for सपुत्रो read सत्पुत्रो

— l. 5—for ह्यन्तु द्रष्टव्य read ह्यन्त्वदुष्या व्य

— „ —for बहुवचनं read यदा बहुधनं

— l. 6—for समानभावजा read समानासमानजा

VERSE CLV

रिक्थभाक्—V. L. दायभाक्

P. 1195, l. 1—for दद्यात्तदास्य read दद्यात्

— l. 4—After स्तीति add वदन्तः as in S.

— l. 5—for का read काचित्

— l. 6—for शुश्रूषा चे read शुश्रूषुरचे

— l. 7—Before एक add कथञ्चास्ति

— l. 8—for अत्रात् read अत्रात्

VERSE CLVI

वा—V. L. ये (Smṛtitattva II. p. 193).

P. 1195, l. 13—for चत्रिया read चत्रियस्य

P. 1196, l. 1—for तथाप्युक्तं read तथाचोक्तं

— l. 2—for लभते के read लभेतैके

— l. 3—for सर्वेष्वपि read सर्वेष्वसवर्णसर्वेष्वपि

— „ —for याता read जाता

— „ —for जायांश read ज्यायोऽंश

VERSE CLVII

भार्या विधीयते—V. L. भार्योपदिश्यते (Vivādaratnākara p. 532, Smṛtitattva II. p. 193).

P. 1196, l. 4—for लोमा read लोम

VERSE CLIX

बान्धवाश्च—V. L. बान्धवास्तु (Vivādaratnākara, p. 549).

VERSE CLXI

यादृशं फलं—V. L. यादृशं गुणं

तादृशं फलं—V. L. (a) तादृशं गुणं, (b) तादृशं कुलं

P. 1196, l. 2—for शात्तु नाशङ्का read शात्तुत्यत्वाशङ्का

— l. 3—for ज्ञानमियु read ज्ञाननियु

P. 1197, l. 4—for तम read तमः

— l. 5—for मृणाया read मृणानपा

VERSE CLXII

यस्य यत्—V. L. यद् यस्य (Vivādaratnākara, p. 543 and Aparārka, p. 739).

P. 1198, l. 1—for यस्तत्पज read यस्तत्पजः

— l. 2—for को हेतुः read न हेतुकः

VERSE CLXIII

तु प्रजीवनम्—V. L. तत्प्रजीवनम् (Parāsharamādhava Vyavahāra p. 348).

P. 1199,—for दन्ये read दयः

VERSE CLXV

पितृरिक्थस्य—V. L. पित्र्यरिक्थस्य

P. 1200, l. 1—After एव add न

— l. 5—for नाफला read न फला

— „ —for न्तरपे read न्तरापे

VERSE CLXVI

For the first line, the Vivādaratnākara (p. 553) reads
संस्कृतायां तु भार्यायां स्वयमुत्पादयेत्तु यम्

स्वचेत्रे—V. L. स्वे चेत्रे (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 38).

स्वयमुत्पादयेद् द्विजम्—V. L. (a) स्वयमुत्पादयेद् द्विजम् (b) स्वयमुत्पादितश्च यः (Parāsharamādhava, Prāyashchitta, p. 38).

प्राथमकल्पिकम्—V. L. (a) प्रथमकल्पिकम् (Rāghavānanda), (b) प्रथमकल्पितम् (Vivādaratnākara, p. 553).

P. 1200, l. 7—for तायां read ताया

— l. 8—Before तेषा add न हि

— „ —for चतुरः read मन्वानाः

— „ —for रसान्सं read रसा न सं

— l. 11—for किमु read किं

— l. 12—for च जनके read चाजनके

— „ —for कुर्वन्नन्यो नेति read कुर्वन्नन्येनेति

— l. 13—for येतु read यत्तु

— „ —for जादिज read जादेरज

— l. 16—for नाहमि read नाद् व्यमि



P. 1201, l. 1—for इहो read इहं

— „ —for त्यप read त्युप

— ll. 1-2—for येहि प्रायश्चित्त read यामिप्रायाच्च

— l. 2—for पुत्रकर्मागमोऽप read पुत्रः कर्माङ्गमप

— l. 3—for चेन्नजे read चेन्नजादीनाम्पुत्रत्वे as in S or चेन्नजादीनाम्पुत्रपत्ते as in Mad.

— l. 4—for श्वानिति read श्वाइति

— „ —for यदा read यथा

— „ —Before पुत्र add न

— l. 5—for अथ स्वयं read यथा च स

— l. 6—Omit अथ क्षत्रिया

— „ —for पुत्रिका read पुत्रिकापुत्रस्य

— l. 7—for तद्ग्रहणमतस्तत्सा read तद्ग्रहणम् । तत्सा

VERSE CLXVII

स पुत्रः चेन्नजः स्मृतः—V. L. स ज्ञेयः चेन्नजः सुतः (Vivādaratnākara, p. 555).

व्याधितस्य—V. L. पतितस्य (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 38).

VERSE CLXVIII

सदृशं—V. L. सदृशः

द्वित्रिमः—V. L. द्वितकः

पिता च—V. L. पिता वा (noted by Medhātithi, not approved by him, as Buhler says).

प्रीतिसंयुक्तं—V. L. प्रीतिसंयुक्तौ (Aparārka, p. 736).

P. 1202, l. 1—Omit वा after पठितुं

— „ —for छांदा read छायां दा

— l. 2—for सखा read स्वखा

— l. 4—for ज्ञातितः read जातितः

VERSE CLXIX

गुणदोषविचक्षणम्—V. L. गुणदोषविचक्षणः

तु प्रकुर्याद्यं—V. L. यं प्रकुर्वीत (Nṛtyasārasamuchchaya, p. 74).

विज्ञेयश्च—V. L. विज्ञेयस्तु

P. 1202, l. 5—for स तु read ये तु

— l. 6—for ननु read न तु

— „ —for तुक्त read तूक्त

— l. 7—for तथा read तदा

— „ —Before जातो add येनाहं

VERSE CLXX

यस्य—V. L. यस्तु

न च ज्ञायेत—V. L. न विज्ञायेत

कस्य सः—V. L. कस्य चित्

स गृहे—V. L. स्वगृहे

P. 1202, l. 9—for द्रान्त्या read द्रान्ता

VERSE CLXXI

P. 1203, l. 4—for अन्यत्वमप्यन्य read अन्यत्र । तथाप्यन्य

VERSE CLXXII

P. 1203, l. 6—After प्राक् add व्याख्यातः

— l. 7—for सत्यस्मि read सत्यन्यस्मि



VERSES CLXXIII—CLXXVIII

The Bhāṣya on these verses is not available.

VERSE CLXXIV

सदृशोऽपि वा—V. L. सदृशोऽथ वा (noted by Bālabhāṭṭi, on 2.131, Madanapārijāta p. 653).

अपत्यार्थ—V. L. अपत्यार्थे (Aparārka, p. 738).

स क्रीतकः—V. L. (a) स तु क्रीतः (Vivādaratnākara, p. 570),
(b) स क्रीतस्तु (Madanapārijāta, p. 653).

VERSE CLXXV

वा स्वयेच्छया—V. L. (a) वा यथेच्छया (b) स्वेच्छयापि वा (Viramirodaya Samskāra, p. 743); (c) स्वेच्छयात्मनः

VERSE CLXXVI

सा—V. L. सौ (Aparārka p. 92).

VERSE CLXXVII

यस्मै—V. L. यस्तु (Shuddhikaumudī p. 92).

आत्मानं स्पर्शयेद्यस्तु—V. L. आत्मानमर्पयेद्यस्तु

तस्तु स स्मृतः—V. L. तस्मै उच्यते (Suddhikaumudī p. 92.)

VERSE CLXXVIII

यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां—V. L. ब्राह्मणो यस्तु शूद्रायां

VERSE CLXXX

यथोदितान्—V. L. यथोदितम्

P. 1207, l. 4—for कल्या read अनुकल्या

VERSE CLXXXI

य एते—V. L. यत्र ते (Vivādaratnākara, p. 574).

ऽभिहिताः—V. L. विहिताः

यस्य ते—V. L. (a) यस्यैते (Vivādaratnākara, p. 574), (b)

यस्यैतत्

P. 1207, ll. 9—12,—सर्वेषामपि...र्थवादः—all this should go under 202.

[The Bhāṣya on 182-202 is not available.]

VERSE CLXXXII

एकश्चेत्—V. L. यद्येकः

सर्वोस्तान्—V. L. सर्वे ते (Vivādaratnākara, p. 582, Mitākṣarā 2.132).

VERSE CLXXXIII

सर्वासा—V. L. बह्वीना (Śrāddhakriyākaumudī, p. 479).

ग्राह पुत्रवत्तीर्मेतुः—V. L. पुत्रिण्यो मनुजवत्तु (Dattakamīmāṃsā, p. 14).

VERSE CLXXXIV

श्रेयसोऽलाभे—V. L. श्रेयसोऽभावे (Vivādaratnākara, p. 552).

VERSE CLXXXV

पुत्रा रिक्थहराः—V. L. पुत्रो रिक्थहरः (Aparārka, p. 653).

एव च—V. L. एव वा (Aparārka, p. 653).

आतर एव च—V. L. आतर अत्र च

VERSE CLXXXVI

सम्प्रदातैषां—V. L. सम्प्रदस्तेषां (Aparārka p. 544).

After 186 some Mss. have the following additional verse.

असुतास्तु पितुः पत्न्यः समानांशाः प्रकीर्तिताः ।

पितामहश्च ताः सर्वा मातृकल्पाः प्रकीर्तिताः ॥

VERSE CLXXXVII

भवेत्—V. L. हरेत् (Smṛtitattva II, p. 195).

सकुल्यः स्यात्—V. L. सकुल्याः स्युः

After 187 some Mss. have the following additional half-line.

हरेर (द) नृत्विजो वाऽपि न्यायवृत्ताश्च याः स्त्रियः ।

VERSE CLXXXIX

द्रव्यं—V. L. धनं (Vivādaratnākara, p. 597).

VERSE CXC

सगोत्रात्पुत्रमा—V. L. गोत्रात्तन्तुं समा (Aparārka, p. 742).

पुत्रमाहरेत्—V. L. तन्तुमाहरेत् (Vivādaratnākara, p. 589).

स्यात्तत्तस्मिन्—V. L. स्यात्तत्तस्य

तत्र यद्विद्यजातं—V. L. तत्र यो विद्यभागः (Aparārka, p. 742).

तत्तस्मिन्—V. L. तं तस्मै (Aparārka, p. 742).

VERSE CXCI

द्वौ तु यौ—V. L. द्वौ चैव

VERSE CXCH

समं सर्वे—V. L. सर्वे पुत्रा (Kalpataru quoted, Bālabhāṭṭi on 2. 145).

VERSE CXCH

यथाहृतः—V. L. यथांशतः (Vivādaratnākara p. 516).

VERSE CXCV

भ्रातृमातृ—V. L. मातृभ्रातृ

अध्यावाहनिकं—V. L. अध्यावहनिकं (Mitākṣarā, 2. 135-136).

प्रीतिकर्मणि—V. L. प्रीतितः स्त्रियै (Vivādaratnākara, p. 522).

VERSE CXCV

वृत्तायाः—V. L. वृत्तायां

VERSE CXCVI

यद्वसु—V. L. यद्वनम् (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 373 ; Vivādaratnākara, p. 519).

अप्रजायामतीतायां—V. L. (a) अतीतायामप्रजसि (Vivādaratnākara, p. 519), (b) अतीतायामप्रजायां (Smṛtitattva II, p. 186).

VERSE CXCVII

दत्तं—V. L. किञ्चित् (Vivādachintāmaṇi, Cal., 143).

यत्त्वस्याः स्यात्—V. L. (a) यत्तुं तस्याः, (b) यत्तस्यै स्यात्

अप्रजायामतीतायां—V. L. (a) अतीतायामप्रजसि (Aparārka, p. 753), (b) अतीतायामप्रजायां

VERSE CXCVIII

स्त्रियां तु—V. L. स्त्रियास्तु (Madanapārijāta, p. 667).

VERSE CXCVI

मध्यमात्—V. L. मध्यकात्

VERSE CC

क्रीभिः—V. L. कश्चित् (Smṛtitattva II, p. 184).

VERSE CCII

तु न्यायं—V. L. (a) च न्यायं, (b) तन्न्यायं (Vivādaratnākara, p. 487).

प्रासाच्छादनमत्यन्तं—V. L. (a) प्रासाच्छादनमभ्यङ्गं, (b) प्रासाच्छादनमात्रं
तु

मनीषिणा—V. L. मनीषिणः (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 377).

पतितो ह्यददद्भवेत्—V. L. पतिताः स्युरदित्सवः (Vivādaratnākara, p. 487).

P. 1207, ll. 9-12—should come under this verse—

VERSE CCIII

तु—V. L. तु (Viramītrodaya Samskāra, p. 195).

दायमर्हति—V. L. दातुमर्हति

P. 1218, l. 1—for त्यक्तसत्तानानामपत्यं read त्यक्ततन्तुनामापत्यं

—— l. 3—for जंतू read तन्तू

—— „ —for वा तेन read वाऽनेन

—— l. 4—after विवाहः add उपनेयता च जात्यन्धपङ्गूनां
वातरेतसः क्लीबस्य दर्शिता । उन्मत्तादयस्त्वनुपनेयाः कुतस्तेषां विवाहः, as in S.

—— „ —for ग्रहणासा read ग्रहणसा

—— l. 5—for तस्य सर्वेष्ववगृह्येन्नपतितोपि स्मृति read तच्च
स्मृति

—— l. 8—for तद्दर्शयितव्यम् read तद्दर्शितम्

VERSE CCIV

यदि विद्यानुपालितः—V. L. (a) यदि विद्यानुपालिनाम् (b) यदि
विद्यानुपालिनः (Mitākṣarā 2. 118).

VERSE CCV

ईहातश्चेद्वनं—V. L. ईहातो यद्वनं (Vivādaratnākara, p. 507).

P. 1219, l. 5—for अस्थेव विभा read अस्थेवाविभा

—— ll. 5-6—for अपिच्येऽपि read अपिच्य इति

VERSE CCVI

मैत्र्य—V. L. मैत्र (Vivādachintāmaṇī, Calcutta, p. 135).

माधुपर्किक—V. L. माधुपर्किक (Vyavahāramayūkha, p. 55).

P. 1220, l. 1—for विद्याया read विद्या

—— l. 2—for यद्व्ये read यद्य्ये

—— „ —for जायमानेन read याजनेन as in S.

—— l. 3—for यतस्तल्लभ्यते read यद्वनं लभ्यते as in S.

VERSE CCVII

निर्भाज्यः—V. L. विभाज्यः (Aparārka, p. 720).

P. 1221, l. 2—for न चेयं read न देयं as in N. and S.

VERSE CCVIII

For the second line the Mitākṣarā (2. 118) reads दायादेभ्यो न तद्दद्याद्विद्यया लब्धमेव च; so also Parāsharamādhava (Vyavahāra, p. 377) and Madanapārijāta, (p. 685).

उपार्जितम्—V. L. उपार्जयेत् (Mitākṣarā, 2. 118).

पितृद्वयं—V. L. पितृद्वयं

तत्—V. L. च (Aparārka p. 723).

P. 1221, l. 6—omit न before वक्तव्यः as in N.

—— l. 7—for मन्त्रे read मैत्रे

VERSE CCIX

पिता—V. L. यदा

मनवासं—V. L. (a) मनुपन्नं (b) मनवाध्यं (Vivādaratnākāra p. 461).

P. 1222, l. 1—for तदोक्तं read तदुक्तम्

— „ —for चेच्छ read वेच्छ as in Gautama 25. 2.

— l. 2—for यतस्ते read यदैव ते

— l. 5—before नियोक्तव्यं add न

— „ —for पुत्रकामेन वा वि read पित्रा चाकामेन वि as in Gautama 15. 9.

— l. 6—for विति read निति as in Gautama 15. 9.

VERSE CCX

विभक्ताः—V. L. संसृष्टाः (Vyavahāramayūkha, p. 65).

विभजेरन्—V. L. विभजेयुः (Vivādaratnākara, p. 601).

ज्यैष्ठ्यं तत्र—V. L. (a) ज्येष्ठस्तत्र, (b) ज्येष्ठो ह्यत्र

P. 1222, l. 12—for स्वपिण्य read अपिण्य

— l. 13—for भूतः सर्वंग read भूतपूर्वंग

VERSE CCXI

P. 1223, l. 2—for तस्यां read तस्य

VERSE CCXII

विभजेरन्—V. L. विभजेयुः (Mitākṣarā 2. 139).

P. 1223, l. 3—for संसृष्टार्थे गृहीयुः read संसृष्टोर्थे ते गृहीयुः

— „ —for अपुत्रा read अप्रसा

P. 1223, l. 4—for प्रवृत्ता read प्रत्ताः

— „ —for प्रतिगो read पतिगो

— „ —for त्विय read न त्विय

— l. 5—for युयञ्च read युयै च as in Mad.

P. 1224, l. 3—after जीवतोरिति add तत्र...दर्शयति which appears wrongly in l. 4.

VERSE CCXIII

यो ज्येष्ठो...लोभाद्—V. L. यो लोभात्...ज्येष्ठो (Vyavahāramayū-kha, p. 58).

सोऽज्ये—V. L. स,ज्ये (Mitākṣarā 2. 126).

P. 1224, l. 5—for शनिर्हं read शानर्हं

VERSE CCXIV

यौतकम्—V. L. यौतुकम्

P. 1225, l. 2—for पयेद्यन्ते read पयेद्यदा ते

— „ —for स्तद्वर्धन read स्तद् धन

— „ —for तादृश read तादृशं

— l. 4—for स्यैव न यौतकम् read स्यैव तद्यौतकम्

VERSE CCXV

न पुत्रभागं विषमं—V. L. न तत्र विषमं भागं (Vivādaratnākara, p. 468).

P. 1225, l. 5—for तेभ्योऽस्मि read तस्मास्मि

VERSE CCXVI

हरेद्वनम्—V. L. धने हरेत् (Vivādachintāmaṇi, Calcutta, p. 159).

वे स्युः—V. L. वैस्तु



P. 1226, l. 1—for भागे द्वयं read भागे भागद्वयं

— l. 3—before पितु add ये

— l. 4—for त एव मेव read तत एव

VERSE CCXVII

दायाद—V. L. दायाद्य (Vivādaratnākara, p. 591).

VERSE CCXVIII

दृश्येत—V. L. दृश्यते

VERSE CCXIX

चेमं प्रचा—V. L. चेमप्रचा (Madanapārījāta, p. 685).

पत्रं—V. L. पात्रं

P. 1227, l. 2—for वृद्धा वास्तु चारा read वृद्धाः वास्तु च चौरा

The Bhāṣya on 220-227 is not available.

VERSE CCXX

विभागो—V. L. हि भागो

VERSE CCXXI

राजान्तकरणावेतौ—V. L. (a) राज्यान्तकरणावेतौ ; (Vīramitrodaya Rājanīti p. 152), (b) राट्टान्तकरणावेतौ (Vivādaratnākara, p. 611).

निवारयेत्—V. L. (a) निवासयेत्, (b) विवासयेत् (Vivādaratnākara, p. 611).

दोषौ—V. L. द्वेष्टौ (Vivādaratnākara, p. 611).

VERSE CCXXII

प्रकाश—V. L. प्रत्यक्ष (Vivādachitāmaṇi, Calcutta, p. 166.)

प्रतिघात—V. L. प्रतीघात (do.)

VERSE CCXXIV

कारयेत वा—V. L. (a) यच्च कारयेत् (Aparārka, p. 804); (b) यश्च कारयेत् (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 392), (c) कारयीत वा (Vīramitrodaya, Rājanīti p. 153); (d) कारयेत्तथा (Smṛtisāroddhāra p. 334).

VERSE CCXXV

कितवान् कुशीलवान् क्रूरान्—V. L. (a) कितवान्छीलवान् कैलान्, (b) कितवान्छीलवान् क्रूरान्, (c) कितवान् कुशीलवान् केतान्, (d) कितवान् कुशीलवान् केरान् (Narāyaṇa, Vivādaratnākara, p. 315), (e) कितवान् कुशीलवान् चौरान् (Vīramitrodaya Rājanīti, p. 153).

VERSE CCXXVII

वैरुतं—V. L. वै विकृतं (Vivādaratnākara p. 611).

VERSE CCXXIX

P. 1231, l. 3—for सम्बन्धेनाव read बन्धनेनाव

— l. 4—for कर्मणि read कर्मणी

VERSE CCXXX

For the second line Parāsharamādhava (Vyavahāra, p. 159) reads शिथिलाविलरज्ज्वाद्यैर्विद्यान्पतिसर्दनम्
दरिद्राणां च रेगिणाम्—V. L. दरिद्रानाथरेगिणाम्

P. 1232, l. 1—for दमः read दम्

— „ —for व्यादि read फादि

VERSE CCXXXI

वे नियुक्तास्तु—V. L. वेऽनियुक्तास्तु (noted by Medhātithi)
नृपः—V. L. दुषः



P. 1232, l. 4—for अन्यस्मा read अन्यतरस्मा as in S.

— l. 5—for माणो read माणे

VERSE CCXXXII

P. 1233, l. 2—for खितमस्ति read खितमिति

— „ —for संवाधशा read संबन्धेन शा

— l. 3—for ब्राह्मणयोरपि read ब्राह्मणस्यापि

VERSE CCXXXIII

भूयो—V. L. प्राज्ञो (Mitākṣarā 2. 306.)

तीरितं—V. L. (a) निर्णीतं (Nandana); (b) तारितं

यद्भवेत्—V. L. (a) सम्भवेत् (Smṛtitattva, II p. 231);

(b) विद्यते (Mitākṣarā 2. 306).

निवर्तयेत्—V. L. (a) निवर्तते, (b) पि वर्तयेत् (Parāsharamādhava

Vyavahāra, p. 161).

विद्यात्—V. L. ज्ञेयं (Mitākṣarā 2. 306).

P. 1233, l. 5—for धिकारणे read धिकरणे

— l. 6—for नु शब्दं read नुशिष्टं

— l. 7—धनग्रण.....ज्ञानादिना—all this should go under verse 234.

After 233 some Mss. have the following additional verse—

तीरितं चानुशिष्टं चयो मन्येत विकर्मणा ।

द्विगुणं दण्डमास्थाय तत्कार्यं पुनरुद्धरेत् ॥

VERSE CCXXXIV

अमात्याः—V. L. अमात्यः

प्राड्विवाको—V. L. प्राड्विवाका

यत्कुर्युः—V. L. (a) यत्कुर्यात्, (b) यः कुर्यात्

तं सहस्रं च—V. L. (a) तान् सहस्रं च ; (b) सहस्रं चैव ; (c) सहस्रं तांश्च

P. 1234, l. 1—for अर्थतस्तु read अयं तु

— „ —for प्रज्ञा read अज्ञा

VERSE CCXXXV

तस्करो—V. L. स्तेयी च

ज्ञेयाः—V. L. वेद्याः

VERSE CCXXXVI

P. 1235, l. 2—for त्वंकिनः शरीर read त्वंकनं शरीर

VERSE CCXXXVII

स्तेये च—V. L. स्तेये तु

ब्रह्महयशि—V. L. ब्रह्मन्नस्याशि—(Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 304).

VERSE CCXXXVIII

For the second line the Vivādaratnākara (p.635) has the following—चरेयुः पृथिवीं सर्वां दाप्यास्तूतमसाहसम्

असंयाज्याः—V. L. (a) असंयोज्याः ; (b) असम्भोज्याः (Prāyashchittavivēka, p. 27).

असम्भोज्याः—V. L. असम्भाज्याः (Prāyashchittavivēka, p. 27).

विगर्हितः—V. L. (a) विवाहितः, (b) विवाहिनः (Vivādaratnākara, p. 635).

P. 1236, l. 2—for अविग read विग

VERSE CCXXXIX

ज्ञातिसम्बन्धिभिः—V. L. ज्ञातिसम्बन्धिनः

P. 1236, l. 5—for दोषे read योने

VERSE CCXL

तु कुर्वाणा... नाङ्क्या राज्ञा ललाटे स्युः—V. L. त्वकुर्वाणा... अङ्क्या
राज्ञा ललाटेषु

पूर्वे वर्णा—V. L. (a) सर्ववर्णा, (b) सर्वे वर्णा, (c) पूर्ववर्णा (Mitākṣarā,
2. 270).

ललाटे स्युः—V. L. (a) ललाटे तु, (b) ललाटेषु

P. 1236, l. 6—for शृङ्गादावन्यपूर्ववर्णा read शृङ्गादन्ये पूर्ववर्णा as
in Mad.

VERSE CCXLI

ब्राह्मणस्यैव—V. L. ब्राह्मणस्यैष

VERSE CCXLII

तान्यकामतः—V. L. तानि धर्मतः (Vivādaratnākara, p. 635).

हार—V. L. हानि (Vivādaratnākara, p. 635).

VERSE CCXLIII

महापातकिनो—V. L. महापातकिनां

तेन दोषेण—V. L. तेनाधर्मेण (Vivādaratnākara, p. 637).

दोषेण—V. L. पापेन

VERSE CCXLIV

पपादयेत्—V. L. पकल्पयेत् (Vivādaratnākara, p. 637).

तं—V. L. तत् (Prāyashchittavivēka, p. 122).

श्रुतवृत्तोपसम्पन्ने वा—V. L. (a) श्रुतवृत्तोपसम्पन्ने; (b) श्रुतविद्योपसम्पन्ने
(Vivādaratnākara, p. 637).

VERSE CCXLV

राज्ञां—V. L. राज्ञो (Vivādaratnākara, p. 638).

दण्डधरो—V. L. दण्डधनो (Vivādaratnākara, p. 638).

P. 1238, l. 5—for किने read किनो as in S.

VERSE CCXLVI

पापकृद्भ्यो—V. L. ब्राह्मणेभ्यो (Vivādaratnākara, p. 638).

यत्र वर्जयते—V. L. यत्र च नियते

कालेन—V. L. लोके तु (Nandana).

P. 1239, l. 1—for माणश्च read माणं च

— l. 2—for विकृतिः read विकृतं

— „ —for चविहानम् read चिविहीनम्

VERSE CCXLVII

यथोक्तानि—V. L. यथोक्तानि (Vivādaratnākara, p. 638).

विकृतं न च—V. L. (a) विकृतिर्न च, (b) विकृतं च न

VERSE CCXLVIII

यैरुद्वेजनकरै—V. L. यैस्तमुद्वेजनकरै (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 396).

P. 1240, l. 1—for त्यागाः read त्यागैः

VERSE CCXLIX

तावान् वध्य—V. L. यावान् वध्य (Vivādaratnākara, p. 649).

धर्मस्तु विनियच्छतः—V. L. धर्मश्चैव नियच्छतः (do.)

P. 1240, l. 3—for राज्ञोऽप्रयु read राज्ञ उपयुं

— ll. 3-4—for प्रत्यवरोधेन read प्रत्यवायेना

— l. 4—for यच्छति read यच्छत इति

— l. 5—for संस्कारा read संहारा

— „ —for इष्टा read इष्टा

— l. 6—for दितियुक्तं read दित्युक्तं

— l. 7—for दोषः read उदोषः



VERSE CCL

उदितोऽयं विस्तरशो—V. L. उदितोविस्तरेणायं (Vivādaratnākara, p. 618).

हारस्य निर्णयः—V. L. हारविनिर्णयः (do.)

VERSE CCLI

धर्म्याणि कार्याणि—V. L. कार्याणि सर्वाणि (Vivādaratnākara, p. 618).

VERSE CCLII

निविष्टदेशस्तु—V. L. निविष्टदेशेषु

कृतदुर्गश्च—V. L. कृतदुर्गस्तु

P. 1241, l. 2—for तत्कृत्यं read तत्कृत्वा

VERSE CCLIII

P. 1241, l. 4—for आर्यवृत्तं read आर्यं

— „ —for कर्तव्येत read कर्तव्यं इत

— „ —for ते च read तेन

P. 1242, l. 2—for भावमात्रेण read भावमात्रं न

— l. 3—for पालनेपि read पालनमपि

— „ —for स्वराज read स्वराज्य

— l. 5—for दनार्य read दार्य

— l. 6—for नित्या तु read नित्याननु as in Mad.

— „ —for अथो read अतो

VERSE CCLIV

तस्य—V. L. यस्य

स्वर्गाच्च—V. L. स्वर्गात्स

VERSE CCLV

निर्भयं तु—V. L. निर्भयं हि (Vivādaratnākara, p. 294).
तस्य तद्वर्धते—V. L. तस्याभिवर्धते.
सिद्ध्यमानः—V. L. सेव्यमानः

VERSE CCLVI

हारकान्—V. L. हारिणः (Vivādaratnākara, p. 289).

VERSE CCLVII

तेषां—V. L. त्वेषां
त्वेते ये स्तेनाटविकादयः—V. L. (a) त्वेवं स्तेनाटव्यादयो जनाः
(Vivādaratnākara, p. 291).
(b) त्वेते स्तेनाटव्यादयो जनाः
(c) चैव स्तेना श्रटविका जनाः
(d) त्वेषां ये स्तेनाटविकादयः

P. 1243, l. 3—for तुलादिना read तुलाविशेषेण

— l. 4—for शकाः जवनिका read शवशुकाः वाणिजकाः

VERSE CCLVIII

श्रौपधिकाः—V. L. सोपधिकाः (Vivādaratnākara, p. 291).
उत्कोचकाश्रौपधिका वज्रकाः कितवास्तथा—V. L. उत्कोचकांश्रौपधिकान्
वज्रचकान् कितवास्तथा
भद्राश्रेष्ठणिकैः सह—V. L. (a) भद्राश्रेष्ठणिकैस्सह, (b) भद्राश्रेष्ठणिका-
स्तथा (c) भद्राश्रेष्ठणिकास्तथा, (d) भद्राश्रेष्ठणिकांस्तथा, (e) भद्राश्रेष्ठणिकैस्सह
(Vivādaratnākara, p. 291).

मङ्गलादेशवृत्ताः—V. L. मङ्गलादेशवृत्तान्

P. 1243, l. 6—for उत्कोचकार्येण read उत्कोचका ये

— l. 7—for वस्तन्य read वस्तन्य

— „ —for हटोपकारे read अपकारे

P. 1244, l. 1—for उपधावनग्रह read उपधिः । कितवा धनग्रह

P. 1244, l. 2—for न्यन्नस्था read न्यन्नोद्यथा

— l. 3—for नानाकारण read नाकारिणो

— „ —for ग्रामिणान् read ग्रामीणान्

— „ —for यान्त्युप read ये ह्युप

— l. 5—for आदेश read मङ्गलादेश

VERSE CCLIX

शिल्पोपचार—V. L. शिल्पोपकार

P. 1244, l. 8—for निपुणाश्रपकारे read निपुणाश्रोपचारे

VERSE CCLX

एवमाद्यान्—V. L. एवमादीन्

विजानीयात्—V. L. विजातीयान्

P. 1245, l. 1—for दान read दान् न

— l. 2—for न यदि read नयति

— l. 3—for मूर्खाद्यान् read मूर्खाभ्यान्

— „ —for वादि read वादी

— l. 4—for चारण read चारिण

— ll. 4-5— तुल्यकर्म.....कथयिष्यन्ति—all this should go under verse 261.

VERSE CCLXI

सुचरितैः—V. L. सु चरितैः (Vivādaratnākara, p. 293).

गूढैः—V. L. तैस्तै (Vivādaratnākara, p. 293).

प्रोत्साय—V. L. (a) प्रोत्साद्य (Vivādaratnākara, p. 293), (b)

प्रोत्साह्य, (c) प्रोत्सायं

VERSE CCLXII

भिख्याप्य—V. L. भिज्ञाप्य (Vivādaratnākara, Calcutta, p. 79).

The Bhāṣya on verse 262 to 273 is not available.

VERSE CCLXIII

निभृतं—V. L. निगूढं

VERSE CCLXV

जीर्णो—V. L. शीर्णो (Aparārka, p. 841).

VERSE CCLXVII

तत्सहायैरनुगतैर्नानाकर्मप्रवेदिभिः—V. L. तत्सहायैः स्वानुगतैर्नानाकर्मप्र-
वादिभिः

उत्सादयेन्—V. L. उत्साहयेत् (Govindarāja).

उत्सादयेच्छैव—V. L. उत्साहयेच्छैव

VERSE CCLXVIII

ज्योपदेशैः—V. L. (a) ज्यापदेशैः, (b) ज्यप्रदेशैः

VERSE CCLXIX

समित्र—V. L. सपुत्र

VERSE CCLXXI

वातयेत्—V. L. ताडयेत् (Vivādaratnākara, p. 339).

VERSE CCLXXII

राष्ट्रेषु रक्षाधिकृतान्—V. L. (a) राष्ट्रं पुरं वाधिकृतान्; (b) राष्ट्रेषु
राक्षाधिकृतान् (Aparārka, p. 850, Vivādaratnākara, p. 341).

अभ्याघातेषु—V. L. अभ्यागतेषु (Vivādachintāmaṇi, Calcutta,
p. 93).

द्रुतम्—V. L. द्रुतान्

चोदितान्—V. L. देशितान् (Vivādaratnākara, p. 341).

VERSE CCLXXIII

तमप्योषेत्—V. L. समाप्योषेत् (Vivādaratnākara, p. 625).

VERSE CCLXXIV

हिताभङ्गे—V. L. (a) इडाभङ्गे, (b) हिडाभङ्गे, (Aparārka, p. 850),
(c) तडागभङ्गे, (d) सेतुभङ्गे

नाभिधावन्तो—V. L. सनाभिधावन्तो (Aparārka, p. 850).

P. 1250, l. 2—for निर्वास्येना read निर्यास्येना as in N.

VERSE CCLXXV

कोपापहतृन्—is misprint for कोषापहतृन्

प्रातिकूल्येववस्थितान्—V. L. (a) प्रतिकूलेषु च स्थितान् (Aparārka, p. 853, Mitākṣarā 2. 302), (b) प्रतिकूलेववस्थितान् (Vivādaratnākara, p. 367), (c) प्रतिकूलेषु वा स्थितान्, (d) प्रतिकूल्येववस्थितान्

ररीणां—V. L. वीराणां (Vivādaratnākara, p. 367).

घातयेद्विविधैर्दण्डैररीणां चोपजापकान्—V. L. (a) अरीणामुपधावतो
घातयेद्विविधैर्वधैः; (b) अरीणां चोपजापकान्—हरेस्सर्वस्वमेव च (Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 395).

P. 1250, l. 3—for ज्ञाति read जाति

VERSE CCLXXVI

क्षित्वा—V. L. (a) कृत्वा; (b) मित्र्वा (Aparārka, p. 845).

तीक्ष्णे शूले—V. L. तीक्ष्णशूले (Mitākṣarā, 2. 275).

VERSE CCLXXVII

अङ्गुलीः—V. L. अङ्गुली (Vivādaratnākara, p. 321, Parāsharamādhava Vyavahāra, p. 302, Aparārka, p. 845).

प्रथमे ग्रहे—V. L. प्रथमागसि (Vivādachintāmaṇi, Calcutta, p. 87.)

VERSE CCLXXVIII

मोषस्य—V. L. मोचस्य

हन्यात्—V. L. शिष्यात्

चौरमिवेश्वरः—V. L. (a) चौराश्वरेश्वरः (Vivādaratnākara p. 338),
(b) चौरानिवेश्वरः (Aparārka, p. 849).

P. 1252, l. 1—for सीता read शीता

VERSE CCLXXIX

तडागभेदकं—V. L. (a) तडाकभेदकान्, (b) तडाकभेदकम्

यद्वापि—V. L. (a) तद्वापि, (b) तथापि

दाप्यस्तूत्तम—V. L. (a) दाप्यश्चोत्तम, (b) दद्याच्चोत्तम (Vivādaratnākara, p. 365).

The Bhāṣya on 280 and 281 is not available.

VERSE CCLXXXI

तडागस्य—V. L. तडाकस्य

VERSE CCLXXXII

अमेध्यं चाशु शोधयेत्—V. L. (a) अमेध्यं च प्रशोधयेत्; (b) अमेध्यानां च शोधनम्

P. 1253, l. 1—for दिनिं read दिभिर्नि

VERSE CCLXXXIII

तच्च—V. L. न तु (Aparārka, p. 765).

आपद्गतोऽथवा वृद्धो—V. L. (a) आपद्गतो वा वृद्धो वा; (b) आपद्गतस्तथा वृद्धो (Vivādaratnākara, p. 222).

P. 1253, l. 3—for शक्ता गृ read शक्तास्ते गृ

VERSE CCLXXXIV

P. 1254, l. 2—for वाऽनन्यरत read वाऽतत्परत

VERSE CCLXXXV

प्रतिकु—V. L. अनुकु (Vivādachintāmaṇi, Calcutta, p. 101).

पञ्च दद्यात्—V. L. दद्यात्पञ्च (Vivādaratnākara p. 363).

P. 1254, l. 4—before येन add संक्रमः

— „ for संक्रमध्वज read ध्वजः

— l. 5—for धीताप्रत्यापत्तिं read धीतप्रत्यासत्तिं as in Mad.

VERSE CCLXXXVI.

च दण्डः—V. L. तु दण्डः (Vivādachitāmaṇi, Calcutta, p. 100.)

अपवेधे—V. L. अपि वेधे

P. 1255, l. 2—for तेन कु read अकु

— „ —for अत्र वेधतिर्भेदने विद्यते read अवेधितप्रदेशेन विध्यते

— l. 3—for विचरे read विध्यते

VERSE CCLXXXVII

समाप्नुयात्—V. L. (a) स प्राप्नुयात् (Aparārka, p. 822), (b) सम्प्राप्नुयात् (Vivādachitāmaṇi, Calcutta, p. 80.)

मध्यममेव—V. L. मध्यम एव

P. 1255, l. 8—After समत्वेन add न

VERSE CCLXXXVIII

च सर्वाणि—V. L. च कष्टानि (Nandana.)

राजमार्गे निवे—V. L. (a) राजा मार्गे निवे; (b) वामार्गे विनिवे (Vivādaratnākara p. 630).

दुःखिता—V. L. दुःकृता

VERSE CCLXXXIX.

प्राकारस्य च भे—V. L. प्राकारस्यानुभे (Vivādaratnākara, p. 367.)

द्वाराणां भेत्तारं—V. L. द्वाराणां भेत्तारं (do.)

प्रवासयेत्—V. L. प्रमापयेत् (do.)

After (289) some Mss. have the following additional verse :—

एतेनैव तु कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः ।

कर्माण्यारभमाणं तु पुरुषं स्त्री निषेवते ॥

P. 1256, l. 4—for दुर्गता read दुर्गता

VERSE CCXC

चानासैः—V. L. (a) चानासैः; (b) चानासैः; (c) विद्वेषे (Aparārka, p. 821.)

(d) चानासै

P. 1256, l. 8—for भूताद्याधराः read भूतविद्याः as in F. N. as in Mad.

VERSE CCXCI

बीजोत्कृष्टा—V. L. (a) बीजात्कृष्टा, (b) बीर्यात्कृष्टा,
(c) बीजोत्कृष्टाः, (d) बीजोत्कृष्टः,
(e) बीजोत्कृष्टाः (f) बीजोत्कृष्टोः,
(g) बीजोत्कृष्टा, (h) बीजोत्कृष्टं (i), बीजोत्कृष्टी
(Vivādaratnākara, p. 296.)

विकृतं—V. L. विविधं

भेदकश्चैव—V. L. भेदनाश्चैव (Aparārka, p. 825.)

विकृतं प्राप्नुयाद् वधम्—V. L. प्राप्नुयाद् विकृतं वधम् (Vivāda-chitāmāni, Calcutta, p. 81.)

P. 1257, l. 1—for बिजानि read बीजानि

— 1. 2—for बीजं वत्क read बीजमुत्क



VERSE CCXCII

P. 1257, l. 8—for न्वाये read आवायं

VERSE CCXCIII

पहरणे—V. L. पहारे तु (Vivādaratnākara, p. 324).

प्रकल्पयेत्—V. L. प्रवर्तयेत्

P. 1258, l. 2—for कार्यं श्र read कार्यञ्च

— l. 3—for द्रव्य ज्ञानाप्यनु read द्रव्यजात्यनु

VERSE CCXCIV

सहाजं—V. L. (a) समस्तं, (b) समग्रं, (c) समस्ता (Viramirodaya.)

P. 1258, l. 10—for दिति read दिनेति

— „ —after प्रकृतिस्त्वेन add गुरुलघुभावश्च + प्राकृतीनामेवार्थ उच्यते । यदि महान् क्षोभो ऽमात्यादि राज्यप्रकृतिस्त्वेन

P. 1258, l. 11—for योध read शोध

P. 1259, l. 1—for मन्त्रि read मन्त्री

— l. 3—for कापालिनि read कपालानि

— l. 4—for योज्यो भेदः read यो भेदः

VERSE CCXCV

महत्—V. L. नृपः (Viramirodaya Rājanīti, p. 278).

P. 1259, l. 5—for स्वबलव्य read स्वव्य

— „ —for सुवर्ण read स्ववर्ण

— „ —for दयः read वृषडकोशयोः

— „ —for राट् read राष्ट्रयोः

— „ —for शकार्य read शङ्कार्या

VERSE CCXCVI

सहाजस्येव ह—V. L. सहाजस्यास्य (Vīramitrodaya, Rājanīti, p. 320).

विष्टब्धस्य—V. L. विश्रब्धस्य

P. 1260, l. 1—for दिव्यवष्ट read दिति । विष्ट

—— l. 2—after कैकस्य add न

—— l. 3—for तदनाद read तन्महताद्

VERSE CCXCVII

तुषे तु—V. L. तुषे हि

श्रेष्ठं—V. L. शिष्टं

VERSE CCXCVIII

कर्मणाम्—V. L. केवलम्

महीपतिः—V. L. (a) परात्मनः (b) परात्मनोः

P. 1261, l. 3—omit वा after कर्माणि

VERSE CCXCIX

आरभेत ततः कार्यं संचिन्त्य गुरुलाघवम् ।—V. L. गुरुलाघवतो ज्ञात्वा ततः कर्म समाचरेत् (Nandana).

P. 1261, l. 6—for क्रोध read क्रोधसमुत्थानि

—— l. 7—for समहीतं read समीहितं

VERSE CCC

P. 1262, l. 1—गीता (नृत्यगीता)...वेदितव्यानि—This should go under verse 299.

—— l. 2—for जानो पि read जा अन्योपि

—— „ —for जन read जान

—— „ —for वीयस्ते read वीयते



VERSE CCCI

P. 1262, l. 4—for शेषत read शेष

— „ —for सिद्धे: read सिद्धः

— „ —for वृत्तादि read वृत्तानि युगादि

VERSE CCCII

कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेता विचरंस्तु कृतं युगम्—V. L. (a) कर्मस्थोऽभ्युदितस्त्रेता
विकृतं सुकृतं युगम्

(b) धर्मस्थोऽभ्युदितस्त्रेता विकृतं सुकृतं युगम् ।

(c) कर्मस्थोऽभ्युत्थितस्त्रेता विकृतं सुकृतं युगम्

P. 1263, l. 1—for अनुष्ठान read अनुत्थान

— „ —for याना तिष्ठ read याननुतिष्ठ

— l. 2—for संपादा read संपदा

VERSE CCCIII

वायोश्च—V. L. वातस्य (Viramitrodaya Rājānīti, p. 19).

VERSE CCCIV

स्वं—V. L. तत् (Viramitrodaya Rājānīti, p. 19).

चरन्—V. L. चरेत्

VERSE CCCV

राज्ञान्—V. L. राज्यान्

निर्यं—V. L. सस्यक् (Nandana, Viramitrodaya Rājānīti,
p. 19).

VERSE CCCVI

नियन्तव्याः प्रजा—V. L. नियन्तव्यः सर्व (Viramitrodaya Rājānīti,
p. 19).

VERSE CCCVII

प्रजाः—V. L. सर्वे

P. 1264, l. 3—for राधेन read राधे

VERSE CCCVIII

वरुणैः यथा पाशैर्बद्ध एवाभिदृश्यते—V. L. वरुणैः पाशैश्च बध्यते
वारुणैर्नरः

एवाभिदृश्यते—V. L. एव हि दृश्यते

P. 1264, l. 4—for अवशङ्किता read अविशेषिता

— „ —for कार्य read अकार्य

VERSE CCCIX

चान्द्रवृत्तिको—V. L. चन्द्रवृत्तिको (Vīramitrodaya Rājanīti, p. 19).

P. 1265, l. 1—for निर्वाता आपन्न read निर्वात

VERSE CCCXII

युतो—V. L. युक्तो

P. 1266, l. 1—for हारः श्लो read हारश्लो

VERSE CCCXIII

ब्राह्मणान्—V. L. ब्राह्मणम् (Vīramitrodaya Rājanīti, p. 151.)

सद्यः सबलवाहनम्—V. L. समृत्यबलवाहनम्

VERSE CCCXIV

सर्वभक्ष्यो—V. L. (a) सर्वभक्षी, (b) सर्वभक्षा

चाप्यायितः सोमः—V. L. (a) चाप्यायितश्चेन्दुः



VERSE CCCXV

लोकानन्यान् सृजेयुस्ते—V. L. लोकानलोकान् कुर्युस्ते (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 151.)

VERSE CCCXVI

यानुपाश्रित्य—V. L. (a) यान् समाश्रित्य (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 151), (b) तान् समाश्रित्य

ब्रह्मैव च—V. L. ब्रह्म चैव (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 151).
येषां—V. L. तेषां

VERSE CCCXVII

The Vīramitrodāya (Rājanīti, p. 151) reads the verse as

प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथामिद्वैवतं महत् ।
एवं विद्वानविद्वान्श्च ब्राह्मणो दैवतं महत् ॥

P. 1268, l. 1—for नादिक्रि read दानादिक्रि as in S.

VERSE CCCXVIII

वर्धते—V. L. (a) पूज्यते (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 151);
(b) वर्तते

P. 1268, l. 3—for प्यविज्ञे read प्यनवज्ञे

VERSE CCCXIX

वर्तन्ते—V. L. वर्तते (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 151).

हि तत्—V. L. (a) महत् (b) हि सः

ब्राह्मणाः पूज्याः—V. L. ब्राह्मणः पूज्यो (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 151).

VERSE CCCXX

चक्रस्याति प्र—V. L. चक्रस्यापि प्र (Vīramitrodāya Rājanīti, p. 152).

स'शः—V. L. स'तः

P. 1268, l. 5—for लिहावस्था read लिहा: व्यवस्था

P. 1269, l. 2—after नाशकः add नैवम्

VERSE CCCXXI

P. 1269, l. 3—omit केनैवम्

— l. 5—for सर्वं read सर्वत्र

VERSE CCCXXII.

सम्पृक्त—V. L. संयुक्त (Viramitrodaya Rājanīti, p. 143).

चत्रं च—V. L. चत्रं तु

इह चामुत्र—V. L. इहामुत्र च

P. 1270, l. 1—for चत्रिय read चत्रं

VERSE CCCXXIII

पुत्रे राज्यं समासज्य—V. L. (a) पुत्रे राज्यं समासाय, (b) पुत्रे राज्यं समासज्य, (c) सुतं राज्ये समावेश्य

P. 1270, l. 3—for रजसा read जरसा

VERSE CCCXXIV

सदा युक्तो—V. L. समायुक्तो

P. 1270, l. 9 तदायु read सदा यु

— „ omit लोकेभ्यस्तत्परः

VERSE CCCXXV

P. 1271, l. 1—omit शूद्रेण

— „ for पचारे read पचारं

VERSE CCCXXVI

कृत्वा दारपरिग्रहम्—V. L. कृतदारपरिग्रहः (Madanapārijāta, p. 227).

P. 1271, l. 3—for नियुक्तः read नित्ययुक्तः

VERSE CCCXXVII

P. 1271, l. 5—for विका यै यां वद्धर्माय प्रीति read विकार्यै यावद्धर्मायापीति

VERSE CCCXXVIII

कामः—V. L. कामं

कथंचन—V. L. प्रयत्नतः

P. 1272, l. 2—for भुक्ष्य read भुष

— l. 4—omit यदा

— „ for प्रकृतिः read प्रवृत्तिः

VERSE CCCXXIX

विद्यादर्घ—V. L. विद्यादर्थ (Madanapārijāta, p. 227).

VERSE CCCXXX

बीजानामुसिर्विच्च—V. L. बीजोसिविधियुक्तः (Madanapārijāta, p. 227).

चेन्नदोषगुणस्य—V. L. चेन्नबीजगुणस्य

मानयोगं च—V. L. (a) मानयोगांश्च (Madanapārijāta, p. 227),
(b) जनयोगांश्च

P. 1273, l. 1—for मुच्यते...मुच्यते read मुप्यते...मुप्यते

VERSE CCCXXXI

गुणागुणान्—V. L. गुणागुणम् (Madanapārijāta, p. 227).

परिवर्धनम्—V. L. (a) च विवर्धनम् (Parāsharamādhava, 417),

(b) वृद्धिरर्जनम् (Madanapārijāta, p. 227).

P. 1273, l. 3—-for विक्रेयं read विक्रेय

VERSE CCCXXXIII

दद्याच्च—V. L. विद्याच्च (Madanapārijāta, p. 227).

अन्नमेव—V. L. भक्ष्यमेव (Madanapārijāta, p. 227).

VERSE CCCXXXIV

यशस्विनाम्—V. L. तयस्विनाम्

नैश्रेयसः—V. L. निःश्रेयसः (Madanapārijāta, p. 230).

VERSE CCCXXXV

सृदुवाग—V. L. सृदुःशान्तो (Parāsharamādhava Āchāra, 418)

ब्राह्मणापाश्रयो—V. L. (a) ब्राह्मणायाश्रयो, (b) ब्राह्मणोपाश्रयो
(Parāsharamādhava Āchāra p. 418).

P. 1275, l. 1—for शुचि read शुचिः

Adhyaya X

Before verse (1) some manuscripts add the following line :—

अतः परं प्रवक्ष्यामि अध्येतव्यस्य यो विधिः

VERSE I

P. 1277, l. 1—Before ग्रहणार्थं add वेदः कृत्स्नोऽधिगन्तव्यो सरहस्यो द्विजन्मनेति, as in A. N. S. & C.

P. 1277, l. —for वेदस्य वा read चा

— l. 7—for ज्ञाति read जाति

— l. 11—before तथा add उच्यते

— „ —for यत read अत

— „ —for तथा read यथा

— l. 12—for मेव read मेवं

VERSE III.

वर्णानां—V. L. सर्वेषां

P. 1278, l. 7—omit हृदयङ्गमाभिरित्यादि [ग्राम एव]

— l. 8—for रेकादशतो read रेकादशद्वादशयोः

VERSE IV

P. 1279, l. 5—for स्यादेवस्व read स्यात् एताश्च as in A. and N.

— „ —for युक्तो read युक्ता

— „ —for तार्थः read तार्थाः

— l. 7—for शङ्क्यते read शङ्क्येत

— l. 8—for मयं श्लो read परः श्लो

VERSE V

P. 1280, l. 4—for धर्मे read धर्मै: as in S. and A.

— „ —for शक्यं read शक्य

— l. 5—for भर्तृसं read सं as in S.

— l. 7—for तनय read तत एव य

— l. 9—for यद्यपि read यदपि

— „ —for पुनःपुनः read पुनः

— l. 12—for नाद्वेतु read नाद्वर्तु

— l. 13—for शब्दमपसार्य read शब्दपर्यायेण as in N. and A.

— l. 21—for प्रमाणं तैरेव read प्रमाणांतरञ्च as in S.

— l. 22—for श्लोकैः read श्लोको

— „ —for पुरुषा read सा as in S.

— „ —for भ्युप read प्युप

— l. 26—for वचनात्वात्त read वर्धनत्वम् । त

— l. 28—for केन read एकेन

— l. 27—for यदर्श read अदर्श

P. 1281, l. 5—for गारश्वाद्द्वैड read गौरश्वाद्द्वैड

— l. 10—for अन्तरेप्र read अन्तरप्र

— l. 14—for धर्माः read यज्ञ

— „ —for स्वीयो read क्षियो

— l. 16—for न्तरेण त्रित्व read न्तरत्व

— l. 20—for देव read देश



P. 1281, l. 20—for तदु read तद्यु as in S.

— l. 24—for ज्यत एवाप read ज्यते तत्राप as in S.

— „ —for च सच read वचनम्

— l. 26—for तासु read तास्तु

— „ —for वाद्यत्वं ध read वान्वयध

P. 1282, l. 2—for तद्वा read तदवा

— l. 4—for तस्त्वत read तस्तत

— l. 5—for द्यते read द्यते

— l. 6—for स्तिमे read स्थितमे

VERSE X

P. 1285, l. 2—for सदा read अपसदा

— „ —for फलदा अपशीर्षाः read फलादवसत्ताः

— „ —for भिद्यन्ते read निन्द्यन्ते

VERSE XI

P. 1285, l. 3—for म्ये नत्त्व read म्येन त्व

VERSE XII

शूद्रादायोगवः—V. L. (a) शूद्राचायोगवः, (b) शूद्रादयोगवः

चाण्डालश्चा—V. L. चाण्डालस्त्व

वर्णसंकराः—V. L. (a) वर्णसंकरे

जायन्ते वर्णसंकराः—V. L. जायते वर्णसंकरः

VERSE XIII

यथा—V. L. तथा

प्रातिलोम्येपि—V. L. (a) प्रातिलोम्ये तु, (b) प्रातिलोम्येन

P. 1286, l. 4—for न त्वध्ययनादिषु read न तु यजनादिषु as in S.

—— l. 5—for कीर्तिरलोके read कीर्तिश्लोके as in S.

—— „ —for एवं read एव.

—— „ —for चण्डाल read चण्डालवद्

VERSE XIV

P. 1287, l. 1 for न्तरानाम्नः read न्तरनाम्ना

—— l. 2—Omit या before जातिः

—— l. 3—for तदर्थेवद् read न ह्येतद् as in A.

—— l. 4—for दोषाः read दोषः

VERSE XV

P. 1287, l. 5—for स्मिंश्लोकेन read स्मिंश्लोके न

VERSE XVII

एव तु—V. L. एव वा

VERSE XVIII

पुक्कसः—V. L. (a) पुक्कसः, (b) पुक्कसः

VERSE XIX

वत्तुर्जातस्तथोग्रायां—V. L. उग्रात्तु जातो वत्तायां

तथोड्यायां—V. L. तथोड्यां च

वेण—V. L. वेन.

कीर्त्यते—V. L. कीर्तितः (Parāsharamādhava Prāyashchitta,

VERSE XX

जनयन्यव्रतांस्तु तान्—V. L. (a) जनयन्यव्रतान् सुतान् (b) जनयन्यव्रतायां
(noted by Medhātithi, who does not mention any such var.
lec. as 'avratāḥ' as wrongly asserted by Buhler.

व्रात्यानि विनिर्दिशेत्—V. L. व्रात्यानित्यभिनिर्दिशेत्

VERSE XXI

भृजकण्टकः—V. L. (a) भूर्जकण्टकः (b) भूत्यकण्टकः (c) भृच्यकण्टकः.

वाढधानौ—V. L. (a) वाढधानौ, (b) वाढधानौ

पुष्पधः शैख एव च—V. L. (a) पुष्पशैखर एव च, (b) पुष्पः
शैखकस्तथा, (c) पुष्पशेखर एव च, (d) पुष्परेषरएव च, (e) पुष्पवसैशखस्तथा,
(f) पुष्पशीबक एव च.

VERSE XXII

व्रात्यालिच्छिवि—V. L. (a) व्रात्यालिच्छिवि, (b) व्रात्यालिच्छिवि, (c)
व्रात्यालिच्छिवि

VERSE XXIII

कारुषश्च—V. L. पारुषश्च

विजन्माच—V. L. निजङ्गश्च

VERSE XXIV

जायन्ते वर्णसकराः—V. L. जायते वर्णसकरः

P. 1290, ll. 2-3—for तास्वयं read स्वयं

—— l. 3—for चन्न read चान्न

—— l. 4—Before केचित् add इति

VERSE XXVI

चाण्डालश्च V. L. चाण्डलस्तु

VERSE XXVII

जनयन्ति स्वयोनिषु—V. L. जनयन्ति विगर्हितान्

मातृजात्याः—V. L. (a) मातृजात्यां, (b) मातृजातौ noted by Medhātithi.

मातृजात्यां प्रसूयन्ते प्रवरासु च योनिषु—V. L. मातृजातौ स्वयोन्यां तु सदृशं जनयन्ति वै (Govindarāja).

P. 1292, l. 1—for योनि read योनिषु

—— l. 3—for स्वष्टां read स्वष्ट्यां

—— „ —for शानैव read शानेव

—— l. 4—for वर्णयो read स्वयो

—— l. 6—for प्रतिजोम read प्रकृतप्रतिजोम

—— „ —for प्रसूयत read एत

—— l. 7—for ज्ञेय read ज्ञेयं

—— „ —for दृष्टमयो read नष्टमयो

—— l. 8—for लोम्यं च सा read लोम्य सा

—— „ —for शेषमनपेक्ष read शेषापेक्षा

VERSE XXVIII

स्वयोन्यां तु—V. L. स्वयोन्यां च

बाह्येष्वपि क्रमात्—V. L. (a) बाह्येष्वपि क्रमः (b) बाह्येष्वपि क्रमः

अनन्तर्याम्—V. L. अनन्तर्याम्

P. 1293, l. 2—for द्वायोरा read द्वायोरा

—— l. 3—for उपनयं न read उपनयनं

—— „ —for लोमता read लोमाजाता

VERSE XXIX

P. 1294, l. 1—for वृत्रिया read वृत्रजाया

— „ —for वृत्रा read वृत्रा

— l. 2—for वृत्रियाया read वृत्रजायाया

— l. 3—for ण्डालाभ्य; read ण्डाल्याम्

VERSE XXX

P. 1294, l. 4—for बाह्यतरेण बाह्याजाताः read बाह्यतरोत्पत्तिर्वर्णिता

VERSE XXXI

P. 1295, l. 2—for लोमाशू read लोमाः शू

— l. 4—After केचिद्धीनाः add केचिद्धीनाः

— l. 6—for वृत्रियचाण्डाला अपि read वृत्रचाण्डालापि

— l. 7—for श्याग्र read श्यग्र

— l. 12—for भवन्ति read भवन्तः

VERSE XXXII

दासजीवनम्—V. L. (a) दास्यजीवनम्, (b) दास्यजीविनं

सैरन्ध्रं—V. L. (a) सैरिन्ध्रं, (b) सैरन्ध्रं

P. 1296, l. 2—for लाभकर्मकार्य read लोभात् कर्मकारि

— l. 3—for वृत्तिवार्द्ध read वृत्तिं द्वि

P. 1297, l. 1—for शरण्य read रा शरण्य

— l. 2—omit वर्णकः, not in S.

VERSE XXXIII

मैत्रेयकं—V. L. मैरेयकं noted by Medhātithi.

P. 1297, l. 5—for अतस्तं read अजसं

— „ —for बन्दाति read बन्दीति

— l. 6—for वायं ज read वामुं ज

VERSE XXXIV

मार्गवं—V. L. मागधं

VERSE XXXV

मृतवस्त्रभृत्स्वनार्यासु—V. L. (a) मृतवस्त्रभृत्सुनारीषु, (b) मृतवस्त्रा-
स्वनार्यासु

पृथक् त्रयः—V. L. पृथक्क्रियाः

VERSE XXXVI

वैदेहिकात्—V. L. वैदेहकात्

P. 1299, l. 2—for निषाद्यौ read निषाद्योः

— „ —for देह्यामि read देहयात् मि

— l. 3—for भेदे क read भेदेन चैक

VERSE XXXVII

P. 1299, l. 4—for हारत्वात् read हारवान्

VERSE XXXVIII

चाण्डालेन—V. L. चण्डालेन

तु सोपाको—V. L. च सोपाको

पुक्त्यां—V. L. (a) पुत्कस्यां, (b) पुष्कस्यां

P. 1300, l. 1—for तद्वस्वादि read तद्वस्त्रादि

VERSE XXXIX

P. 1300, l. 4—for न्तावसा read न्यावसा

—— l. 5—for दिवृत्ति read दिवृत्तिः

—— „ —Omit राहारादिति.....तीय एवसे

VERSE XLI

स्वजातिजान्—V. L. सजातिजान्—

षट् सुता—V. L. (a) षडुक्ता, (b) षड्गुणा

P. 1301, l. 1—for तीयास्तु read तीयासु

—— l. 5—omit धर्मिण...नीयः, not in A. S. and N.

VERSE XLII

प्रभावैस्तु—V. L. (a) प्रभावैश्च, (b) प्रभावेण

P. 1302, l. 2—for ब्राह्मणजात read ब्राह्मणाजात

VERSE XLIII

ब्राह्मणातिक्रमेण—V. L. ब्राह्मणादर्शनेन

P. 1302, l. 3—for तथो read यथो

VERSE XLIV

पुण्ड्रकाः—V. L. (a) पौण्ड्रकाः, (b) पौण्ड्रकाः, (c) चान्द्रकाः, (d) चान्द्रकाः

चौड—V. L. (a) चौड, (b) सोड, (c) चोण्ड, (d) चाड, (e) चौल, (f) चोल, (g) चोड, (h) चौड

पल्लव—V. L. पल्लव (b) पल्लव

दरदाः खसाः—V. L. दरदास्तथा

P. 1303, l. 5—for न तमि read न जुनमि

VERSE XLVI

P. 1304, l. 2—for आत्मानो read आत्मानं

— „ —after न्दितानि add तथा च वक्ष्यते which appears wrongly in line 3.

VERSE XLVIII

आयोगवस्य च—V. L. आयोगवस्य तु

मद्गु—V. L. मंछु

चुञ्चु—V. L. (a) चूचु, (b) वूच, (c) भूभु, (d) चञ्चु

P. 1304, l. 5—for त्वाष्टि read त्वष्टि

VERSE XLIX

पुष्कसानां—V. L. (a) पुष्कसानां, (b) पुष्कसानां

वेद्यानाम्—V. L. वैद्यानाम्

VERSE L

P. 1305, l. 4—for वसेद्यः read वसेयुः

— „ —for विज्ञातोविज्ञाति read विज्ञाताजाति

VERSE LI

अवपान्नाश्च—V. L. (a) अवपान्नाश्च, (b) अयःपान्नाश्च

P. 1305, l. 4—for पान्नाय read पान्नाः

— l. —for शक्तेषु read सक्तेषु

P. 1306, l. 1—for तद्गृहीयुः read ते गृहीयुः

— l. 2—for गर्दभ read गर्दभं

VERSE LII

मृतचेलानि—V. L. मृतचेलानि

भिन्नभाण्डे च—V. L. भिन्नभाण्डेषु



VERSE LIII

मिथस्तेषां—V. L. मिथश्चैषां

VERSE LIV

P. 1307, l. 1—Omit राजाविति

VERSE LV

P. 1307, l. 4—हित read हिता

VERSE LVI

शय्याश्वा—V. L. शय्याश्वा

VERSE LVII

P. 1307, l. 7—for द्ददृष्टव्यम् read द्दभष्टम्

VERSE LIX

P. 1308, l. 3—for मात्मयिं read मात्मीयं

— „ —for गृहा read निगृहा

VERSE LX

यस्य—V. L. यदि

P. 1309, l. 1—for खलोके read लोके

VERSE LXI

राष्ट्रिकैः—V. L. राष्ट्रियैः

VERSE LXII

गवाध वा—V. L. गवार्ये च

खीनालाभ्युपपत्तौ—V. L. (a) खीनालाभ्यवपत्तौ, (b) खीनालाभ्यववत्तौ

P. 1309, l. 4—for त्वमेव read त्वादेव

VERSE LXIII

अस्तेयं—V. L. अक्रोधः

एतं—V. L. (a) एवं, (b) एकं

सामासिकं—V. L. स्वाभाविकं

चातुर्वर्ण्यं—V. L. वर्ण्यं

P. 1310, l. 3—for ण्येयं read ण्य

— l. 4—for स्तेषा read तेषा

— l. 5—for गमस्तेषामुत्पन्नः read गमात्तेषामुत्पन्ना

— „ —for तिर्नोध read तिर्ध

— l. 7—for तेऽति read ते ते

Between the two halves of 63, some Mss. have the following additional lines:—

श्राद्धकर्मातिथेयं च दानमस्तेयमार्जवम् ।

प्रजनं स्वेषु दारेषु तथा चैवानुसूयता ॥

VERSE LXIV

P. 1310, l. 10—for पित्र्यर्थे योगता read उपत्यर्थयोगता

P. 1311, l. 3—for से सति read सेति

— l. 6—for आश्रया read अश्रेया

— l. 7—for एष एवार्थः read व्यापकार्थः

VERSE LXV

एवं तु—V. L. एवं च

P. 1312, l. 2—Omit एते

— „ —for प्राप्तं read प्राप्ता

VERSE LXVI

श्रेयस्त्वं कस्यचिद्भवेत्—V. L. (a) श्रेयस्त्वं क्वेतिचेद्भवेत्; (b) श्रेयस्त्वं केतिचेद्भवेत्; (c) श्रेयस्त्वं केतिचिद्भवेत्; (d) श्रेयान् कस्त्वनयोर्भवेत्; (e) श्रेयस्त्वं नेति चेद्भवेत्

VERSE LXVII

P. 1313, l. 4—for एवमन्यत्र read एव, नान्यत्र as in S.

VERSE LXVIII

P. 1313, l. 5—for पाराश read पारश

— „ —for हेतुम read हेतुव

— l. 6—for पूर्वं read पूर्वः

VERSE LXX

अन्ये—V. L. एके

P. 1314, l. 4—for त्रिषु read त्रीषु

— „ —for क्षेत्र read क्षेत्रं

— l. 6—for स्थितिः read स्थितं

VERSE LXXI

P. 1315, l. 2—for भवेत्केवलं read भवेत् खिलमेव

VERSE LXXII

P. 1315, l. 5—for यदाशक्यन्ते read यदा शक्यते

VERSE LXXIII

नासमाविति—V. L. तामसागतिः

P. 1316, l. 1—for द्विजा read द्विजा

— 1. 3—for बुद्ध्वा read बुद्ध्या

— 1. 4—for शूद्रस्तुल्यः स्यात् read शूद्रस्तुल्यो न स्यात्

— „ —for समौ read नासमौ

VERSE LXXIV

स्वकर्मण्यवस्थिताः—V. L. स्वकर्मण्यवस्थिताः

P. 1316, l. 9—for विकारं read धिकारं

VERSE LXXV

यजनं याजनं—V. L. याजनं यजनं

ग्रहरचैव षट् कर्माण्यग्रजन्मनः—V. L. ग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्
(Viramitrodaya Paribhāṣā, p. 45).

VERSE LXXVI

P. 1317, l. 4—for कर्मसु read कर्म

— 1. 5—for अपि चा read अपि वा

VERSE LXXVII

निवर्तन्ते—V. L. निवर्तेरन्

ब्राह्मणान्—V. L. (a) ब्राह्मणः, ; (b) ब्रह्मा वै ; (c) ब्राह्मणा

VERSE LXXVIII

प्रतिहितान्धमान्—V. L. प्रति तथैतानि

VERSE LXXIX

पशुकृषिः—V. L. पशुकृषी (Mitākṣarā, 1. 119).

P. 1318, l. 3—for वणि read वणिक्

— l. 4—omit वणिक्

VERSE LXXX

च रक्षणम्—V. L. तु रक्षणम्

P. 1319, l. 1—for स्वकर्मशास्त्रप्रवृत्ति read स्वकर्मसु । शास्त्रीयवृत्ति

VERSE LXXXI

स ह्यस्य—स त्वस्य (Viramitrodaya Rājanīti, p. 13)

प्रत्यनन्तरः—V. L. प्रत्यनन्तरम् (Madanapārijāta, p. 231).

P. 1319, l. 3—for प्राप्तं read पर्याप्तं

— l. 6—for निवृत्तिः read वृत्तिः

— „ —for कारी read करी

— „ —for शस्त्रा read शास्त्रा

— „ —for शेषो read शेषा

— l. 7—after शुद्धैश्वरीति add तथा चाह from line 8 below.

VERSE LXXXII

P. 1319, l. 8—omit तथा चाह here.

— l. 9—for वणिग् व्यायामविक्रय read वणिज्यायामविक्रय

— l. 11—for ना स्व read चास्व



VERSE LXXXIII

हिंसाप्रायां—V. L. हिंसाभयात् (Parāsharamādhava Āchāra, p. 426).

P. 1320, l. 3—for स्तस्याम read स्तस्याः प्र

— „ —for स्यापद्यते read स्या आपद्यते

VERSE LXXXIV

P. 1320, l. 5—for न तु तद्युक्तं read यदुक्तम्

— l. 9—for काष्ठवत् read काष्ठहत्या

— „ —for अनुभवन्ती read अनुभूतं

— „ —for सर्व read सर्वैः

VERSE LXXXV

P. 1321, l. 1—for क्रयं read क्रयं

— „ —for दाना read दाना

— l. 3—for भावा read स्वभावा

— „ —for नैपुण्यं read नैपुण्यं

— l. 4—for गर्हिता read गर्हिततरा as in S.

— „ —after कृषिः add ततो न्यूना वाणिज्या as in S.

— „ —for चादयः read चा as in S.

VERSE LXXXVI

अपोहेत—V. L. व्यपोहेत (Madanapārijāta, p. 232).

P. 1321, l. 7—for तथा read यथा

P. 1322, l. 1—for स्वारण्याः read स्या स्वारण्याः



VERSE LXXXVII

P. 1322, l. 4—for माजिना read माविका

VERSE LXXXVIII

अयः—V. L. अयः (Samskāramayūkha, p. 123).

चिरं—V. L. चारं (Nārāyaṇa).

चौद्रं—V. L. चारं (Nandana).

P. 1323, l. 2—for मृद्धि read मृद्धीका

— l. 3—for वेधेनि read वेधनि

VERSE LXXXIX

नीलीं—V. L. (a) नीलिं ; (b) नीलं (Madanapārijāta, p. 232).

मथं—V. L. मजां

च लाचां च—V. L. बलाकां च (Madanapārijāta, p. 232).

सर्वाश्चैकशफांस्तथा—V. L. (a) सर्वानेकशफांस्तथा, (b) सर्वाश्चैकशफान् पशून्, (c) सर्वाश्चैकशफान् बहून्, (d) द्विशफैकशफांस्तथा (Madanapārijāta, p. 232).

P. 1323, l. 6—for अश्वाअश्वत read अश्वाश्वत

After 89 some Mss. have the following additional verse:—

अपुसीसं (से) तथा लोहं तैजसानि च सर्वशः ।

बालांश्चर्मं (पाशाश्चर्मं) तथास्थोनि सस्नायूनि च वर्जयेत् (वसास्नायूनि रोचनाम्) ॥

VERSE XC

कामं—V. L. हस्तं

शुद्धान्—V. L. शुद्धान्

P. 1323, l. 10—for रेणागामी बहु read रे चागामिनि बहु

P. 1324, l. 1—for अचिर read चिर

— l. 2—for यवतिलानविक्रीयन्ते read यत्र तिलान् विक्रीयन्ते

— l. 3—for व्रथा read व्रीथा

ERSE XCI

दानात्—V. L. यानात् (Samskāramayūkha, p. 124).

कृमिभूतः—V. L. कृमिभूत्वा

श्वविद्यायां—V. L. (a) स्वविद्यायां, (b) स विद्यायां (Parāsharamādhava Āchāra, p. 431), (c) च विद्यायां

For the second line some Mss. read—कृमिर्भवति विद्यायां कर्मणा तेन पापकृत्

P. 1324, l. 9—for युक्तं read न युक्तम्

— „ —for स्थाना read स्नाना

VERSE XCII

शूद्रो भवति—V. L. शूद्रीभवति

चीरविक्रयात्—V. L. चारविक्रयात्

VERSE XCIII

इतरेषां तु पण्यानां—V. L. इतरेषामपण्यानां (Mitākṣarā—3. 40).

निगच्छति—V. L. निगच्छति

VERSE XCIV

रसैः—V. L. तिलैः (Nandana and noted by Medhātithi).

च कृतान्नेन—V. L. (a) चाकृतान्नेन (Aparārka, 933 noted by Mitākṣarā), (b) वाकृतान्नेन (Madanapārijāta, p. 233).

P. 1325, l. 4—for अन्येन read अन्तेन

— l. 5—for पायसादिना read पायसापूयादिना

— l. 6—for गौतमेनैवं दर्शितम् read गौतमो भेदं दर्शयति s
in N. and A.

VERSE XCVI

लोभात्—V. L. मोहात्

कर्मभिः—V. L. जातिभिः (Vivādaratnākara, p. 363).

VERSE XCVII

वरं—V. L. श्रेयान्

परधर्मेण जीवन् हि—V. L. परधर्माश्रयाद् (Mitākṣarā, 3. 41).

सद्यः—V. L. विप्रे (Samskāramayūkha, p. 123).

न पारक्यः स्वनुष्ठितः—V. L. (a) परधर्मास्वनुष्ठितात् (Madanapārijāta, p. 233), (b) परधर्मात् स्वधिष्ठितात्

VERSE XCVIII

P. 1327, l. 6—for तदुक्तं read तदयुक्तं

— l. 7—for सर्वं शे read सर्वशे

VERSE XCIX

शूद्राः—V. L. शूद्रः (Madanapārijāta, p. 233).

पुत्रादारात्यर्थं प्राप्तो—V. L. (a) पुत्रदारात्यये प्राप्ते, (b) पुत्रदारात्ययप्राप्तो (Madanapārijāta, p. 233).

VERSE C

प्रचरितैः—V. L. सुचरितैः

P. 1328, l. 2—for यत्र छेद read पत्रच्छेद

VERSE CI

स्ये पथि—V. L. स्वपथि

अवृत्ति—V. L. स्ववृत्ति (Aparārka, p. 935).

P. 1328, l. 5—for वृत्तिर read वृत्तिम

— l. 6—for कश्चित read कश्चितः

— „ —for अनुयान् read अनुवन्

VERSE CII

दुष्यतीत्येतत्—V. L. दुष्यते ह्येतत् (Smṛtitattva II. p. 362).

P. 1329, l. 2—for गेण read गे न

VERSE CIII

गर्हितात्—V. L. ऽगर्हितात् (Parāsharamādhava Āchāra, p. 183).

ज्वलनाम्बुसमा—V. L. ज्वलनार्कसमा (Parāsharamādhava Āchāra, p. 183).

P. 1329, l. 4—for युक्तो read उक्तो

— „ —for ज्ञायेति read ज्ञायेते

— l. 6—for एवं read एव

— l. 7—for देव वा read देकवा

— l. 8—for सत्प्र read ऽसत्प्र

— „ —for प्रभृतिः read प्रवृत्तिः

VERSE CIV

यतस्ततः—V. L. ह्यतस्ततः (Yatidharmasaṅgraha, p. 75).

For the second line the Samskāraratnamālā reads—लिप्यते
न स पापेन पद्मपत्रसिवाम्भसा

जीविताख्य—V. L. जीवनाख्य (Aparārka p. 935).

पापेन—V. L. दोषेण (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 326).

P. 1329, l. 10—for प्रतिग्र read परिग्र

— „ —for कर्माक्षदपे read कर्मानपे

— l. 11—for दश्च read दः



VERSE CV

पापेन—V. L. दोषेण (Aparārka, p. 935).

P. 1330, l. 1—for शुनः । शेष read शुनःशेष

— l. 2—for प्रकृति read परकृति

VERSE CVI

परिरक्षार्थ—V. L. रक्षणार्थाय (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 326).

VERSE CVII

विजने—V. L. निर्जने (Parāsharamādhava Prāyashchitta p. 326).

बृधोः—V. L. (a) बृधोः (b) बृहत्

VERSE CIX

तथैवा—V. L. तथा वा (Aparārka, p. 935).

VERSE CX

शूद्रादपि—V. L. शूद्रस्यापि

VERSE CXI

ध्यापनैः कृतम्—V. L. ध्यापनात् कृतम् (Aparārka, p. 936).
P. 1332, l. 1—for ते च वक्ष्यति read तेन न वृत्तिः

VERSE CXII

P. 1332, l. 4—for ग्रहः स read ग्रहस्य

— ll. 5-6—for ग्रहणं ग्रहास्त्वग्र read ग्रहणोऽनस्त्वग्र

— l. 6—for लोम्बः read लोम्बं

P. 1332, l. 6—for वृत्तिरि read वृत्तिर

— „ —for किञ्चित्स्यात् read किञ्चित्साभ्यम्

— l. 7—for पपन्नेन read पपन्नो न

— „ —for कुर्वीतयमिति read कुप्यतीत्यमिति

VERSE CXIII

P. 1333, l. 2—for न्यत्र read न्यद्

— „ —for निमित्तैः read विप्रैः

— l. 4—for दित्सन्नया read दित्सन् या

VERSE CXV

P. 1334, l. 2—for निबन्धा read बन्धा

— l. 3—for तदीय read तद्वाय

— l. 6—for पञ्चवर्णेषु read षः । सर्ववर्णेषु

— l. 8—for प्रयोगः read योगः

— „ —Omit आवर्जनः not in S.

VERSE CXVI

वृत्तिः—V. L. गिरिः (Aparārka, p. 936 and Mitākṣarā, 3.42, and Nandana).

मैद्वयं—V. L. मैत्रं

गोरक्षं—V. L. गोरक्षा (Mitākṣarā, 3. 42).

P. 1335, l. 3—for वृत्ति read वृत्त्य

— „ —for मात्रे read मात्र

VERSE CXVII

ऽल्पिकाम्—V. L. ऽल्पकम्

VERSE CXVIII

भागमापदि—V. L. भागमहंति

VERSE CXIX

नाहवे—V. L. (a) न भये, (b) न भवे

वैश्यात्—V. L. वैश्यान् (Viramitrodaya Rājanīti p. 263).

VERSE CXX

विंशं कार्षापण्यावरम्—V. L. (a) विंशत्कार्षापण्यावरम् ;

(b) विंशत्कार्षापण्यापरम्

(c) त्रिंशत्कार्षापण्यावरम्

P. 1337, l. 1—for व्यवहारिणः शूद्राः read व्यवहारिणां लाभदष्टमो
भागो ग्रहीतव्यः । विट्शब्दः प्रजावचनः । हिरण्यव्यवहारिणां विंशतितमः ।
कर्मापकरणाः शूद्राः as in S.

VERSE CXXI

वृत्तिमाकाञ्चन्—V. L. वृत्तिमाकाञ्चेत्

आराधयेद्यदि—V. L. (a) आराधयेदिति, (b) आराधयेदपि

जिजीविषेत्—V. L. जिजीविषुः

VERSE CXXII

P. 1338, l. 3—after त्युक्तं add भवति

— ” —for यमिति...विष्टं कर्मैष read यमिति । यदाऽस्य एष

— l. 4—for यदस्य read यदास्य

VERSE CXXIII

कीर्त्यन्ते—V. L. कथ्यन्ते (Parāsharamādhava Āchāra, p. 421).

भवत्यस्य—V. L. भवेत्तस्य (do.)

VERSE CXXV

P. 1339, l. 7—for पुलका read पुलका

VERSE CXXVI

P. 1340, l. 6—for न युज्यते read युज्यते

VERSE CXXVII

धर्मोऽसवस्तु—V. L. धर्मैश्चरन्ति (Smṛtitattva II, p. 381).

धर्म—V. L. (a) वृत्ति (Smṛtitattva II, p. 381); (b) वृत्तं

मन्त्रवर्ज्य—V. L. मन्त्रवर्ज (Shāntimayūkha, p. 2).

P. 1340, l. 9—for अतस्ता read अतस्ते

— „ —for शंसा read शंसां

— l. 7—for आय read अय

— „ —for विधयाधानाक्षप read विधानादग्न्याधानाक्षेप as

in S.

VERSE CXXX

एते—V. L. एवं

VERSE CXXXI

चातुर्वर्ण्यस्य कीर्तितः—V. L. (a) चातुर्वर्ण्ये प्रकीर्तितः

(b) चातुर्वर्ण्यः प्रकीर्तितः

(c) चातुर्वर्ण्याः प्रकीर्तिताः

Adhyaya XI

[The corrections are based mainly upon S. and N.]

VERSE I

यक्ष्यमाण—V. L. यक्षमाण (Madanapārijāta, p. 468).

सर्ववेदसम्—V. L. सार्ववेदसम् (Hemādri-Dāna, p. 30).

गुर्वर्थं पितृ—V. L. गुर्वर्थपितृषु (Madanapārijāta, p. 429).

स्वाध्यायाथ्युपतापिनः—(a) स्वाध्यायाद्युपतापिनः (b) स्वाध्यायाथ्युपतापिकः
(Madanapārijāta, p. 468).

P. 1343, l. 1—for स्नातकविशेषेण read अनेकविशेषेण

— „ —for नार्थो read नार्थी

— l. 5—for वस्य read यस्य

— „ —for यथो read यथा

— l. 9—for निश्चित्य निर्वचनेभ्यो read निःस्वेभ्यो निर्वचनेभ्यो

VERSE III

एतेभ्योहि—V. L. (a) एतेभ्योऽपि

द्विजाग्नेभ्यो—V. L. द्विजाग्नेभ्यो

P. 1344, l. 2—for तथापि read तथाहि

VERSE IV

ब्राह्मणान् वेदविदुषः—V. L. (a) ब्राह्मणो वेदविदुषे, (b) ब्राह्मणो वेदविदुषि
(c) ब्राह्मणोभ्यश्च विद्वद्भ्यः

दक्षिणाम्—V. L. दक्षिणाः

P. 1345, l. 3—for पदेश read पदेशः

After verse V some MSS. have the following additional verse.

वृद्धो च मातापितरौ साध्वी भार्या सुतः शिशुः ।
अपकार्यशतं कृत्वा भर्तव्या मनुब्रवीत् ॥

Which occurs in Māṇḍalik's Edition after verse 10. It is quoted by Medhātithi under 2. 189. and Kulluka has the following, which is omitted by all other commentators—

धनानि तु यथाशक्ति विप्रेषु प्रतिपादयेत् ।
वेदविष्णु विविक्तेषु प्रेत्य स्वर्गं समश्नुते ॥

Māṇḍalik has treated this as text and numbered it 6. We have decided to omit it. But we retain the numbering of Māṇḍalik's Edition (cf. Bühler, Burnell etc.)

VERSE VII

भक्तं—V. L. वित्तं (Parāsharamādhava Āchāra, p. 157).

अधिकं वाऽपि—V. L. अतोऽधिकं वा

P. 1346, l. 2—for नुक्त read उक्त

VERSE IX

दुःखजीविनि—V. L. दुःखपीडिते

सधर्म—V. L. स धर्मे

मध्वापातो—V. L. मध्वापानो

P. 1347, l. 1—for वदति read ददाति

— l. 3—for सदशो read धर्मसदशो

VERSE X

यत्—V. L. यः

वेदिकम्—V. L. वैदिकम्

जीवतश्च—V. L. जीवतोऽस्य

VERSE XI

P. 1348, l. 1—for वैश्या read हिरण्या

— l. 2—for विनिमये read विनिमयेन

— „ —for न च read ननु च

— l. 3—for चादः read ह्यादुः

— „ —for वाप read चाप

— l. 4—for विशेषेण निर्वच read विशेषेणेति वच

— l. 7—for कुतः read हीनक्रतुः

— l. 8—for सत्यमसो read सत्यप्यसो

VERSE XIII

P. 1349, l. 5—for कस्या read कत्वा

— „ —for सा, read शास्त्राद् या चैवतिचेत्ययमेव

VERSE XIV

तयोः—V. L. द्वयोः

VERSE XV

तथा—V. L. यथा

प्रवर्धते—V. L. (a) विवर्धते, (b) प्रवर्तते

P. 1350, l. 4—for आदा read अदा

VERSE XVI

सप्तमे भक्ते—V. L. सप्तमं भक्तं (Aparārka, p. 938).

VERSE XIX

P. 1352, l. 3—After यस्यापहरति add यस्मै च प्रवेच्छति

VERSE XX

यद्धनं—V. L. धनं यद्

VERSE XXII

तस्य—V. L. तस्माद्

प्रकल्पयेत्—V. L. च पालयेत्

VERSE XXIV

यजमानो हि भिक्षित्वा—V. L. भिक्षित्वा यजमानो हि

कर्हिचित्—V. L. धर्मवित् (Parāsharamādhava, p. 155).

VERSE XXV

यो न सर्वं—V. L. यः सर्वं न (Mitākṣarā, 1. 127).

VERSE XXVI

ब्राह्मणस्वं वा—V. L. ब्राह्मणस्वं च

लोभेनोपहिनस्ति यः—V. L. लोभेनापहरेत्तु यः

P. 1354, l. 6—after गच्छत्येव add किन्तु

— „ —Before धनं add यद्

P. 1355, l. 3—for ययुक्त read तदनुकूल

VERSE XXVII

नित्यं—V. L. चैव

P. 1355, l. 8—for विधिनात्र read विधानात्

VERSE XXIX

विरचैश्च देवैः साध्यैश्च—V. L. वैश्वदेवैः स्वसाध्यैश्च

विधेः—V. L. विधिः (Smṛtitattva, II p. 87).

VERSE XXX

वर्तते—V. L. (a) वर्तयेत् (Smṛtisāroddhāra, p. 306); (b) विद्यते—V. L. जायते (do.)

For the second line the Samskāraratnamālā, p. 14 reads
स नाप्नोति फलं तस्य परमेति श्रुतिः स्मृतिः

VERSE XXXI

वेदयेत् V. L.—वेदयीत

P. 1357, l. 3—for प्रतीयेऽभिचिन्धादित्यपि read प्रतीयते । शिष्यादिति

VERSE XXXIII

विचारयन्—V. L. (a) विचारितम्, (b) भिचारयन् (Nandana),
(c) भिचारितम्

After 33 some MSS. have the following additional verse

तदस्त्रं सर्ववर्णानामनिवार्यं च शक्तिः ।

तपोवीर्यप्रभावेण अवध्यानपि बाधते ॥

VERSE XXXIV

द्विजोत्तमः—V. L. (a) द्विजोत्तमाः (b) द्विजोत्तमेः

Between the two halves of (34) some MSS. have the
following additional half verse—

तद्धि कुर्वन् यथाशक्ति प्राप्नोति परमां गतिम् ।

VERSE XXXV

मैत्रो—V. L. मैत्री

नृयान्न—V. L. कुर्यान्न, (Nārāyana)

शुक्लां,—V. L. (a) शुक्तां, (b) शुक्लां, (c) शुक्लं ('stale.')

P. 1358, l. 5—for चरेण read चरते

VERSE XXXVI

न वै—V. L. नैव

After (40) some MSS. have the following additional verse—

अन्नहीनो दहेद्राष्ट्रं मन्त्रहीनस्तु ऋत्विजः ।
दीक्षितं दक्षिणाहीनो नास्ति यज्ञसमो रिपुः ॥

VERSE XLI

कामकारतः—V. L. कामचारतः

VERSE XLII

P. 1361, l. 3—for पदिशो read पदेशो

—— l. 4—for स्वैवास्य read स्वैकस्य

—— l. 5—अग्नीनां.....लिङ्गात् should go below under verse (43), before पूर्वविध्यतिक्रमे

VERSE XLIII

तेषां सततमज्ञानां वृषलाग्न्युपसेविनाम्

V. L. पापानां सततं तेषामग्निं शूद्रस्य जुहताम् (Nandana).

VERSE XLIV

प्रसज्जि—V. L. (a) प्रसक्तश्चे, (b) प्रसज्जि (Prāyashchittaviveka, p. 10), (c) प्रसज्यजि (Smṛtisāroddhara, p. 351).

For the second line Parāsharamādhava (Āchāra, p. 50) reads अग्निग्रहास्तेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति (which occurs in याज्ञवल्क्य)

P. 1362, l. 9—for शुचिः स्प read शुचिस्प

P. 1363, l. 2—for व्यता प्रधा read व्यताप्रधा

—— „ —for फलासि read फलसि

P. 1363, l. 2—for व्यता read व्यतां

— „ —for नावगमं कु read यागमकु

— 1. 3—for निषिध्यते read न निष्पद्यते

— „ —for वायोन्न read वायो यन्न

— 1. 7—for बाध्य read बोध्य

— 1. 8—for रूपनानामपि read रूपनायामपि

— 1. 11—for निमित्तं विशेषयेत् read निमित्तविशेषे यत्

— „ —for नाम प्रतीयते read प्रतीयते

— 1. 12—for या जायते read जायते

— 1. 14—for यैः सुखलुब्धेषु read यार्थेषु सर्वेषु

VERSE XLV

P. 1364, l. 5—for मुपकर्तव्यं read मुदाहर्तव्यं

VERSE XLVI

शुध्यति—V. L. नश्यति (Aparārka, p. 1040).

पृथग्विधैः—V. L. पृथक् पृथक् (Madanapārijāta, p. 705).

P. 1365, l. 2—for एवं read एव

— 1. 4—for तथापि read तथा च

— 1. 8—for त्वासि read त्वसि

— 1. 9—for ख्यात read ख्यान

— „ —for तत्तदेव read सत्तदेव

— „ —for निष्क read निष्क

— 1. 14—for कायो हि read बोहि



P. 1365, l. 14—for मद्यपः read मद्याप

— „ —for बुद्ध्याद्यसु read बुद्ध्या सु

— l. 15—for थं read नर्थ

— „ —for यानतु read यानां तु

— l. 16—for थंल read अर्थल

— l. 19—for गौण read गौणः

— „ —कूप read कूले प

VERSE XLVII

दैवात्—V. L. मोहात् (noted by Medhātithi).

द्विजः—V. L. सति

P. 1366, l. 3—for दर्शपूर्वं read पूर्व

— l. 5—for न संसर्गं read संसर्गं

— l. 6—for श्रयत्वा read याश्रयत्वा

— „ —for सिद्धिः read सिद्धः

— l. 8—omit शिष्टैः

After (47) some MSS. have the following additional verse—

प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते ।

तपो निश्चयसंयुक्तं प्रायश्चित्तमिति स्मृतम् ॥

VERSE XLVIII

दुरात्मानो—V. L. दुराचारा

P. 1366, l. 10—for शेषे read शेष

VERSE XLIX

श्यावदन्तताम्—V. L. श्यावदन्तकः

P. 1367, l. 3—for रिक्थ read रैक्थ

— „ —for केयो read कोयो

— l. 4—for वैकल्यं read ग्वैकल्यं

VERSE L

पौतिनासिक्थं—V. L. पूतिनासिक्थं,

After (51) some MSS. have the following additional verses—दीपहर्ता भवेदन्धः काणो निर्वापको भवेत् (V. L. निर्वापकस्तथा) हिंसया व्याधिभूयस्त्वमरोगित्वमहिंसया

(V. L.—हिंसारतस्सदा रोगी वाताङ्गः पारदारिकः)

(V. L.—हिंसया व्याधिभूयस्त्वं स्फीतोऽन्यस्यभिमर्षकः)

This verse has been accepted by Bühler as the text of Manu and translated as such.)

VERSE LII

कर्मविशेषेण—V. L. कर्मावशेषेण

VERSE LIII

निन्दैर्हि—V. L. निन्दितैः

P. 1369, l. 1—for कृतैः सह read कृतैनसः

VERSE LIV

गमः—V. L. गमम् (Aparārka p. 1044)

संसर्गश्चापि—V. L. (a) संयोगं चैव, (b) संयोगश्चैव (Madanapārijāta p. 786) (c) संसर्गं चैव (Aparārka, p. 1044)

VERSE LV

अनृतं च समुत्कर्षे—V. L. अनृतं स्वयमुत्कर्षे

P. 1370, l. 2—for यो वासना read योधना

— „ —for तपद्रूस्तप read तद्रूपस्तद्रूप

— 1. 5—for तादिशं read ताभिशं

VERSE LVI

कौटसाक्ष्यं—कूटसाक्ष्यं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 293).

ब्रह्मोज्झता वेदनिन्दा कौटसाक्ष्यं—V. L. ब्रह्मोज्झं वेदनिन्दा च कूटसाक्ष्यं (Aparārka, p. 1047).

गर्हितानाद्ययोः - V. L. (a) गर्हितान्नाज्ययोः (Mitākṣarā 3. 231),
(b) गर्हितान्नाद्ययोः (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 293).

P. 1371, l. 2—for न्यञ्चापि read न्यन्नापि

— 1. 3—for युज्य read भुज्य

VERSE LVII

P. 1371, l. 4—for शब्दौ read गब्दौ

— „ —for ऽसती read ऽसति

VERSE LVIII

स्वयोनीषु—V. L. (a) स्वयोन्यासु (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 231), (b) स्वयोनिसु

P. 1371, l. 6—for तस्या read तस्य

— 1. 7—for शहणे read क्षीग्रहणे

— „ —for विषय read विषम



P. 1371 l. 8—for करणस्य न्याय read करणस्यान्याय

— l. 9—for तं निदेश read तनिर्देश

P. 1372, ll. 3—4—for वक्ष्यते । न त्याज्यमतः read विवक्षिते नान्या-
यम् । अतः

— l. 4—for थानामेव read थमेव

— „ —for ब्रह्म read ब्रह्मह

VERSE LIX

संयाज्य—V. L. संयाज्यं

विक्रयाः—V. L. (a) विक्रयम्, (b) विक्रयौ, (c) विक्रयः

पारदार्यात्मविक्रयाः—V. L. (a) पारदार्यमविक्रयः, (b) पारदार्यमविक्रयम्
—noted by Medhātithi.

P. 1372, l. 6—for चामसे read चां से

— l. 7—omit अन्येन

— l. 8—for दनु वृ read दननुवृ

— „ —for ध्याया read ध्यापका

— l. 9—for ध्यायस्त्या read ध्यायस्पयस्त्या

— l. 10—for दैहि read दैकाहि

P. 1373, l. 1—for प्राप्तस्य read प्राप्तवयस्कस्य

VERSE LX

परिवेत्ताऽनुजेनूढे,—V. L. (a) परिवित्तिताऽनुजेनोढे, (b) परिवेत्तानुजेनोढे,
(c) परिवित्तिता चानुजेन

VERSE LXI

वार्षुष्यं वृत्तलोपनम्—V. L. (a) वार्षुषित्वं वृत्तच्युतिः, (b) वार्षुषित्वं
वृत्ताच्युतिः (Prāyashchittāviveka, p. 192).

P. 1373, l. 5—for धनाप read अनाप

— l. 6—for सिष्टः read शिष्ट

— l. 7—for शास्त्रतो read इच्छातो

— „ —for चेदितश्चेच्छास्त्रकृ read यदि चेच्छाकृ

P. 1374, l. 1—for मिथ्या read मिच्छा

— l. 2—for सौंदर्या read सौर्या

— „ —Before फले add वा

VERSE LXII

भृताध्यापनमेव च—V. L. (a) भृताध्यापनं तथा (Prāyashchittaviveka, p. 192), (b) भृताध्यापनमेव च, (c) भृताच्चाध्यापनं तथा, (d) भृतादध्यापनं तथा, (e) भृताच्चाध्यापनं तथा

भृता चाध्य—V. L. भृतादध्य (Prāyashchittaviveka, p. 192).

P. 1374, l. 5—for ये सो read यः सो

— l. 7—for अयस्यानि read अपण्यानि

VERSE LXIII

हिंसौषधीनां स्थाजीवो—V. L. (a) हिंस्रौषधिस्थ्युपाजीवो (Nandana)
(b) हिंस्रौषधीनां स्थ्युपाजीवो.

P. 1375, l. 1—for योग एव read योगः

— „ —for मार्या read मार्यानि

— l. 2—for वर्धनं read प्रवर्तनं

— „ —for मुप read उप

— l. 3—for सेना read श्येना

— l. 4—omit भार्यापण्यभा



VERSE LXIV

- P. 1375, l. 5—for च्छुक्त read च्छुक्क
— l. 7—for रूपता read रूपना
— l. 8—for ननु read नतु
— „ —for यतः read ययोरिति

VERSE LXV

स्तेयं—V. L. स्तैन्यं

ऋणानामनपक्रिया—V. L. ऋणानां चानपक्रिया (Prāyashchittaviveka, p. 192).

कौशीलव्यस्य च क्रिया—V. L. (a) कौशीलव्यसनक्रिया, (b) कौशल्यं व्यसनक्रियाः

धिग—V. L. भिग (Prāyashchittaviveka, p. 192).

P. 1376, l. 5—for सस्त्व read ऽसस्त्व

— „ —for कुर्व read अकुर्व

— l. 9—for तेरनु read तेरननु

VERSE LXVI

कुप्य—रूप्य

P. 1376, l. 11—for पठा read कटा

— l. 12—for दुद्यम read द्दने

— l. 13—for वेधनं read वेवनं

VERSE LXVII

कृत्यं—V. L. (a) कृत्या, (Mitākṣarā 3. 242); कृत्वा (Madanapārijāta, p. 924).

जैह्व्यं—V. L. मैक्ष्यं (Madanapārijāta, p. 924).

च मैथुनं पुंसि—V. L. पुंसि च मैथुन्यं (Madanapārijāta, p. 924).

P. 1377, l. 1—for रग्रयं read रघेयं

— „ —for भक्तयं read भक्तय

— 1. 2—for भक्तत्वमनाद्ये read भक्तत्वज्ञचाद्ये

VERSE LXIX

P. 1378, l. 1—for न पुनः read पुनः पुनः

VERSE LXX

P. 1378, l. 5—for ऽध्वंसः read स्पध्वंसः

VERSE LXXII

द्वादशसमाः—V. L. (a) द्वादशाब्धानि (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 399, Madanapārijāta, p. 187, Aparārka, p. 1053); (b) द्वादश समाः

भैचारया—V. L. भिचारया (Madanapārijāta, p. 787).

P. 1379, l. 3—for शब्दोर्थवादः read शब्दार्थवादः

VERSE LXXIII

P. 1380, l. 2—for शब्दार्थविदः read आत्मान

— 1. 3—for आत्मन read ज्ञानम्

VERSE LXXIV

P. 1381, l. 1—for ज्ञानाम् read हिरणा

— „ —for हिरणा read हिरण्या

— „ —for दिग्भ्य read दिदिग्भ्य

— „ —for दृच read दृचि

VERSE LXXVI

वेदविदुषे—V. L. वा वेदविदे (Mitākṣarā 3. 250, Aparārka, p. 1061).

धनं हि—V. L. धनं वा (Mitākṣarā 3. 250).

VERSE LXXVII

वाऽनुसरेत्—V. L. (a) वाऽनुवसेत्, (b) वाऽनुचरेत् (Mitākṣarā 3. 249).

अत्रिं वेदस्य संहिताम्—V. L. त्रिःकृत्वो वेदसंहिताम्

P. 1382, l. 9—for श्रुतं दृष्ट्वा read श्रुतं बुद्ध्या //

— „ —for वध ए read वधे । ए

VERSE LXXVIII

कृतवापनो—V. L. (a) कृतवपनो, (b) कृतवासोवा

हितेरतः—V. L. हितेन वा

P. 1383, l. 1—for कश्चिदपूर्वं वचनः read वपनम्

VERSE LXXIX

सद्यः—V. L. सम्यक् (Aparārka, p. 1058).

गोब्राह्म—V. L. गोब्राह्म (Madanapārijāta, p. 797, Aparārka p. 1058).

VERSE LXXX

अथर्व—V. L. त्रिवारं

प्रतिरोद्धा—V. L. (a) प्रतिबोद्धा

मवजित्य—V. L. सपिजित्य

विमुच्यते—V. L. विशुध्यति

VERSE LXXXI

P. 1385, l. 1—for तस्मा read अस्मा

— „ —for कान्त read कान्तं

VERSE LXXXII

स्वभृत्यस्नातो—V. L. (a) स्वभृत्ये स्नातो, (b) स्वभृत्ये स्नात्वा, (Mitāk-sarā, 3. 244).

P. 1385, l. 5—for अन्ये इत्याहुवै read अन्ये तु वै

— l. 6—for उयस्य read यस्य

VERSE LXXXIV

P. 1386, l. 3—for मत्यक् read प्रत्यक्ष

VERSE LXXXV

पावनाय स्यात्—V. L. पावनी यस्मात्

पवित्रं—V. L. पवित्रा

P. 1387, l. 3—for त्वाद्गुणां read त्वादिगुणां

— l. 4—for लभ्यते read लभते

VERSE LXXXVII

चेजाना—V. L. चेज्याना (Prāyashchittaviveka, p. 87.)

P. 1388, l. 1—for जातीयत्व एव read जातीय एव

— l. 6—for शेषान्न स्त्री read शेषान्न की

P. 1389, l. 1—for स्त्रीविट read स्त्री शूद्रविट्

— „ —for येत्तु read यत्तु

— „ —for अवम read अधम

— „ —for पातकम् read पातक

— l. 5—for कुस्या read कुचा

After (87) some Mss. have the following additional verse—

जन्मप्रभृतिसंस्कारैः संस्कृता मन्त्रवाचका ।

गर्भिणी त्वधवा स्यात्तामात्रेयी च विदुर्बुधाः ॥



VERSE LXXXVIII

प्रतिरभ्य—V. L. प्रतिरुध्य

P. 1389, l. 10—for कौटिल्य read कौट

VERSE LXXXIX

रुदिता—V. L. रुदिष्टा

VERSE XC

मोहा—V. L. smoha (Nāndana)

तया सकाये—V. L. (a) तया स्वकाये, (b) तयास्य काये (Madana-pārijata, p. 815).

किंविषात्ततः—सचं किंविषात्

P. 1390, l. 2—for वापिबेयुः read आसिञ्चेयुः

VERSE XCI

द्रसमेव वा—V. L. द्रसमेव च (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 412.)

P. 1391, l. 4—for यांति read यंति

VERSE XCIII

P. 1392, l. 5—for चान्येन read चान्नेन

— l. 8—for वाक्याजसुरा read वाक्यात् सुरा

VERSE XCIV

यथैवैका तथा सर्वा न पातन्या—V. L. यथैवैका न पातन्या तथा सर्वा (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 411.)

यथैवैका—V. L. यथा चैका (Aparārka, p. 1044.)

P. 1393, l. 2—for मृद्वीविकारस्य read मृद्वीकारसस्य

— l. 5—for किंच read एवं च

— l. 5—for संमृश्या read समष्ट्या

— l. 6—for कारयो read कयो

— l. 10—for तृणेन read तृणे

— l. 12—for तद्व्या read न च द्रव्या

— l. 15—for माध्वी read माधवी

— l. „—for ओरा read ओरो

— l. 16—for गुण read ओगुण

— l. 17—for सवौची read सवची

VERSE XCV

पिशाचान्नं—V. L. पिशाचानां

VERSE XCVI

P. 1394, l. 5—for कथं न कार्यं read कथमकार्यम् ।

VERSE XCVII

P. 1395, l. 1—for अधीतवेदब्रह्मसं read अधीते वेदे सं

— „ —for स्थितहृदयेनोच्यते read स्थितं हृदयं ब्रह्मशब्देनोच्यते

— „ —omit तदपे.....दिति

VERSE XCVIII

विहिता—V. L. विहिता



VERSE XCIX

गम्यतु—V. L. गम्य च

स्वकर्म ख्यापयन्—V. L. गृहीत्वा मुसलं (Aparārka, p. 1079).

VERSE C

हन्यात्तु तं—V. L. कुर्यात् हतं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 414.)

तपसैव तु—V. L. तपसैव वा

P. 1396, l. 4—after मिति add च

— l. 8—हन्ता read हर्ता

VERSE CI

ब्रह्महणो—V. L. (a) ब्रह्महणि, (b) ब्रह्महति, (c) ब्रह्मवध (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 415.)

P. 1397, l. 1—for विंकं धर्मा read विंकधर्मा

VERSE CII

गमनीयं तु—V. L. गमनं चैव

VERSE CIII

गुरुतल्पोभि—V. L. गुरुतल्पभि

तसे—V. L. तल्पे (Madanapārijata, p. 836.)

स्वप्यात्—V. L. सुप्यात्

सूर्मी—V. L. शूर्मी (Prāyashchittaviveka, p. 137.)

वारिलष्येत्—V. L. (a) चारिलष्येत्, (b) स्वारिलष्येत्, (c) मारिलष्य, (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 253 and Madanapārijata, p. 837.); (d) मालिङ्गय

मृत्युना स विशुध्यति—V. L. मृत्युर्भवति शुद्धये



P. 1398, l. 2—for यार्णीमत्वे read यार्णीगत्वे

— „ —for मातैव समा read मातेव माता समा

— l. 3—before तद्वा add सूर्मिः

VERSE CIV

नैर्द्धर्ती—V. L. नैर्द्धर्ति (Madanapārijata, p. 836).

P. 1398, l. 6—for प्रत्यगुदग्द read प्रत्यग्द

VERSE CV

P. 1399, l. 1—for द्विजा read विजा

— l. 3—Read here चीरं.....प्रायश्चित्तं which is wrongly printed at the end of the Bhāṣya on verse 106.

VERSE CVI

मासानभ्यसेत्—V. L. मासानभ्यसेत्

P. 1399, l. 3—चीरं...चित्रं should go before; to the end of Bhāṣya on verse 105.

VERSE CVII

शुभिर्नानाविधैर्नृतेः—V. L. विविधैर्नियमैरिमैः

VERSE CVIII

द्वेष्ट—V. L. तेन (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191).

P. 1400, l. 1—for विद read दिद

— l. 3—for लङ्गणमा read लङ्गणामा

— l. 4—for येन read या न

— „ —for न्यस्यापि read न्यस्या अपि



VERSE CIX

शाचरेत्—V. L. (a) शाचरन् (b) श चरेत् (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191).

P. 1401, l. 3—after संबन्धः add न समासादिलाघवं

—— l. 5—for वित्यनेन read वित्यस्यानेन

—— „ —for स्नान—read पाद— as in A.

VERSE CX

तिष्ठन्नुर्ध्व—V. L. तिष्ठन् मूर्ध्नि (Smṛtisārodhara, p. 358).

वीरासनं—V. L. (a) वीरासने, (b) वीरासनी (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191.)

वसेत्—V. L. (a) भवेत्, (b) विशेत् (Smṛtisārodhara, p. 358).

P. 1401, l. 11—for शुश्रूषयित्वा read शुश्रूषित्वा

VERSE CXI

आसीनासु तथा—V. L. आसीनास्त्वपि चा (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191).

तथासीनो—V. L. तथासीत

VERSE CXII

अभिषक्तां—V. L. (a) अभिषिक्तां (Smṛtisārodhara, p. 358), (b) अभिषक्तां, (c) अभियुक्तां (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191).

पङ्कलग्नां—V. L. पङ्कमग्नां

सर्वप्राणैः—V. L. (a) सर्वोपायैः, (b) सर्वमौघैः (Smṛtisārodhara, p. 358).

विमोचयेत्—V. L. स्वशक्तिः

P. 1402, l. 1—for शब्दे read शब्दो

—— l. 2—for प्राणैर्न read प्राणो म

VERSE CXIII

गोरकृत्वा—V. L. गोरच्छृणं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191).

वाति वा भृशम्—V. L. वाति वाति वा (Smṛtisārodhara, p. 358).

VERSE CXIV

पिवन्तं—V. L. पिवन्तीं

P. 1403, l. 2—for धार read वार

—— l. 2—for धीयत read धीयते ।

VERSE CXV

गामनु—V. L. गा अनु (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 191).

P. 1403, l. 4—after बहुशः add न

—— „ —for बहुत्वार्थ read बहुवचनार्थ

—— l. 5—for दियोगविपत्रां read दियोगे मृते

—— „ —for तस्य read यो

—— l. 7—for न्यासामासेव न read तथाऽन्यास्य मासेन

—— l. 10—for कल्पते read कल्पिते

—— „ —for पत्तेः स्वेच्छु read पन्तेऽविच्छु

—— l. 13—for न मया read अनया

—— „ —for कथं read कथञ्चित्

—— „ —for सितव्यं read सिकम्

VERSE CXVII

अवकीर्णवर्जं शुद्ध्यर्थं—V. L. (a) अवकीर्णी तु शुद्ध्यर्थं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 425), (b) अवकीर्णवर्जं शुद्ध्यर्थम्, (c) अवकीर्णविशुद्ध्यर्थं (d) अवकीर्णी च शुद्ध्यर्थं, (e) अवकीर्णे व्रते शुध्येत्

चान्द्रायणमथापि वा—V. L. चरेचान्द्रायणं व्रतम् (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 425).

VERSE CXVIII

पाकयज्ञविधानेन—V. L. स्थावीपाकविधानेन (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 436).

यजेन्निर्ऋतिं—V. L. नैऋतं यजते (Aparārka, p. 1140).

P. 1404, l. 3—for व्रतनियमः read व्रतानि तस्यातिक्रमः

— 1. 5—for यागा read साध्या

— 1. 6—Before उक्तं add सः

VERSE CXIX

हुत्वा—V. L. कृत्वा

होमान्—V. L. होमं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 436).

समेवृचा—V. L. समिवृचा (Madanapārijāta, p. 909).

P. 1405, l. 4—for अतः read अन्ततः

— 1. 5—for वातमरुच्छन्दौ read वातगुरुशब्दौ

VERSE CXX

P. 1405, l. 1—for व्रतस्या read व्रयस्थ

VERSE CXXI

मास्तं—V. L. मस्तः

P. 1406, l. 1—for आद्याहुतिरिति read उदुयादाहुतिरिति

— „—for ब्रह्म read ब्राह्म



VERSE CXXII

वसित्वा—V. L. संवेष्ट्य (Prāyashchittaviveka, p. 387).

सप्तागारान्—V. L. सप्तागारं (Aparārka, p. 1141).

VERSE CXXIII

वर्तयन्नेक—V. L. (a) वर्तयेत्वेक (Prāyashchittaviveka, p. 387), (b) वर्तयेदेक Smṛitisārodhāra, p. 363).

त्रिषवणमब्देन—V. L. त्रिषवणं त्वब्देन

VERSE CXXIV

अन्यतरं—V. L. अन्यतमं

P. 1407, l. 3.—for देशे read देशे

—— l. 5—for रिति याच्या read रार्तिमिया

VERSE CXXV

ऐन्दवः—V. L. ऐन्दवम्

तप्तः स्याद्यवकैस्त्यहम्—V. L. (a) तप्तः स्याद्यावकस्त्यहम् Mitākṣarā 3. 290). (b) तप्तं स्याद्यावकं त्यहम्

VERSE CXXVI

स्युतः—V. L. स्थितः

P. 1408, l. 1—for समुक्तं read सममुक्तम्

—— l. 2—for शूद्रस्य वि read शूद्रवि

—— l. 3—वैश्य...वा should go to next line, after वृत्तिशीलं

VERSE CXXVII

V. L. विनिपात्य—L. विनिहत्य

दद्यात्सुचरितव्रतः—V. L. (a) दद्याच्छुद्धयर्थमात्मनः (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 73). (b) दद्यात्सुचरितव्रतः

VERSE CXXVIII.

न्यन्दं—V. L. द्वयन्दं (Nandana)

ग्रामा—V. L. ग्रामे Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 73).

ब्रह्महयो—V. L. ब्रह्महति

वसन्—V. L. वसेत्

P. 1409, l. 1—for इतरस्या read इत्यस्या

— ll. 1—2—for तदुक्तं read तदयुक्तम्

VERSE CXXIX.

दद्याद्वैकशतं—V. L. (a) दद्यात्वेकशतं, (b) दद्याद्वैकशतं

P. 1409, l. 4—for अतुल्य read अल्प

— „ for दब्ध read दब्धं

VERSE CXXXI

मार्जारनकुलौ—V. L. मार्जारं नकुलं

P. 1410, l. 3.—for दायवि read दायव

— l. 4.—for कथंचैतन् एवं read कथं चैते

— „ for हन्तार read हन्तव्यतया

— l. 6.—for म्यन्ते read म्यते

— l. 11.—for भयवेति read भयं चेति

— „ —for मावश्यं read मवश्यं

P. 1410, l. 12—for यच्छे read आर्द्धे

— 1. 14—for द्वाकथं read द्वाच्यं

— 1. 17—for र्थेक्ये read र्थक्यं

— „ —for विशेषेण read विशेषण

— „ —after विवक्षा add वा

— 1. 17—for कथं चेदिति read कथं चैतदिति

— „ —for सर्वमेवेति read सर्व एत इति

— „ —for खेटक read खेटकार्यं

— „ —for मृगया read मृगयायां

VERSE CXXXII

वाङ्दैवतम्—V. L. वा रैवतम् (Madanapārijāta, p. 949).

उपस्पृशेत्—V. L. अशः स्पृशेत्—

P. 1411, l. 2—for तर read तरः

— „ —for न पर्वता read पर्वता

— „ —for समाना read सामाना

— „ —for पेक्ष्यते read पेक्षते

— 1. 3—for प्राकृते read प्रकृते

— 1. 4—for शायाम read शायामे

— 1. 6—for उक्तः । स्ववत्या read उक्त्य नद्यां स्नानम्

VERSE CXXXIII

सर्पे—V. L. सर्पान् (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 67).

पलालभारकं—V. L. पलालं भारकम् (Madanapārijāta, p. 950.)

सैसकं—V. L. सीसकं



अभि—V. L. (a) अभौ (Aparārka, p. 1132); (b) अत्री (Prāyashchittaviveka, p. 527).

चैकमाषकम्—V. L. चैव माषकम् (Mitākṣarā 3.273).

सैसकं चैकमाषकम्—V. L. माषकं चैव सीसकम् (Aparārka, p. 1132).

P. 1412, l. 2—for वा सरे read वातरे

— „ —for वृत्ते इन्द्रि read वृत्तेन्द्रि

— „ —for सप्राणि read सर्वप्राणि

VERSE CXXXIV

वराहे V. L. वराहं (Prāyashchittaviveka, p. 240).

तित्तिरौ V. L. तित्तिरिम् (do.)

शुके—V. L. शुकं (do.)

P. 1412, l. 4—for ठकदो read ठके दो

— „ —Omit हायनो

VERSE CXXXV

बलाकां च—V. L. (a) बलाकांश्च, (b) बलाकां वा

VERSE CXXXVI

हयं—V. L. गयं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 69).

गजम्—V. L. गजान्

P. 1413, l. 1—for हस्ति read हस्ती

VERSE CXXXVII

कव्यादान्.....अकव्यादान्—V. L. कव्यादः.....अकव्यादः (Aparārka, p. 1132) Mitākṣarā 3. 272.

तु—V. L. च (Prāyashchittaviveka, p. 527).

VERSE CXXXVIII.

वस्तावीन्—V. L. (a) वस्तावीः (Aparārka, p. 1128) (b) वस्तादीन्
जिन—V. L. (a) जाल, (b) जीन, (c) जील, (d) जात, (e) जीर्ण
(Aparārka, p. 1128).

हत्वा—V. L. गत्वा—noted by Medhātithi.

नारीहस्ताऽनवस्थिताः—V. L. (a) नारीं हत्वाऽनवस्थिताम् (Prāyash-
chittaviveka, p. 227).

P. 1414, l. 3—After दुक्तं add न

After (138) some MSS. have the following additional verse.

वर्णानामानुपूर्व्येण त्रयाणामविशेषतः ।

अमत्या च प्रमाप्य स्त्रीं शूद्रहत्याद्वतं चरेत् ॥

VERSE CXXXIX

एकैकशश्चरेत्—V. L. एकैकस्य चरेत्

P. 1414, l. 4—for केचि read कचि

VERSE CXL

अस्थिमतां तु—V. L. (a) अस्थन्वतां तु, (b) अस्थ्यन्वितानां, (c) अस्थि-
न्वतां तु

VERSE CXLI

P. 1415, l. 3—for प्रयोजनो read प्रयोजनतो

— l. 4—for यश्चा read यश्च ना

— „ —for कुमी read कुमि

VERSE CXLII

तु वृ—V. L. च वृ (Prāyashchittaviveka, p. 243).

जप्य—V. L. जाप्य (Madanapārijāta p. 920)

गुल्म—V. L. नृण (Prāyashchittaviveka, p. 243.)



P. 1415, l. 6—for शतंज read शतज

— l. 7—for प्रवृत्त read प्रवृत्तौ

VERSE CXLIII

रसजानां—V. L. राजसानां

वृत्तप्राशो विशोधनम्—V. L. वृत्तं प्रारय विशुध्यति (Aparārka, p. 1138).

विशोधनम्—V. L. शुशोधनम्

P. 1416, l. 1—for अज्ञाद्भ read अज्ञाद्याद्भ

— „ —for गुंडोदधि read गुंडोदधि

VERSE CLXIV.

वृथालम्भे—V. L. वृथारम्भे

ऽनुगच्छेत्—V. L. तु गच्छेत्

VERSE CXLV

कृत्स्नं—V. L. (a) कृच्छं, (b) सर्वं, (c) पापं

शृणुतानाद्य—V. L. (a) शृणुतान्नाद्य, (b) शृणुतान्नादि

P. 1417, l. 2—for श्रुणुत read शृणुत

VERSE CXLVI

P. 1417, l. 3—for ततश्च read तच्च

— l. 4—for वायुरचेति read वायुं प्रति

— „ —for प्रातितह read नि स

— „ —for च्छ्रुततो read च्छ्रुततो

— „ —After माध्वी add वा

— l. 5—for प्रत्यवायः read प्रत्यवाय

— 1. 6—for पान एतदनिर्वे read पानानिर्वे

— 1. 7—for यत्र मुख्या या सुरोक्ता read यन्मुख्यायाः सुराया

उक्तम्

— ” —for सुरापाने read असुरामद्यपाने

— ” —for माचरे read मभ्यसे

— ” —for श्रेय read इय

— 1. 8—for बुद्धिपूर्वे च read ऽप्यसकृत्पाने बुद्धिपूर्ववत्

— 1. 9—for मद्यपानां read मद्यानां

— ” —for द्रव्या read द्रव्याणि

VERSE CXLVII

पिबेत्पीत्वा—V. L. पिबेदुष्णं

शृतं—V. L. श्रितं

P. 1418, 1. 2—for मद्यपि read यदि

— 1. 3—for तरततोऽतः read तरं स्यादतः

— ” —for वृत्त्य read निवृत्त्य

— 1. 4—for घृतं... घृत read सृतं...सृत

— ” —for घृतशब्दः read शृतशब्दः

— 1. 4—for मू read पि

VERSE CXLIX

गन्धं—V. L. सुख (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 349).

सोमपाः—V. L. सोमपाः (Mitākṣarā, 3.255).

ब्राह्मणस्तु—V. L. ब्राह्मणश्च

त्रिराद्यम्—V. L. त्रिराद्यम् (Madnapārijāta, p. 822).

P. 1419, 1. 3—for अलि read अलि



VERSE CL

सुरासंस्पृष्टमेव च—V. L. सुरासंस्पृष्टमेव च (Mitākṣarā, 3. 254).

P. 1419, l. 7—for यथा read तथा

VERSE CLI

P. 1420, l. 2—for भवन्येव read भवेत्येव

— „ —After व्रतानि add तानि //

VERSE CLII

P. 1420, l. 4—Before विज्ञेयं add स्त्रीग्रहणं

— „ —for तदास्पृष्टं read तदास्यस्पृष्टम्

— l. 5—for अगामि read आगामि

— l. 6—for जनेदं read जने हृदं

— l. 7—for स्नानात् read ग्नानात्

— „ —for यवक read यव

VERSE CLIII

P. 1421, l. 1—for शुक्तेष्वित्येतत् त्रयाभ्यनुज्ञानाद् read शुक्तेष्वित्या-
द्यनुज्ञातानि । द

— l. 3—for निष्कामयाद्य read निष्कमयाद्य । य

— „ —for पचाशय read पाकाशय

VERSE CLIV

मूत्रपुरीषाणि—V. L. मूत्रं पुरीषं वा (Parāsharamādhava Prāyash-
chitta, p. 296).

P. 1421, l. 4—After युक्तं add अमत्या

VERSE CLV

एतदेव—V. L. मांसमेतद् (Aparārka, p. 1166).

P. 1422, l. 3—for तुस्थ read तुच्छ

— „ —for दुस्थितस्य read दूहितस्य

— l. 4—for कतरस्तदे read कतरः । एतदे

VERSE CLVI

कन्यादसूकरोष्ट्राणां—V. L. कन्याद्विदूकरोष्ट्राणां (Mitākṣarā, 3. 391).

तप्तकृच्छ्र—V. L. तप्तकृच्छ्रो (Aparārka, p. 1166).

नरकाकखराणां च—V. L. नरकाककराभ्यानां (Mitākṣarā 3. 291).

P. 1422, l. 5—for शब्देन read च शब्देन

— „ —for कन्यादानां read कन्यादादीनां

— l. 7—for काकादन्यत्रोपेक्षते read काकेत्यत्रोपेक्ष्यते

VERSE CLVII

समावर्तको—V. L. (a) समावृत्तिको, (b) समावृत्तको (Aparārka, p. 1144), (c) समावर्तिको, (d) शमावृत्तको

P. 1423, l. 1—for कृते read अकृते

VERSE CLVIII

मतचारी—V. L. ब्रह्मचारी

P. 1423, l. 7—After समापयेत् add अकृत ... वर्धकारमाह
which comes in l. 8—below.

VERSE CLIX

काकाबुच्छिष्टं—V. L. (a) काकश्वोच्छिष्टं (Madanapārijāta, p. 932), (b) काकाबुच्छिष्टं (Prāyaschittaviveka, p. 320).

वर्चलाम्—V. L. वर्चलम्

ब्रह्म—V. L. ब्राह्मी (Madanapārijāta, p. 932).

VERSE CLX

अज्ञानभुक्तं तूत्तार्य—V. L. (a) अज्ञानभुक्तशुद्धयर्थं, (b) अज्ञानभुक्तमुत्तार्यं, (c) अज्ञानभुक्तं तूद्गार्यं, (d) अज्ञानभुक्तं तूचार्यं, (e) अज्ञानभुक्तमुद्गार्यं, (f) अज्ञानभुक्तं यद्गार्यं

P. 1424, l. 2—for गौतमीये read गौतमीयं

— l. 3—for तस्माद्वा read तस्मादवा

VERSE CLXII

स्वजातीय—V. L. सजातीय (Mitākṣarā 3.265).

P. 1425, l. 5—for किञ्चि read किंय

— l. 6—for धनमाप्यैवं read धनमप्यैवं

VERSE CLXIII

मनुष्याणां तु—V. L. मनुष्याणां च

जलानां च—V. L. तडागानां

शुद्धि—V. L. शुद्धौ (Prāyaschittaviveka, p. 344).

चान्द्रायणं व्रतम्—V. L. चान्द्रायणेन तु (Mitākṣarā 3. 265.)

P. 1425, l. 8—ब्राह्मणा read व्रीह्या

—1425, l. 9—for तद्भ read एतद्भ

— l. 10—for गेप्येवमेव read गेच

VERSE CLXIV

वेरमनि—V. L. (a) वेरमतः (b) वेरमनः (Madanapārijāta, p. 874).

तन्निर्वात्माशुद्धये—V. L. तत्पापस्य विशुद्धये

P. 1426, l. 3—for शक्य read शक्यं

VERSE CLXV

P. 1426, l. 4—for भक्ष read भक्ष्य

VERSE CLXVI

चैल—V. L. (a) चैल, (b) चल, (c) तैल (Mitākṣarā, 3.265) Aparārka p. 1110.

P. 1426, l. 6—for वंशः स्तं read वंशस्तं

P. 1427, „ —for अष्ट read भृष्ट

VERSE CLXVII

ताम्रस्य रजतस्य च—V. L. सर्वस्याश्ममयस्य च (Prāyaschittaviveka, p. 341).

अयःकांस्योपलानां च द्वादशार्ह—V. L. अयःकांस्योपलादीनां हरणे च

कणालक्षता—V. L. (a) कणालक्षुक्, (b) कदलता (Mitākṣarā 3. 265).

VERSE CLXVIII

द्विशफैकशफस्य च—V. L. द्विचुरैकचुरस्य च (Madnapārijāta, p. 875) Mitākṣarā 3.265.

कीटजो—V. L. कीटजी (Madanapārijāta, p. 875).

P. 1427, l. 4—before एकचुरा add एकशफा



VERSE CLXIX

द्विजः—V. L. नरः

अगम्यागमनीयं तु—V. L. अगम्यागमनं चैव

VERSE CLXX

P. 1428, l. 2—for स्वयोन्यादिष्वित्येव read सुप्यादित्येव

— l. 3—for भागिन्यः read भगिन्यः

— l. 5—for पुत्रा read पित्रा

— l. 8—for ममत्यासु read म् । अन्यासु

VERSE CLXXI

भ्रातुरासस्य—V. L. (a) भ्रातुस्तनयां, (b) भ्रातुरासश्च, (c) भ्रातुरासां च

P. 1429, l. 1—for माण्वं read मातृण्वं

— ” —for तुलदु read तुलस्य दु

VERSE CLXXII

नोपयच्छेत्तु—V. L. नोपयच्छेत

P. 1429, l. 4—for ताविशेषात् read ताभिधानाविशेषात्

— l. 5—for युक्तो read ऽयुक्तो

— l. 7—for विका read धिका

VERSE CLXXIII

पुरुषः—V. L. गोवर्जं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 272).

जले चैव—V. L. (a) कुले चैव, (b) जले खे च (noted by Medhātithi).

P. 1430, l. 2—for सममेव read समः

VERSE CLXXIV.

समासेव्य—V. L. समारोप्य (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 276).

The Prāyashchittaviveka (p. 369) reads the verse 174 as—मैथुनं तु समासेव्य गोयानेऽप्सु दिवापि वा ।
स्नात्वा वस्त्रैर्जपित्वाप्यान् प्राणायामेन शुष्यति ॥

VERSE CLXXV

चण्डालां—V. L. चाण्डालां

P. 1431, l. 3—for सम्यगिति read साम्यमिति

VERSE CLXXVI

यत्पुंसः—V. L. यत्पुंसां

P. 1432, l. 3—for युवति read चेति

— l. 10—After तावता add प्रायश्चिताभावः

VERSE CLXXVII

प्रदुष्येत्तु—V. L. प्रदुष्येत

सदृशेनोपमन्त्रिता—V. L. (a) सदृशेनोपयन्त्रिता, (b) सदृशेनानुमन्त्रिता
(c) सदृशेनोपमन्त्रितम् (Aparārka, p. 1125).

P. 1432, l. 16—for तुलानि read तुलानी

P. 1433, l. 3—for तजा read यजा

— l. 3—for उपाय read उत य

— l. 4—for प्रबन्धाच्च read तत्सम्बन्धाच्च

— „ —for असगो read सगो

— l. 6—for धौतु कुर्वन्पै read धौ कुर्वन्तु पै

— „ —for क्रियते read क्रियेत



After (177) some MSS. have the following additional verse.

ब्राह्मणचन्नियविशां स्त्रियः शूद्रेऽपसङ्गताः ।
अप्रजाता विशुध्येयुः प्रायश्चित्तेन नेतराः ॥

VERSE CLXXVIII

P. 1433, l. 8—for कृच्छ्रशब्दएवं वा read कृच्छ्राब्द एव वा

— l. 9—for शयन read शयान

— l. 10—for तत्पा read यत्पा

— l. 11—for आद् read अद्

— „ —for वाच्या read वाक्या

— „ —for वाच्य read वाक्य

VERSE CLXXIX

एषा— —V. L. (a) एताः (b) एषां

इमाः श्रुत निष्कृतीः—V. L. इमां श्रुत निष्कृतिम्

VERSE CLXXX

सहाचरन्—V. L. समाचरन्

P. 1434, l. 3—for नाशन read नाशनात्

— „ —for सहागमन read सहगमनं यान

— l. 4—After तादृशमेव add एकस्यां

— „ —for आसनमे read एकस्मिन्नासने ए

— „ —for कृत्वाप्य read अत्विति

— „ —for भिन्नैव read भिन्नैव

VERSE CLXXXI

तत्संसर्गविशुद्धये—V. L. तत्संसर्गस्य शुद्धये

P. 1435, l. 5—for पंचानुग read पञ्चाना . .

— l. 6—for दिश्यते read दिश्यन्ते

— „ —for अत्रोच्यते read अथोच्यते

— l. 14—for चित्सम read चित्तसम

— „ — for दृष्यते read विष्यते

— l. 15—for मेषां read मर्णां

— l. 16—for राग read रापग

— l. 17—for आभे read अभे

VERSE CLXXXII

बान्धवैर्वहिः—V. L. बान्धवैः सह

VERSE CLXXXIII

पदा—V. L. (a) तदा, (b) सदा, (c) यदा (Madanapārijāta, p. 964)

VERSE CLXXXIV

निवर्तेरंश्च तस्मात्—V. L. (a) निवर्तेरंस्तस्मात् (Mitākṣarā, 3. 295).

यात्रा चैव हि लौकिकी—V. L. यात्रामेव च लौकिकीम् (Mitākṣarā 3. 295).

VERSE CLXXXV

ज्येष्ठता च—V. L. ज्येष्ठतान

यद्वसु—V. L. यद्वनम्.

प्राप्नुयाच्चास्य—V. L. प्राप्नुयात्तस्य

P. 1437, l. 7—for अतोयं read अतोयत्

— l. 7—for दातव्य read दातव्यं

— l. 8—for धनाना read धनानां

VERSE CLXXXVI

तु चरिते—V. L. सुचरिते (Madanapārijāta, p. 966).

P. 1438, l. 2—for कुम्भ read नव

VERSE CLXXXVII

P. 1438, l. 5—for सकृप्रा read स कृतप्रा

— l. 6—for सुयाज read शूद्रयाज

VERSE CLXXXVIII

एतमेव विधिं—V. L. (a) एवमेव विधिं, (b) एतदेव व्रतं (Mitākṣarā 3. 260) (c) एतदेव विधिं

कुर्यात्—V. L. कार्यं (Mitākṣarā, 3. 260).

P. 1439, l. 1—for पतिताः read पतिता

— l. 3—for रोधादपि read रोधादप्रीत्यादपि

— „ —for वानुमासं read तासां

— ll. 5-6—for नैवाभि read नीचाभि

— l. 9—for शक्त read अशक्त

VERSE CLXXXIX

किञ्चित्—V. L. कञ्चित् (Prāyashchittaviveka, p. 141).

सहाचरेत्—V. L. समाचरेत्

कृतनिर्योजनांश्चैव न—V. L. (a) कृतनिर्योजनांश्चेताच्च, (b) कृतनिर्योजनांश्चैव न (Prāyashchittaviveka, p. 141).

P. 1439, l. 2—for श्रितां न read श्रिताच्च

VERSE CXC

बालानांश्च कृतानांश्च विशुद्धानपि—V. L. बालानां च कृतानां च विशुद्धानपि

P. 1440, l. 1—for किंचि read कंचि

— l. 4—for पेक्षते read पेक्ष्यते

— l. 5—for संवासः प्रति read संवासप्र

VERSE CXCI

नानुच्येत—V. L. (a) नालोच्येत (Madanapārijāta, p. 871);
(b) नानुतिष्ठेत (Prāyashchittaviveka, p. 384).

VERSE CXCH

विकर्मस्थास्तु—V. L. विकर्मस्थाश्च (Aparārka, p. 1107).

P. 1441, l. 2—After यस्य add यत्

VERSE CXCHH

कर्मणा ब्राह्मणा—V. L. ब्राह्मणाः कर्मणा (Mitākṣarā, 3. 290).

ब्राह्मणा—V. L. मानवा, noted by Medhātithi.

जप्येन—V. L. जपेन (Aparārka, p. 1150).

P. 1441, l. 6—for वर्षी read मानव

VERSE CXCV

P. 1442, l. 4—for सत्यमिति read सायमिति

VERSE CXCVI

कुर्युस्तस्य—V. L. (a) कुर्युस्तेऽस्य, (b) कुर्यात्तस्य

P. 1442, l. 6—for नान्तिकवेश read स्मैकदेश

VERSE CXCVH

च—V. L. वा (Samskāramayūkha, p. 122).

व्ययोहति—V. L. विशुध्यति



P. 1443, l. 1—for ब्राह्म्यः स्तो read ब्राह्म्यस्तो

— l. 2—for निधनादि read चिदादि

— „ —for अहीने read अहीनं

— „ —for रात्रिकं read रात्रादिकं

— l. 8—for यः क read न क

— „ —for भिचारिणी read भिचरणी

— l. 9—for न्यनि read न्यपि नि

— l. 10—for अभिचारिणी read अभिचरणी

— l. 11—for ज्योतिषो read ज्योतिषा

— „ —for तद्विधि read तद्वत्

VERSE CXCVIII

अपसेधति—V. L. (a) अवसेधते (Madanapārijāta, p. 918), (b) अपकर्षति (Aparārka, p. 1152).

P. 1444, l. 1—for ख्यानं न read ख्यानम् ।

— „ —for प्राक्त् read प्राक् चैत्

— l. 2—for यानस्य तु read यानस्यानु

VERSE CXCVIX

ग्राम्यैः—V. L. ग्राम्यैः

P. 1445, l. 4—omit दन्तैः

After (199) some MSS. have the following additional verse.

शुना घ्रातोपलीढस्य दन्तैर्विदलितस्य च ।

अग्निः प्रचालनं प्रोक्तमग्निना चोपचूचनम् ॥



VERSE CC

एव वा—V. L. एव च

साकला—V. L. शाकला

होमाश्च शाकला—V. L. होमश्च शाकलो (Mitākṣarā, 3. 386).

P. 1444, l. 6—for शलाकादि read शलाकाभिः

VERSE CCI

तु कामतः—V. L. च कामतः (Prāyashchittaviveka, p. 462).

खरयानन्तु—V. L. खरयानं च

स्नात्वा तु—V. L. स्नात्वा च

स्नात्वा तु विप्रो दिग्वासा—V. L. विवासा जलमाप्नुय (Aparārka, p. 1184).

VERSE CCII

विनाद्भिरप्सु वाप्यार्तः—V. L. (a) विनाद्भिरथ वाप्यार्तः, (b) विनाद्भिरप्सु वाऽप्यन्तः (Aparārka, p. 1187).

सज्जिष्येद्यतु—V. L. (a) सन्निवेश्यतु (Aparārka, p. 1187), (b) सन्निवेश्य च

सचैलो—V. L. (a) सचेलो, (b) सचलो

P. 1445, l. 3—for स्तब्ध read स्तब्धः

—, —for शरीर read शरीर

VERSE CCIV

P. 1446, l. 7—Before उपसंग्रहणं add अभिवाद्य

VERSE CCV

कण्ठे वा बध्य—V. L. कण्ठे चासज्य

VERSE CCVI

हय च—V. L. हय तु



VERSE CCVII

महीतले—V. L. (a) महीतलात्, (b) द्विजन्मनः, (c) द्विजन्मनाम्,
(d) द्विजहतात्

P. 1447, l. 5—for रुधिर read रुधिरं

VERSE CCVIII

कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ—V. L. (a) कृच्छ्रातिकृच्छ्रं (Prāyashchittaviveka, p. 464), (b) कृच्छ्रातिकृच्छ्रो (Mitākṣarā 3.280).

कुर्वीत विप्रस्योत्पाद्य शोणितम्—V. L. सुक्पाते कृच्छ्रोऽभ्यन्तरशोणिते (Mitākṣarā, 2.380).

VERSE CCIX

P. 1448, l. 3—for एवं read एव

— „ 5—for जाश्चेत्तस्मान्न read जाश्चैते । तस्मान्न

VERSE CCX

अपकर्षति—V. L. भ्युपकर्षति

VERSE CCXI

परं च—V. L. परंतु (Prāyashchittaviveka, p. 508).

चरन्—V. L. चरेद्

द्विजः—V. L. नरः (Madanapārijāta, p. 710).

P. 1449, l. 2—for वर्तते read निवर्तते

— l. 6—for यत्तच्छी read तच्छी

— „ —for प्रकु read प्राकु

— „ —for भोजनं प्राप्तं भुक्तेति read भोजनात् प्राकृत भोक्तेति

— l. 7—for नतरां read नन्तरं



- „ —for तथा हस्तवेदिकायां read त्रयोहो हविष्यं वेदिकं
— l. 9—for प्रार्थन read प्रार्थना
— „ —for यदि read यद्

VERSE CCXII

कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम्—V. L. कृच्छ्रः सान्तपनः स्मृतः

VERSE CCXIV

स्नायी—V. L. स्नायात्

After (214) some MSS. have the following additional verse.

अपां पिबेच्च त्रिपलं पलमेकं च सर्पिषः ।
पयः पिबेत्तु त्रिपलं त्रिमात्रं चोक्तमानतः ॥

VERSE CCXV

सर्वपापपापनोदनः—V. L. (a) सर्वपापप्रणाशनः (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 26), (b) सर्वपापप्रणाशनम्

VERSE CCXVI

कृष्णे शुक्ले—V. L. शुक्ले कृष्णे (Madanapārijāta, p. 742, Aparārka, p. 1243).

हासयेत्—V. L. ग्रासयेत्

P. 1452, l. 1—for स्वयं read श्वे

— l. 2—for मन्त्रं read मन्त्रयो

VERSE CCXVII

एतमेव—V. L. (a) एतमेव, (b) एकमेव

नियतरश्चरन्—V. L. नियतरश्चरेत्

नियतरश्चरश्चान्द्रायणं व्रतम्—V. L. नियतश्चान्द्रायणमपापरम् (Nan-dana).



VERSE CCXVIII

हविष्याशी—V. L. हविष्यस्य (Aparārka, p. 1243 and Mitākṣarā, 3.325).

VERSE CCXIX

स्मृतम्—V. L. (a) चरन् Mitākṣarā, 3.325, (b) चरेत्

VERSE CCXX

शीतीः स—V. L. शीतिस (Hemādri-Kāla, p. 23).

P. 1453, „ —omit कस्मिंश्चित्

VERSE CCXXI

P. 1454, l. 2—for प्रायश्चित्तानि read प्रायश्चित्तं सर्वप्रायश्चित्तम्

— l. 4—for तथा read यथा

— l. 8—for चानावृ read उचनानावृ

— l. 9—for कृम...कृम read क्रिम...क्रिम

— l. 10—for वर्जनम् read वर्जनमत्र वदन्ति

VERSE CCXXII

समाचरेत्—V. L. समाचरन्

P. 1455, l. 1—omit अत्र वदन्ति

— „ —for स्विति कर्त read स्वितिकर्त

— l. 5—for कुष्ठाः read कुक्ष्याः

VERSE CCXXIII

त्रिरहः—V. L. (a) त्रिरहम्, (b) त्रिरहि (Aparārka, p. 1230).

निशायां च—V. L. निशायाश्च

VERSE CCXXIV

विहरेत्—V. L. विहरन् (Madanapārijāta, p. 748).

अशक्तोऽधः—V. L. अक्रोधश्च (do.)

P. 1456, l. 2—for शिष्टा read शिष्ट

VERSE CCXXV

P. 1456, l. 4—Before सर्वकृच्छ्रेषु add सर्वेषु

VERSE CCXXVI

पापांस्तु—V. L. पापास्तु

शोधयेत्—V. L. शोधनैः

P. 1457, l. 2—After शोधयेत् add कस्यायं शोधयेदित्यर्थः as in N.

— „ —for ननु read नतु as in N.

VERSE CCXXVII

P. 1457, l. 4—for तापेन read तापौ वैमनस्यम्

— l. 5—for योने read योमे

— „ —for जन्मन्ये read जन्मेत्ये

P. 1457, l. 5—for हिंसायमन्य read हिंसायाः । अ

— l. 6—for एतदाहैदानीं eard एतदाहदाने

— „ —for पदिति read पदीति

VERSE CCXXVIII

ऽनुभाषते—V. L. प्रभाषते

VERSE CCXXIX

गर्हति—V. L. निन्दति

मनस्तस्य—V. L. नरःस्वस्य

VERSE CCXXX

नैवं कुर्यात्पुनरिति—V. L. (a) नैतत्कुर्यात्पुनरिति (Prāyashchittaviveka, p. 30), (b) नैनं कुर्यात्पुनरिति, (c) नैनः कुर्यात्पुनरिति

तु सः—V. L. (a) नरः (Prāyashchittaviveka, p. 30), (b) ततः

P. 1458, l. 5—for निमित्त read निवृत्ति as in N, S and A.

— l. 6—for निवर्तेते read निवृत्ते

— l. 7—for प्रयतः read पूयते

VERSE CCXXXI

मनोवाङ्मूर्तिभिः—V. L. मनोवाक्कर्मभिः

P. 1459, l. 2—Drop तत् after शुभं

— l. 3—Before दण्डादेः add न

— l. 4—for मात्रादज्ञा read मज्ञा

— l. 11—for यमा read नियमाः

— l. 12—After न च add तदेव ।

VERSE CCXXXIII

P. 1460, l. 5—for श्रित आत्मनः प्रसा read श्रित आमनःप्रसा

VERSE CCXXXIV

दैवमानुषकम्—V. L. दैवम्मानुषकम्

P. 1460, l. 6—for मानाकं read मानिकं

— l. 8—for स्थाऽतोव read स्था । अन्तोऽव

VERSE CCXXXV

वैश्यस्य तु—V. L. वैश्यस्य च

P. 1461, l. 1—for सद्धिम read सद्धीर

— l. 2—for यावोद्यः read यावोद्यः

— l. 3—for महत्यपि व्रतसिद्धिः read महतीष्वापत्तिषु

VERSE CCXXXVI

प्रपश्यन्ति—V. L. प्रशंसन्ति

VERSE CCXXXVII

अगदा—V. L. अगदो

तेषां—V. L. त्वेषां

VERSE CCXXXVIII

सर्वं तु—V. L. (a) सर्वतत्, (b) तत् सर्वं

P. 1462, l. 3—for शत्रूणां read शत्रुणा

— „ —for तपस्वी read तपस्वि

— l. 7—for विद्यः read विद्याः

P. 1462, l. 7—for यद् read यद् दु

— „ —for पुनर्दुष्प्रापं read पुनः पापं

— l. 8—for क्षानां read क्षानि

— l. 9—for ज्ञातो read ज्ञातो

— „ —for भवतीति read भवति सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवतीति

— „ —for ज्ञात read ज्ञात

— „ —for शक read शक् क



- l. 10—for वेदेषु ज्ञात read देवैर्ज्ञात
— l. 11—for श्रित्तानिदा read श्रित्तेर्दा
— l. 14—for नार्थेपि read नार्थतापि
— l. 16—for इत्याधि read इत्यधि

P. 1463, l. 1—for यदु read यद् दु

VERSE CCXL //

कीटाश्चाहि —V. L. श्वानश्चाहि

P. 1463, l. 5—for षाऽधि read षाधि

VERSE CCXLI

मनोवाकर्मभिर्जनाः—V. L. (a) मनोवाङ्मूर्तिभिर्जनाः, (b) मनोवाक्य-
कर्मभिः

निर्देहन्ति—V. L. निर्णुदन्ति (Parāsharamādhava, Prāyas-
chitta, p. 454).

VERSE CCXLII

कामान् संवर्धयन्ति च—V. L. कामं सम्पादयन्ति च

P. 1464, l. 4—for शमना read नयना

— „ —for स्तने read स्तपो

— „ —for मुपैत्युपयश्चिति read मुपैत्यसङ्गतानां

— l. 5—for कृतकाम read कृतकामि

— l. 6—after स्फलं add ददाति

VERSE CCXLIII

P. 1465, l. 1—for तपसः सा read तपस्सा

— l. 2—for यत्तादृक्तं वेदाः read यत्तावद्वेदाः

VERSE CCXLIV

इत्येतत्—V. L. इत्येवं

पुण्यमुद्भवम्—V. L. पुण्यमुत्तमम्

P. 1464, l. 3—for भाग्य read भाग्यं

—— l. 4—for कृत्स्नस्य read कृत्स्नस्य

After (144) some MSS. have the following additional verse—

ब्रह्मचर्यं जपो होमः काले शुद्धात्पभोजनम् ।

अरागद्वेषलोभाश्च तप उक्तं स्वयम्भुवा ॥

VERSE CCXLV

क्रियाक्षमा—V. L. क्रियाः क्षमाः

P. 1466, l. 3—for पातकान्यपि read पातकज्ञान्यपि

—— l. 4—for च्छुतिः read त्सुतिः

VERSE CCXLVI

यथैधस्तेजसा—V. L. (a) यथैव तेजसा (b) यथैधांस्योजसा (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 172).

यथैधस्तेजसा वह्निः प्रासं निर्देहति क्षयात्—V. L. यथैधांसि समिद्धोऽग्निः प्राप्तानि दहति क्षयात्

प्रासं—V. L. प्रारय (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 172).

सर्वं—V. L. कृत्स्नं

ज्ञानाग्निना—V. L. ज्ञानकृतं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 172).

P. 1466, l. 6—Before प्रायश्चित्त add न

—— l. 6—for गार्थत्वात् read गार्थं तत्

—— l. 8-9—omit न स्विषा

—— ll. 8-9—for हक—त्वाद्विना read कः विना



VERSE CCXLVII

P. 1467, l. 1—for प्रकणा read प्रकरणा

VERSE CCXLVIII

सव्याहृतिप्रणवकाः—V. L. (a) सव्याहृतीः सप्रणवाः, (b) सव्याहृतिकाः सप्रणवाः (Aparārka, p. 1216).

मासान्—V. L. साक्षात्, (b) मासान् (Mītākāśrā 3. 302).

P. 1467, l. 2—for भयपथा read भयथा

—— 1. 3—for कारख्यं read काख्यं

—— 1. 5—for कालेन read काले

—— 1. 6—for तेन read न

VERSE CCXLIX

जपत्वाप इत्येतत्—V. L. जपित्वाऽपैत्येनो (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 457).

च प्रतित्यृचम्—V. L. (a) चापि चत्यृचम्, (b) प्रतिपत्यृचम्, (c) चत्यृचमप्रति, (d) चेत्यृचं प्रति (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 457).

माहित्रं—V. L. माहेन्द्रं—noted by Medhātithi.

Jolly notes—‘The glosses of these, N and Nd point to a reading त्र्यृचमप्रति or प्रतित्र्यृचम्. But in Medhātithi we find no mention of any such reading.’

P. 1468, l. 1—for प्रतीकारार्थं read प्रतीकार्थं

—— „ —for माहेन्द्रं माहि read माहित्रं माहि

—— 1. 2—for विमुक्ता read वियुक्ता, as in S.

—— „ —omit अकतु ऋचो, not in S.

—— 1. 3—for त्यश्चेतो read त्यश्चेतो

VERSE CCL

कल्पमेव च—V. L. कल्पमेव वा

अपहत्य सुवर्णं तु—V. L. (a) अपहत्य हिरण्यन्तु, (b) सुवर्णमहत्यापि,
(Mitākṣarā, p. 3.304), (c) सुवर्णमपि हत्यादि

P. 1468, l. 6—for सने ष read सनेयष

VERSE CCLI

जपित्वा—V. L. (a) जप्त्वा च, (b) जप्त्वा तु

द्विष्यन्तीय—V. L. द्विष्यान्तीय

P. 1469, l. 1—for इति इतिकरणः read इतिकरणः

VERSE CCLII

यत्किंचेदमितीति वा—V. L. (a) यत्किंचेदमितीति च; (b) यत्किंचिदिद-
मितीति च, (Madanapārijāta, p. 993), (c) यत्किंचिदमितीति वा

P. 1469, l. 4—for दुर्हणीय read दुर्हेणाय

VERSE CCLIII

चान्नं—V. L. चान्नं (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 174.)

VERSE CCLIV

समाप्तभ्यस्य—V. L. मासमभ्यस्य

च तृचम्—V. L. वा तृचम्

P. 1470, l. 3—for समा read समां

VERSE CCLV

P. 1470, l. 5—Before वण्मसान् add अन्धार्थम्



VERSE CCLVI

जप्त्वा वा—V. L. जप्त्वा च (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 457).

VERSE CCLVII

पावमानीभै—V. L. पावमानीं भै (Prāyashchittaviveka, p. 501).
गाः—V. L. गां

P. 1471, ll. 6-7—for पदं नाम गवामधुगमन read अन्तम्

VERSE CCLIX

त्रिजपित्वाऽघमर्षणम्—V. L. जप्त्वा त्रिरघमर्षणम्

P. 1472, l. 3—for अन्त read अत

VERSE CCLX

पापापनोदनम्—V. L. (a) पापप्रणोदनम् (Madanapārijāta, p. 746),
(b) पापापनोदकम्

VERSE CCLXI

P. 1473, l. 2—for पातकि read पातक

VERSE CCLXIII

चिसो—V. L. चिप्रं

P. 1473, l. 5—for देकाकार्य read देककार्य

VERSE CCLXIV

चायानि—V. L. चान्यानि

P. 1474, l. 1—after तीत्यर्थः and अन्यानि

VERSE CCLXV

यस्तं वेदं स वेदवित्—V. L. (a) यो वेदैर्न स वेदवित्, (b) यो वेदं तं स वेदवित्

P. 1474, l. 4—for न तु ज्ञानाक्षर read नत्वज्ञाताक्षर

After (265) some mss. have the following additional lines—

पृथग ब्राह्मणकल्पाभ्यां सहिवेदस्त्रिवृत् स्मृतः ।

एष वोऽभिहितः कृत्स्नः प्रायश्चित्तस्य निर्णयः

(V. L. प्रायश्चित्तविनिर्णयः)

त्रिःश्रेयसं धर्मविधिं (V. L. त्रैःश्रेयसं कर्मविधिं) विप्रस्येमं (V. L. विप्रस्यैनं) निबोधत

Adhyaya XII

[The corrections are based mainly upon N, S & A].

VERSE I //

P. 1477, l. 1—for सामान्यार्थं read सम्मानार्थं

— l. 5—for तावन्ति read यावन्ति

— l. 6—for तुल्यानि read नित्यानि

— l. 10—for कृते read इत्यादिना

— l. 11—for नच read ननु

— l. 13—for शास्त्राचो read शास्त्रयो

— „ —for तन्नानुष्टु read तन्नानुष्टु

— l. 15—for इत्यपेक्षा read इत्युपेक्षायां

— l. 18—for प्रवर्त read प्रतिवर्त

— l. 20—omit कर्तृकरण इति च श्रूयते

— „ —for विधिस्ता read विधेस्ता

— l. 22—for युज्यते read नियुज्यते

P. 1478, l. 2—for वदन् read वेदेन

— „ —for तन्न read नच

— l. 3—for नचा read तन्ना

— l. 8—for नैवं read एवं

VERSE III

देहसम्भवम्—V. L. कायसम्भवम्

P. 1478, l. 10—for कर्मशब्दो read कर्म । कर्मशब्दो

— 1. 11—for चेज्यामेव read चेज्यायामेव

— „ —for शुभमशुभ—read शुभफलमशुभ—

P. 1479, l. 1—for साधानादिवत्कर्मा read साधनादेव कर्मा

VERSE IV

देहिनः—V. L. देहिनाम्

P. 1479, l. 3—for तदाने read दाने

— 1. 6—for सर्वद read सर्वेद

— 1. 7—for कारणात् read कारणं

— 1. 9—for मेघवर्णं read मयेवर्णं

— ll. 10-11—for विविधस्य read त्रिविधस्य

VERSE V

मानसं त्रिविधं स्मृतम्—V. L. त्रिविधं कर्म मानसम् (Madanapārijāta, p. 692).

P. 1480, l. 3—Omit अन्ये.....सिभवति

— 1. 5—for एतद्भयाच्च read एतदुभयं सम्भवति

— 1. 6—for विदां read वेदं

VERSE VI

पैशुन्यं चापि—V. L. (a) पैशुन्यं चैव, (b) पैशुन्यमपि (Aparārka, p. 998).

सर्वशः—V. L. सर्वतः (Aparārka, p. 898).

असम्बद्धप्रलापश्च—V. L. (a) अनिवद्धप्रलापश्च (Aparārka, p. 998),

(b) असम्बद्धःप्रलापश्च (Madnapārijāta, p. 692).

VERSE VII

शारीरं—V. L. कायिकं (Madanapārijāta, p. 692).

P. 1481, l. 2—for मर्दा read मर्दादा

VERSE VIII

मनसैवायं—V. L. मनसा चैवं (Madanapārijāta, p. 692).

उपभुङ्क्ते—V. L. उपयुङ्क्ते

च कायिकम्—V. L. तु कायिकम्

After (8) some Mss. have the following additional verse :—

त्रिविधं च शरीरेण वाचा चैव चतुर्विधम् ।

मनसा त्रिविधं कर्म दश धर्मपथास्सयजेत् ॥

VERSE IX

P. 1482, l. 3—for नार्थं प read नार्थप

After IX some Mss. have the following additional verses :—

शुभैः प्रयोगैर्देवत्वं व्यामिश्रैर्मनुषो भवेत् ।

अशुभैः केवलैश्चैव तिर्यग्योनिषु जायते ॥

वाग्दण्डो हन्ति विज्ञानं मनोदण्डः परां गतिम् ।

कर्मदण्डस्तु लोकोन्मीनं हन्यादपरिरक्षितः ॥

वाग्दण्डोऽथ भवेन्मौनं मनोदण्डस्त्वनानाशनम् ।

शारीरस्य हि दण्डस्य प्राणायामो विधीयते ॥

त्रिदण्डं धारयेद्योगी शारीरं न तु वैखवम् ।

वाचिकं कायिकं चैव मानसं च यथाविधि ॥

VERSE X

कायदण्डस्तथैव च—V. L. (a) कर्मदण्डस्तथैव च, (b) कर्मदण्डश्च ते त्रयः (Madnapārijāta, p. 374), (c) कायदण्डश्च ते त्रयः, (d) कर्मदण्डोऽथ ते त्रयः (Aparārka, p. 951).

यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते—

V. L. (a) यस्यैते नियता दण्डाः स त्रिदण्डी व्यवस्थितः

(b) यस्यैते नियता दण्डाः स त्रिदण्डीति कथ्यते (Aparārka, p. 951).

(c) यस्यैते नियता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते (Prāsharamādhava Āchāra, p. 533).

VERSE XI

सुसंयम्य—V. L. तु संयम्य

निगच्छति—V. L. नियच्छति

P. 1483, l. 5—for वान अत्र read वामुत्र

VERSE XII

P. 1484, l. 2—After शरीरे and वृत्तिः

— „ —for पाणादि read पानादि

VERSE XIII

सर्वं—V. L. कर्म

P. 1485, l. 2—for महदाभिभूतं read महदादिभूत

— „ —for नानारूपं भोग read निरुपभोगं

— l. 5—for सहशब्दस्या read सहजशब्दश्चा

— l. 6—for तदपियो read तद्वियो

VERSE XIV

तं व्याप्य—V. L. तौ व्याप्य

After (14) some Mss. have the following additional verse—

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्येक्य ईश्वरः ।

P. 1486, l. 1— सर्वकर्मकर्तृत्वं read सकर्मकत्वम्

— l. 2—for महान्ति read महानिति

— „ —for चेत्रज्ञस्यात्म read चेत्रज्ञः अस्या

— l. 3—for स्थितां read स्थितं

— „ —for श्रवणं read श्रयणम्—

— l. 5—for विचारप्रपञ्च read चराचरप्रपञ्च

VERSE XV

P. 1487, l. 4—After प्रवृत्तित्वात्—add नात्रभूतानि

VERSE XVI

यातनार्थीयम्—V. L. यातनात्मीयम्

ध्रुवम्—V. L. दृढम्

P. 1487, l. 5—Omit नात्रभूतानि

— l. 6—for दुष्कृतीनां read दुष्कृतिनां

— l. 7—Before यद्यति add तदधीयं

— l. 7—for यद्यति read यदति

— „ —for हिष्णुः read सिष्णु

VERSE XVII

P. 1488, l. 1—for अनुभूयच्छलेन read अनुभूयतेन

— l. 2—for सूत्रासु read सूत्रमासु

VERSE XVIII

अनुभूय—V. L. अनुभूया

P. 1488, l. 4—for महाचेन्नजाच्च read महान्चेन्नज्ञश्च

P. 1489, l. 1—for संघात्म read संघातात्म

— l. 2—for सुखो read असुखो

— „ —for प्रतिरंध्रिणि read प्रतिपन्थिनि

VERSE XIX

सुखासुखम्—V. L. शुभाशुभम्

P. 1489, l. 7—for नरलोके read पूर्वरलोके

— „ —for मुक्तं read युक्तं

— l. 8—for ततः read सतः

P. 1490, l. 3—for तदर्थं read तदर्थं

— l. 4—for कारणा read करणा

— l. 6—for प्रवणभासा read प्रवणता सा

VERSE XX

यथा—V. L. यथा

P. 1490, l. 7—for हृदाभि read हृदादिभि



VERSE XXI

स परित्यक्तो—V. L. सम्परित्यक्तो

P. 1491, l. 2—for ताङ्गिममृदु read तानिमृदु

— l. 3—for स्वर्गशरीराणि भक्ष्याणि read शरीराणि
स्वर्गभक्ष्याणि

VERSE XXII

यामीस्ता—V. L. यामीस्तु

पुनरप्येति—V. L. पुनरभ्येति

P. 1491, l. 4—for एतच्चान्यलोक read एतच्चास्य श्लोक

VERSE XXIII.

दध्यात्—V. L. दद्यात्

P. 1492, l. 2—for भवे read भवेत्

VERSE XXIV

तमश्चैव—V. L. तमश्चेति (Parāsharamādhava Prāyashchitta,
p. 487).

P. 1492, l. 4—for तर्हि read तर्हि

VERSE XXVI

भूताश्रितं—V. L. भूताश्रयं

P. 1493, l. 1—after मोहः add न यथा मदमूर्च्छाद्यवस्थास्वचैतन्यमेव
(from next line).— l. 3—after स्वभावः add अनुच्छेदाद्भोजवासनाया आब्रह्म-
प्राप्तिस्थितत्वात् from p. 1494, l. 2

VERSE XXVII

प्रशान्तमिव—V. L. प्रभातमिव (Aparārka, p. 999).

P. 1494, l. 2—for दैवक read दैक

VERSE XXVIII

यत्तु दुःख—V. L. यत्तु दुःखे
ऽप्रतिपं—V. L. प्रतिघं
हर्तुं—V. L. (a) हारि, (b) भर्तुं

VERSE XXIX

अव्यक्तं—V. L. अव्यक्त

VERSE XXXI

P. 1495, l. 3—for तत्कस्यति संब read तत्सम्ब

—— l. 4—for यवापि read यवा अपि

—— l. 5—for सम्बन्धस्य read सत्त्वस्य

—— „ —for गुरुद्वारोप read गुरुह

VERSE XXXII

आरम्भरुचिता—V. L. आरम्भरतिता

ऽधैर्य—V. L. दैन्य

VERSE XXXIII

क्रौर्य—V. L. धैर्य

P. 1496, l. 5—for गणनं read चग्रहणेन

—— l. 5—for हारेऽना read हारेष्वना

VERSE XXXIV

त्रिषु—V. L. नृषु

VERSE XXXV

लज्जति—V. L. लज्जते

VERSE XXXVI

न च शोचति—V. L. स च शोचति

इच्छति—V. L. ऋच्छति

P. 1497, l. 5—for धनानामा read धर्माणामा

— „ —for तच्च read यच्च

— l. 6—for काले read काके

— „ —for पुष्कल read पुष्कला

— l. 8—for चरन्ते read चिनेति

VERSE XXXVII

यत्—V. L. यः

सर्वेणोच्छति—V. L. सर्वं येनेच्छति

चात्मास्य—V. L. चास्यात्मा

VERSE XXXVIII

यथोत्तरम्—V. L. यथाक्रमम्

P. 1498, l. 3—for सत्यं read सत्त्वं

VERSE XXXIX

येन यस्तु गुणेन—V. L. (a) येन यांस्तु गुणेन, (b) येन येन तु गुणेन

VERSE XLI

त्रिविधैषा—V. L. त्रिविधैवां

P. 1499, l. 4—for बुद्धिपूर्वप्रयोगश्च read बुद्धिपूर्वा बुद्धिपूर्वप्रयोगाश्च

— „ omit च after कर्मणां

VERSE XLII

सरीसृपाः—V. L. सकच्छपाः (Madanapārijāta, p. 693).

मृगाश्चैव—V. L. शृगालाश्च

VERSE XLIII

म्लेच्छाश्च गर्हि—V. L. म्लेच्छा विगर्हि (Aparārka, p. 1,000).

सिंहा व्याघ्रा वराहाश्च—V. L. सिंहव्याघ्रवराहाश्च (Madanapārijāta, p. 693).

VERSE XLIV

तामसीषु—V. L. तामसेषु (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 487).

P. 1500, l. 2—for विग read पि ग

VERSE XLV

कला—V. L. कला (Aparārka, p. 1,000).

पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः—V. L. (a) पुरुषाश्च कुवृत्तयः (Aparārka, p. 1,000), (b) पुरुषाः शस्त्रपाणयः

प्रसक्ताश्च—V. L. प्रयुक्ताश्च

जघन्या—V. L. प्रथमा (Aparārka, p. 1,000) and Madanapārijāta, p. 693).

VERSE XLVI

राज्ञां चैव—V. L. राज्ञश्चैव

बादयुद्धप्रधानाश्च—V. L. दानयुद्धप्रधानाश्च (Aparārka, p. 1,000) and Madanapārijāta p. 693).

P. 1501, l. 1—for श्वर च read श्वरः च



VERSE XLVII

For the first line the Aparārka (p. 1,000) reads गन्धर्वा
गुह्यकाश्चैव विविधा भूचराश्च ये

विवुधानु—V. L. विविधानु

राजसीषु—V. L. राजसेषु (Parāsharamādhava, Prāyashchitta,
p. 487).

VERSE XLVIII

दैत्याश्च—V. L. सिद्धाश्च

वैमानिका—V. L. वैनायका (Madanapārijāta, p. 694).

VERSE XLIX

द्वितीया—V. L. मध्यमा

P. 1502, l. 3—for पूर्वि read पूर्वी

— l. 4—for चेतनादित read चेतनस्त्वम् । त

VERSE L.

महानव्यक्तमेव च—V. L. (a) महानव्यक्त एव च, (b) महदव्यक्तमेव च
(Parāsharamādhava Parāyashchitta, p. 488).

P. 1502, l. 8—for रूपार्थः read रूपार्थः

— l. 11—for ये ये प्रकाराः सन्ति read त्रयः प्रकाराः सम्भवन्ति

— l. 12—दि read दिवा

— „ —for प्यो व्यक्ति read प्योऽव्यक्त

— „ —for संख्ये read सांख्ये

— l. 14—for गा चा read गाच्चा

— l. 15—for चेति read वेति

P. 1503 l. 1—after भ्योपि add निकृष्टतरं

— l. 2—for श्रुतितः read श्रुतिर्न

VERSE LI

एष सर्वः—V. L. एष धर्मः

त्रिः प्र—V. L. त्रि प्र (Madanapārijāta, p. 694)

VERSE LII

P. 1503, l. 7—for इन्द्रियसंगो read इन्द्रियप्रसङ्गः संगो

— l. 8—for परमात् संसारान् read पापात् संसारान्

VERSE LIV

तत्त्वयात्—V. L. (a) ते चयात्, (b) तत्त्वणम्, (c) तत्त्वणात्

P. 1504, l. 1—for तत्त्वणा read तत्त्वया

— l. 2—for चयं read चयः

— „ —for नरक read नरकं

VERSE LV

पुष्कसानां—V. L. (a) पुष्कसानां, (b) पुष्कसानां, (c) पुष्कशानां,
(d) पुष्कशानां

चण्डाल—V. L. चाण्डाल (Madānapārijāta p. 700).

VERSE LVI

पतङ्गानां—V. L. भुजङ्गानां

चैव—V. L. चापि

VERSE LVII

लूताहि—V. L. लूतादि

च पिशा—V. L. सपिशा (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511).

VERSE LVIII

P. 1505, l. 2—for कृताः read कृतः



VERSE LIX.

ऽभक्ष्य—V. L. ऽमेध्य

P. 1506, l. 2—for नैक read अनेक

—after विणो add ऽन्याः

VERSE LX.

योषितम्—V. L. योषिताम् (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511).

च विप्रस्वं—V. L. (a) तु विप्रस्वं, (b) च ब्रह्मस्वं

भवति ब्रह्मराक्षसः—V. L. भवन्ति ब्रह्मराक्षसाः (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511).

VERSE XLI.

मानवः.....जायते—V. L. मानवाः.....जायन्ते Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511).

प्रवालानि—V. L. प्रवाल च

हेमकर्तृषु—V. L. लोहकर्तृषु (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511).

VERSE LXIII

वपां—V. L. (a) वसां Parāsharamādhava, p. 511), (b) रसान्—

तैलं तैलपकः खगः—V. L. (a) तैलं वा तैलपायिकः, (b) चेलैलपायः खगः;
(c) तैलं तैलवकः खगः; (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511),

(d) तैलं तैलपगः खगः, (e) तैलं तैलपयः खगः

चीरीवाकस्तु—V. L. (a) चक्रवाकस्तु; (b) वीचीवाचकः, (c) वीचीवाक् च,
(d) चीरवाकस्तु (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 512).

बलाका—V. L. बलाकः (Parāsharamādhava, Prāyashchitta, p. 511).

VERSE LXIV

कार्पासता—V. L. कार्पास ता (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 512).

गोधा गां वाग्गुदो गुडम्—V. L. (a) गोधामासाखुवत्सुतिः, (b)
गोधामासाषु वत्सुभिः, (c) गोधागव्यं ददो शलम्

VERSE LXV

कुच्छुन्दरिः—V. L. कुच्छुन्दरी (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 512).

पन्नशा—V. L. पन्नशा

VERSE LXVII

फलमूलन्तु—V. L. (a) फलपुष्पन्तु, (Parāsharamādhava Prāyashchitta, p. 511). (b) फलं पुष्पन्तु

VERSE LXIX

हत्वा—V. L. कृत्वा Mitākṣarā 3. 216).

भार्यात्वम्—V. L. पत्नीत्वम्

VERSE LXXX

पापान्—V. L. पापाः

प्रेष्यतां—V. L. (a) भृत्यतां, (b) प्रेततां

दस्युषु—V. L. शत्रुषु

VERSE LXXI

विप्रो धर्मात्स्वकाच्युतः—V. L. विप्रो भवति विच्युतः (Mitākṣarā 3. 220).

कठपूतनः—V. L. (a) कटपूतनः (noted by Medhātithi), (b) कठपूतनः

P. 1509, l. 4—for चास्यं read चास्य

VERSE LXXII

मैत्राक्षिज्योतिकः—V. L. (a) मैत्राक्षज्योतिकः
(b) मैत्राक्षद्योतनः

चैलाशकश्च—V. L. (a) चैलाशकश्च; (b) तैलाशकश्च



P. 1510, l. 3—for तिका read तिक

— „ —for मैत्राख्ये read मैत्राचे

— l. 4—for दिल्लोकः read दिल्याल्लोकः

— l. 3—for अचं ज्यो read अचज्यो

— „ —for त्याल्लोके read त्याल्लोके

VERSE LXXIII

विषयात्मकाः—V. L. विषयैषिणः

P. 1511, l. 3—for स्य स्यात्त read स्य त

— „ —for भावतयैव read भावतैव

— „ —for त्सहि read त्सहि

— l. 4—for तस्मृ read न तस्मृ

— „ —for त्मत्वेच सं read त्मत्वेन सं

— l. 5—for वृत्तिरशि read वृत्तिः शि

VERSE LXXIV

P. 1511, l. 7—for पानां read पायानां

— „ —for भ्यासान् read भ्यासात्

VERSE LXXV

विवर्तनम्—V. L. प्रवर्तनम्

VERSE LXXVI

करम्भबालुकातापान्—V. L. करम्भबालुकास्तप्ताः

दारुणान्—V. L. दुस्सहान्

VERSE LXXVIII

काष्ठानि—V. L. कष्ठानि

VERSE LXXX

जराञ्चैवाप्रतीकारां—V. L. (a) राज्ञां चैव प्रतीकारं; (b) जराश्चैवाप्रतीकाराः

VERSE LXXXI

तत्तत्फलमुपाश्रुते—V. L. स तत्तत्फलमश्रुते

P. 1513, l. 1—after राजसेन add तामसेन वा

— ll. 1-2 for तादृशेनेत्यर्थः read तादृशेन

VERSE LXXXII

एष सर्वः—V. L. (a) एष धर्मः, (b) एष सर्गः,

विप्रस्येदं—V. L. विप्रस्यैवं

P. 1513, l. 4—for वर्तितव्यम् read निवर्तितव्यम्

VERSE LXXXIII

संयमः—V. L. (a) सङ्ग्रहः, (b) निग्रहः

VERSE LXXXV

P. 1515, l. 1—for मान्रज्ञा read मात्मज्ञा

— l. 2—for क्षेत्रवि read क्षेत्रज्ञवि

— l. 6—for त्वज्ञान read त्वज्ञानं

— „ —for सेना read सेवना

— „ —for मर्थ्य read मर्थ्ये

— l. 8—for विद्याया read विद्यायाः

— „ —for त्वायक read त्वायनक

VERSE LXXXVI

सर्वेषां—V. L. पूर्वेषां

सर्वदा—V. L. सर्वं वा

P. 1515, l. 10—for करत्वं read करतरत्वं

— „ —for मरण read मरणः

— l. 11—omit स्तेषु.....पद्यते

— l. 13—omit नहि भवति

— l. 14—for कथमुद्दि read कथमनुद्दि

— „ —for सामान्यसा read सामान्यस्य सा

— l. 15—for स्करमिति read स्करतरमिति

P. 1516, l. 1—for नामवै read नामपि वै

— l. 2—for कादीनि read कानीति

— „ --for वैदिकेषु read वैदिकानि । वैदिकेषु

— „ —for स्वेन तद्भावः read स्वेनान्तर्भावः

— l. 3—for भवति read भवन्ति

— „ —After क्रमशः add तस्मिन्

— „ —for तपोगुरु read तपोदुरु

— l. 4—for सादीनामप्य read सादीन्यप्य

— „ —for स्कर read स्करतर

— l. 5—for माणवस्क read माणवतः क

— l. 6—for श्रेयस्ककरत्वे read श्रेयस्करत्व

— l. 7—for यथोक्तकल्पवि read यथोक्तं तुल्यवल्वि

— „ —for अतुल्यायाः श्रुतेः स्मृत्या read अतुल्यबलायाः
स्मृतेः श्रुत्या

P. 1516, l. 7—for स्मृति read श्रुतिस्मृति

— l. 8—for रथयुक्तं read रथदुक्तं

— l. 9—for शुद्धे read श्रुतिद्वैधे

— l. 10—for भाव्याते read भाव्यते

— l. 12—for च्यये read च्यते

— „ —for विधिस्तै रु read विधिरु

— l. 13—omit अग्निहोत्राद्युपदेशः

— „ —for त्मानं read त्मज्ञानं

— „ —for तैर्न्याख्यातमिति आत्मज्ञानं श्रुतिपरत्वेन read
आत्मज्ञानं श्रुतिपरत्वेन तैर्न्याख्यातमिति

P. 1516, l. 15—for वैदिकमन read वैदिकमंत्र

— „ —omit मर्थस्य

— l. 16—for शास्त्रा read शास्त्रा

— l. 19—for श्ववे read वे—

— l. 20—for मधुराः read माधुराः

— l. 21—for सती read सतीयं

VERSE LXXXVII

तु—V. L. हि

तस्मिंस्तस्मिन्क्रियाविधौ—V. L. तस्मिन् कस्मिन् क्रियाविधौ

P. 1517, l. 1—for वैदिक read वैदिकः

— l. 4—for पदेश read पसद

— l. 5—for पितुःखा read निदुषाम

— „ —for प्रत्यहगामिनः read प्रतिभागगामि न



- „ —for स्त्रियमपे read स्त्रियमुपे।
 — l. 9—for मज्जनानस्य read मन्यस्य
 — „ —for सातिशयेन read सातिशयेन
 — „ —for कृतिनि read कृतनि
 — l. 11—for वीप्साया read क्रिया

VERSE LXXXVIII

चैव—V. L. चैत (Mitākṣarā, 3. 58).

कर्मवैदिकम्—V. L. कर्मणःफलम्

- P. 1518, l. 1—for प्राधान्यं तत्र नि read प्राधान्येन तत्र
 — l. 2—for सुखादयः read सुखाभ्युदयः
 — l. 3—After प्रवृत्त add निवृत्त

VERSE LXXXIX

निष्कामं ज्ञानपूर्वं तु—V. L. ज्ञानपूर्वं तु विद्वद्भिः (Aparārka, p. 1033).

इह चासुत्र—V. L. इह वासुत्र (Aparārka, p. 1033).

निवृत्तम्—V. L. प्रवृत्तम्

- P. 1518, l. 5—for स्वात्सा read स्वात्ससा
 — „ —for काम्यत एव read काम्यमेव
 — „ —for ज्ञानंयू read ज्ञानयू

- P. 1518, l. 5—for षोनाधि read षोऽनधि
 — „ —for अनयोपि read अथापि
 — l. 6—for तदुभय read नोभय

After (89), some MSS. have the following additional verse:—

अकामोपहतं नित्यं निवृत्तं च विधीयते ।
 कामतस्तु कृतं कर्म प्रवृत्तमुपदिश्यते ॥

VERSE XC

साम्यताम्—V. L. (a) साम्यताम् (Aparārka, p. 1033), (b) सार्ष्टिताम्

भूतान्यथेति—V. L. (a) भूतान्यभ्येति, noted by Medhātithi, (b) भूतान्यप्येति favoured by Medhātithi; (c) भूतान्यध्येति, (d) भूतान् पश्यति (Aparārka, p. 1033).

P. 1519, l. 1—for चिद्विष्टा स्वर्गफलानि त read चिद्विष्टफलानि । न च

— l. 3—omit स्वकल्प

— ll. 4-5—for शांतग्रामकः read ग्रामकामः

— l. 6—for तिष्ठमानं read निष्टं

— ll. 6-7—for हनि read हानिः

— l. 7—for अथोचम्यं read अथावश्यं

— „ —for परिकरः read परिहारः

— „ —for तद्विकल्पकानां read तद्विकल्प्यमानं

— l. 8—for प्रभूता read भूता

— „ —for पंचधेति read पञ्च वै इति

— „ —for तथाप्यप्येति read तत्राप्यप्येति

— „ —Before विशः add न

P. 1519, l. 9—for पत्तिं ये पठन्ति read पत्तिः

— „ —for न चा read स चा

— „ —Before पांचभौ add न

— l. 10—for चान्वेति read रेवान्वेति

— „ —for भवत्पांचभौतिकं च read भवतु पांचभौतिकं वा

— „ —for संसरि read संसारि

- l. 11—for नित्याका read नित्याना
 — „ —for कामानां read काम्यानां
 — l. 12—for यागा read योगा
 — „ —for प्रवृत्तं read प्रवृत्तिः
 — „ —for किंचन read किंच कर्म
 — l. 13—for अथन read येन
 — „ —after माप्यत इति, add प्रशंसा सन्ति च कानिचित्
 देवत्व प्राप्तिफलानि कर्माणि यथा च माव्याप्या (?) प्रथम इति, as in S.

P. 1519, l. 13—for तथा read तथा

- l. 14—for फलं क read फलसंक
 — „ —for कर्मणा read कर्मणां
 — „ —for तदभावो read स्वभावो
 — l. 15—for कार्यकारण read कार्यकरण
 — „ —for न्यव्यतिक्रि read न्यप्यक्ति
 — „ —for मारंभत read मारभंत
 — l. 16—for चकरि read न करि
 — l. 17—for ज्ञानस्योपभोगः read ज्ञानस्य कोपयोगः
 — „ —for प्रवर्तते read प्रवर्त्तत
 — „ —for काम्ययो read काम्यनिषिद्धयो
 — „ —for त्युक्तगर्भ read त्युक्तंभग
 — l. 18—for विद्यमानं तस्यैव read नविद्यामनभ्यस्या
 — „ —for नचानुष्ठितयोगविद्याया read न ज्ञानुच्छिन्नाया-
 मविद्यायां
 — l. 19—for येचापि read यच्च

VERSE XCI

समं पश्यन्—V. L. सम्पश्यन्

अधिगच्छति—V. L. अभिगच्छति

P. 1520, l. 1—कथं...आह—This should preside the verse.

— „ —for पुण्यप्रा read प्राण्यप्रा

P. 1520, l. 2—omit प्रतिषेधवद्भेदावभास

— l. 3—for अद्यते वध्यस्य read सम्पद्यते बन्धः । त्य

— „ —for न स्वाराज्यदेवतार्थः read एष एव स्वाराज्यपदार्थः

— l. 5—for नास्त्यादि read नागिनरादि

— l. 6—for स्मापदेशेन read त्मोपदेशेन

— „ —for चोच्यते read चोद्यते

— „ —for स्वाराज्यान् read स्वाराज्यम्

— l. 7—before चंद्रादि add न

— „ —for क्षतेन्द्रिया read क्षते नेन्द्रिया

— l. 8—for आदितः read आदि । अतः

— „ —for पश्यन्ती read पश्यन्ति

— „ —for भावे तदुच्यते read भावयेदित्युच्यते न

— „ —for परस्यात् read पराःस्मृताः or परत्वात्

VERSE XCII

परिहाय—V. L. परिहाय्य

शमे च स्यात्—V. L. समावेश्य

P. 1521, l. 2—for त्वालं read त्स्यालं

— „ —for मत्र read मन्त्र

— „ —for मुक्तो read मुक्ता

— l. 3—for मेधादिषु read धर्मादिषु

VERSE XCIII

जन्मसाफल्यं—V. L. जन्मसामग्र्यं

P. 1521, l. 4—for द्विजन्मनां भवति read द्विजो भवतीति

— „ --for चराणक read चारण्यक

— l. 6—for पश्येत्त्र read पश्येत्तत्र

P. 1522, l. 1—for भिन्ना read भिन्नो

— l. 3—after श्रुवीत add अतश्चाह

VERSE XCIV

अशक्यं—V. L. अतर्क्यं

P. 1522, l. 4—Before रूपप्रत्ययो add—

चक्षुरिवचक्षुः दर्शनहेतुत्वसामान्यात् ।

यथा चक्षुःपरिच्छिन्नेस्वनेष्टितः (?)

— l. 4—for कृतत्वात् महा read कृतत्वमाह

— l. 5—for प्रमाय read प्रामाण्य

— „ —for दोषसदृशाद्भा read दोषसद्भा

— l. 8—for तद्युतं read तदुक्तम्

— l. 9—for भावान्महत्त्वेन read भावानामात्मत्वेन

— l. 10—for गांगा read गांगाभ्यासे

— l. 11—for पृष्टं read इष्टं

— l. 12—for त्वद्रूपा read तद्रूपा

— l. 15—for मन्तरेख read मन्तरेण

— „ —for अथवा प्रमातुं शक्य read अथ च प्रमातुमशक्य

VERSE XCV

प्रेत्य—V. L. प्रेते (noted by Medhātithi).

श्रुतयो—स्मृतयो

P. 1523, l. 2—for दत्तेषु read दन्धेषु

— „ —for द्वांत read द्वान्ताः

— „ —for कुट्टव्या read कुट्टयः

— l. 3—for दृष्टान्तः read दृष्टान्ताः

— l. 4—for उक्ता अप्ययुक्ता read उक्ताः । तत्र युक्ती

— „ —for रात्रियति read रात्रीयन्ति

— l. 5—for देशेनाप्रामाण्ये read देशे न प्रामाण्यं

— „ —for शक्यमपिशक्तेरुद्देशिकस्य read सत्यामपि शक्तौ

उपदेशिकस्य

P. 1523, l. 7—for देवातासि read देवतात्वसि

— „ —for मत्यास्य read मृतस्य

— „ —for स्तामो read स्तमो

VERSE XCVI

विनश्यन्ति V. L. (a) व्यथन्ते च, (b) च्यवन्ते च

VERSE XCVII

चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् V. L. स्मृतिश्चत्वार आश्रमाः

भवत्—V. L. भव्यं

भविष्यं—V. L. भविष्यत्

P. 1524, l. 5—for वर्णेष्वनु read वर्णेषु तु

P. 1525, l. 1—for नांता read नां च

— „ —for वेदावेद—read वेदादेव

VERSE XCVIII

प्रसूयन्ते—V. L. प्रसिध्यन्ति

प्रसूतिगुणकर्मतः—V. L. (a) प्रसूतिगुणकर्मतः, (b) प्रसूतिगुणधर्मतः
(c) प्रसूतेगुणधर्मतः (noted by Medhātithi), (d) प्रसूतगुणकर्मतः

P. 1525, l. 4—for कर्मश read कटुश

— „ —for वेदाः read वेदात्

— l. 6—for गुणधर्म read गुणकर्म //

— l. 7—for प्रसूतिस्तस्या read प्रसूतिः साम्या

VERSE XCIX

P. 1526, l. 1—omit तस्मादेतत्परमन्ये

— l. 4—for युक्तं read मुक्तं

VERSE C

P. 1526, l. 6—for दण्डेन तावदण्ड read दण्डनेतारः रण्ड

VERSE CI

After (101) some MSS. have the following additional verse :—

न वेदबलमाश्रित्य पापकर्मरुचिर्भवेत् ।
अज्ञानाच्च प्रमादाच्च दहते कर्म नेतरात् ॥

VERSE CII

वसन—V. L. वसेत् (Smṛtichandrikā Samskāra, p. 132).

लोके तिष्ठन्—V. L. तिष्ठन् लोके (do.)

P. 1527, l. 2—Before तत्रेति add यत्र

— l. 3—for ब्राह्मणादि read ब्राह्मणा

VERSE: CIII

P. 1527, l. 4—for न पुनः read ग्रन्थिनः

— „ —for दमत्या परतां read यत्नेन पठन्तः

— l. 5—for श्रेष्ठ read श्रेष्ठत्व

— l. 6—for श्रेष्ठतरा read श्रेष्ठतराः

— l. 7—for अन्यवशानामनु read व्यवसायिनः अनु

— „ —omit दानैतदन्यथेतिशक्यते

— l. 8—for दर्शनैव read दर्शज्ञानम्

CIV

विद्या च—V. L. विद्यापि (Smṛtichandrikā Samskāra, p. 144).

किल्बिषं—V. L. कल्मषं (Smṛtichandrikā Samskāra, p. 144).

P. 1528, l. 2—for तुभावे read स्वभावे

— „ —for बला read केवला

CV

धर्मशुद्धिं—V. L. (a) धर्मसिद्धिं, (b) कर्मशुद्धिं

अभीप्सता—V. L. अभीप्सताम्

P. 1529, l. 1—for वर read वरणं

— „ —for पूर्वकाश read पूर्वपक्ष

— „ —for शेष्क read शेन

— l. 2—for पनमुतै read पनम् । ए

— l. 3—for स्वात्सिद्धिः read त्वादिसि

— „ —for सबभ read तस्योभ

— „ —for चानुमानेनोपरि read च प्रत्यक्षेण तथं



- 1. 4—for नित्य read सनित्य
- 1. 6—for अनु read येन न
- 1. 7—for सपत्न्यो read सपत्नविपत्न्यो
- 1. 8—for विधप्र read विधविधप्र
- 11. 9-10—for विद्याक्षेपः शुद्ध read विध्याक्षिप्तः सुहृद्

P. 1529, l. 10—after पदिष्टः add न च द्वयमपि प्रसैशव, wrongly printed at the end of Bhāṣya or verse 108.

P. 1529, ll. 10 to 16 should be transposed to the end of Bhāṣya or verse 108, on p. 1531, after संदेहः

P. 1529, l. 11—after हेतूच्छिष्ट read हेतुशिष्ट

- „ —for प्रमाणं read प्रमाणी
- 1. 13—for सधर्म read सधर्मः
- „ —for मं व्रूते दोष read मं व्रुवते दोषः
- „ —for पिचिकि read विचिकि
- 1. 16—for योन्न read गोन्न
- „ —for उत्पद्यते read उपपद्यते

VERSE CVI

आर्ष धर्मोपदेशं च—V. L. आर्षधर्मोपदेशेन

P. 1530, l. 1—for धर्माप read धर्मोप

- 1. 3—for स्यार्थ read स्यार्था
- 1. 5—for यदुच्चारणेन मंत्राणामयं विधिः read यदुच्चारणं मन्त्राणां प्रयोज्यत्वमन्यते अतश्चाविकृत एव मन्त्रः प्रायोक्तव्य इति सोऽपि शास्त्रविरोधी तर्कः । न चायं विधिः

P. 1530, l. 7—for स्वरूपेण परा read निरूपणपरा

— l. 8—for तत्र read न तत्र

— l. 9—before शब्दाः add न

— „ —चनानामाम्ना read चनादाम्नाः

— l. 10—for त्वबुद्धयः read विपश्चितः

— l. 12—for प्रसिद्धं read प्रतिषिद्धं

— „ —for किञ्चित् read केचित्

— l. 13—omit वेदः

— „ —for स्थापक—read स्थापकः

— l. 14—for प्रामाणि read अप्रामाणि

— l. 16—for यदपि read यद्यपि

— „ —for त्पठतं read त्पठितं

— „ —for व्यन्तर्कभाषाभ्या read दान्तभाष्य

— l. 17—for प्रयच्छत read प्रायच्छन्

— „ —for य उक्तवां read योत्तमा

— „ —for कय read कैयं

— l. 18—for रेषां read रेषा

— „ —for वादीनि read वादिनी

VERSE CVII

उपदिश्यते—V. L. उपदेक्षते

P. 1531, l. 1—for दारा read दरा



VERSE CVIII

P. 1531, l. 5—for श्रुते read श्रुति

— l. 6—after संदेहः add ll. 10—16 of p. 1529.

— „ —omit न च द्वयमपि प्रशंसैव, which should be transposed to the end of Bhāṣya or verse 105.

VERSE CIX

P. 1531, l. 7—for कानामेव read कामेव

P. 1532, l. 2—for परिवृंहणानि read स सपरिवृंहणः

— l. 3—for वामपि read वामेव

— l. 4—for न्याभिधानमुच्यंते read न्यानि प्रमाणान्युच्यंते

— „ —for श्रुतः read श्रुतिः

— „ —after तेषां add ते

— l. 5—for प्रामाण्य read प्रमाण

— l. 6—for सच read साच

VERSE CX

वृत्तस्था तं—V. L. वृत्तस्थास्तं (Nityāchārapradīpa, p. 69).

विचालयेत्—V. L. विचारयेत्

P. 1532, l. 9—for स्येति read स्या इति

— l. 10—तानी... हेतुः read तानिदानीं परिषत्त्वहेतुगुणान् दर्शयति

After 110 some MSS. have the following additional verse :—

पुराणस्मान्नो धर्मो साङ्गोपाङ्गचिकित्सकः ।

आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः ॥

VERSE CXI

परिषत्स्याद्दशावरा—V. L. पर्षदेषा भवेदिति (Madanapārijāta, p. 774).

नैरुक्तो—V. L. निरुक्तो (Smṛittatva II, p. 199).

हेतुक—V. L. हेतुक (Madanapārijāta, p. 774).

P. 1533, l. 1—omit गुणान् दर्शयति

— ll. 1-2—omit पूर्वोक्ता.....विप्सामिति

— l. 3—for वेदन read वेदार्थ

— l. 4—for वेदार्थ read वेदार्थ

— „ —for निरुक्तो read नैरुक्तो

— „ —for श्रुतिशास्त्रा read शास्त्रा

— l. 5—for पराकु read पराःकु

— „ —for कुशलतर read कुशलतरा

— „ —for पूर्वं read पूर्वे

— l. 6—for मानुषी read मानुपूर्वी

— ll. 6-7—for धर्माश्रयात्त read धर्मनिर्यायकत्वमाश्रयेत्

VERSE CXII

अवरा परिषज्ज्ञेया—V. L. अपरा पर्षद् विज्ञेया (Mitākṣarā 3. 300).

P. 1533, ll. 8-9—for ज्ञायतेऽन्य read ज्ञायते नान्य

VERSE CXIV

द्विजोत्तमः—V. L. समाहितः (Mitākṣarā 3. 300).

P. 1534, l. —after यिनः add यं



VERSE CXV

यं वदन्ति—V. L. यद्वदन्ति

तमोभूता—V. L. तमोभूढा

तद्वक्तृनुगच्छति—V. L. वक्तारमनुगच्छति

VERSE CXVI

अस्मादप्रच्युतो—V. L. (a) तस्मादप्रच्युतो, (b) तस्मादविच्युतो

P. 1535, l. 5—for पदेशत read पदिश्यत

VERSE CXVII

ममेदं सर्वमुक्तवान्—V. L. ममेदमुक्तवान् स्वयम्

P. 1535, l. 7—for ममा read मया

— „ —for निकार्या read नकार्या

— „ —for कांच read ऊचका

VERSE CXVIII

मतिम्—V. L. मनः (Aparārka, p. 1027)

सर्वेद्यात्मनि—V. L. सर्वमात्मनि

P. 1536, l. 1—for वान्यः read वा यः

— l. 4—omit नेनदर्श

— „ —for प्यात्म read आत्म

— „ —for प्रत्ययान्तर read प्रत्ययानन्तर

— l. 5—for कर्मणि read कर्माणि

— „ —for श्रुतोपभ्यास read श्रुतोऽप्यभ्यासः

— l. 7—for विकरणः read देहाधिकरणः

- 1. 8—for तउत्त read ततउत्त
— ” —for मृत्स्योरूप read मृत्त्वोरूप
— ” —for नैतस्य read एतस्य
— 1. 9—for न्नेह प्र read आहम्प्र
P. 1536, 1. 14—for न वक्तु read वक्तु
— ” —for ओद read औत
— 1. 14—for दर्शयन्मि read दश्यतद्
— ” —for विकारस्य ग्रामस्य read विकारग्रामस्य
P. 1537, 1. 2—for श्रेत read चेत

VERSE CXX

स्वेपु—V. L. खेषु

- P. 1538, 1. 2—for यतो read लो
— ” —for वाद्वा read वाहया
— 1. 3—for कुशलो read तयोः
— , —for सर्वतत्प read तेजःप
— ’ —for व्यामि read स्तनमादि
— ” —for स्नेहो read स्नेहे

VERSE CXXI

हरम्—V. L. हरिम्

- P. 1539, 1. 2—for ततो read क्राम्ते
— ” —for मति read मपि

